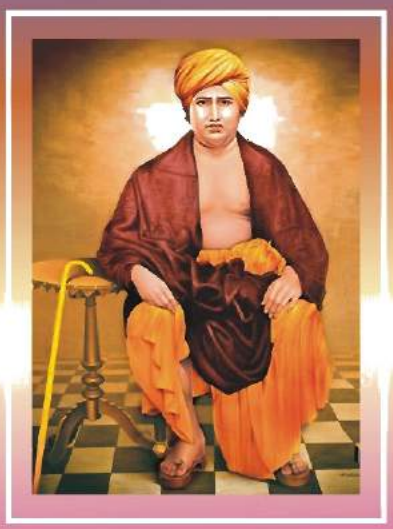

मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 61 | अंक : 08 | फरवरी, 2021 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹20

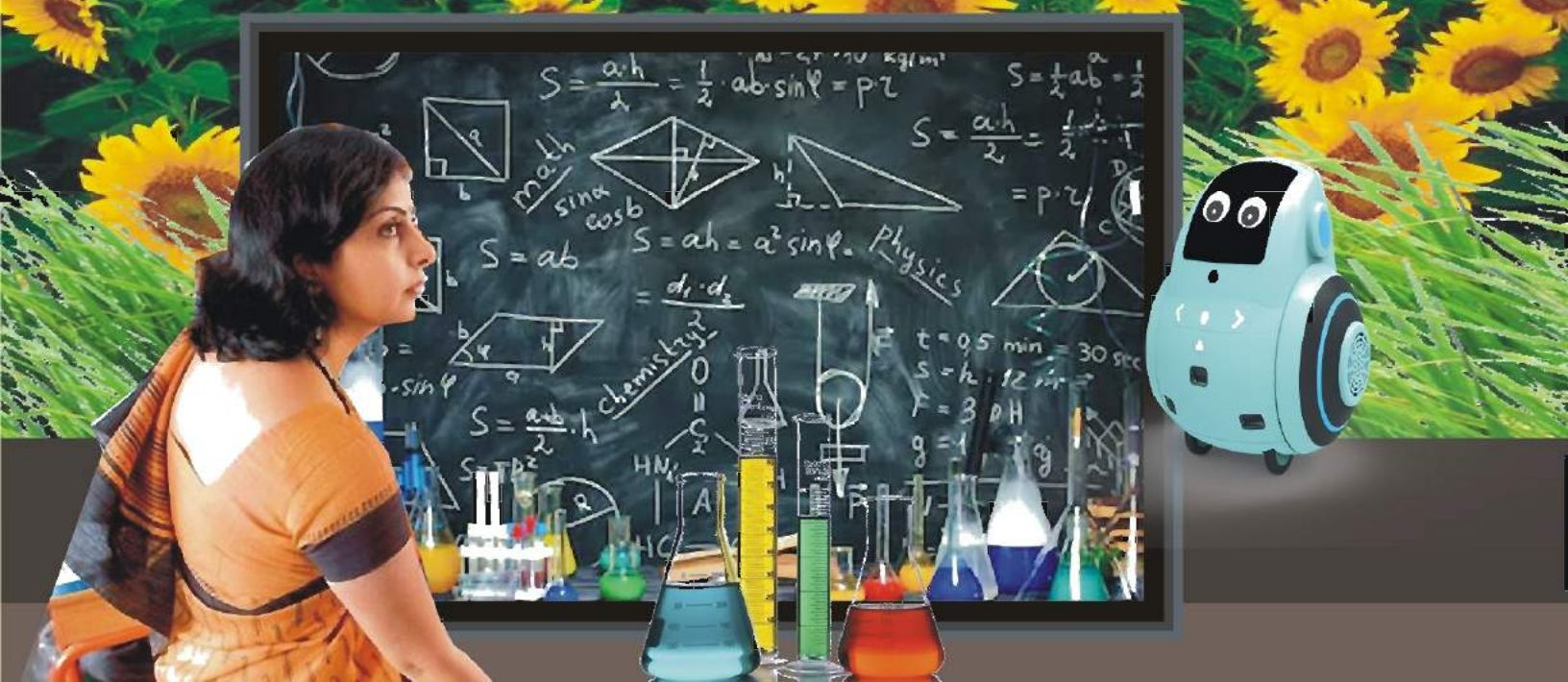

सत्यमेव जयते

श्री गोविन्द सिंह डोटासरा
राज्य मंत्री
शिक्षा (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) विभाग
(स्वतंत्र प्रभार)
पर्यटन एवं देवस्थान विभाग
राजस्थान सरकार

महिमा आस और विश्वास की

कोविड-19 महामारी के कारण उत्पन्न विषम परिस्थितियों की वजह से दस माह तक शिक्षण कार्य स्थगित रहने के पश्चात् पिछले माह 18 जनवरी, 2021 से माध्यमिक स्तर यथा 9, 10, 11, 12 के विद्यार्थियों के लिए औपचारिक शिक्षण कार्य शुरू होना मेरे लिए बहुत प्रसन्नता एवं रोमांचकारी विषय है। आज, जब मैं इस स्तम्भ को लिख रहा हूँ, तक कोई अप्रिय बात मेरे सामने नहीं आई है। शिक्षा प्रशासन, विशेषकर विद्यालय प्रशासन-संस्थाप्रधान एवं गुरुजनों से मेरा अनुरोध है कि वे पूर्ण सावधान रहकर शासन द्वारा इस सम्बन्ध में जारी एस.ओ.पी. की शत-प्रतिशत पालना सुनिश्चित करवाएं। याद रखें, जरा सी लापरवाही किसी बड़ी घटना का कारण बन सकती है।

विद्यार्थी बहुत आशा एवं विश्वास के साथ अपने शिक्षक की तरफ देखता है। गुरु-शिष्य का रिश्ता कुछ होता ही ऐसा है। बाल्यकाल में प्राइमरी कक्षाओं में मुझे पढ़ाने वाले गुरुजनों का जब मैं स्मरण करता हूँ तो मेरा मन आनन्द से भर जाता है। कितना स्नेह और कितनी आत्मीयता थी उस दौर के शिक्षकों में! वर्तमान पीढ़ी के गुरुजनों से मेरी अपील है कि वे अपनी सम्पूर्ण क्षमता एवं दक्षता से विद्यार्थियों का शिक्षण व मार्गदर्शन करें ताकि वे कोरोना त्रासदी के कारण अध्ययन-अधिगम में रही कमी को पूरा कर सकें।

विद्या की देवी माँ शारदे का अवतरण दिवस बसन्त पंचमी इस माह 16 फरवरी को है। यह ज्ञान एवं ध्यान का दिवस है। ज्ञान दिवस इसलिए कि आज के दिन छोटे बच्चों को पहली बार विद्याभ्यास करवाया जाता है और ध्यान दिवस इसलिए कि इस दिन से पूर्ण दत्तचित होकर अध्ययन-अध्यापन का संकल्प विद्यार्थी एवं गुरुजन लेते हैं। आइए, विद्या की वरदायनी माँ सरस्वती का वंदन करते हुए ऐसे उत्तम संकल्प इस अवसर पर हम ग्रहण करें।

शिक्षा के मेरे विशाल परिवार के साथ एक गौरवमयी उपलब्धि मैं शेयर करना चाहता हूँ। नीति आयोग के द्वारा राजकीय विद्यालयों के स्तर को परखने के लिए करवाए गए नेशनल अचीवमेंट सर्वे (एन.ए.एस.) में राजस्थान ने सम्पूर्ण देश में तीसरा स्थान प्राप्त किया है। दिल्ली और कर्नाटक के बाद तीसरे पायदान पर राजस्थान को देखकर हमारा सिर गर्व से ऊँचा उठ जाता है। इसका श्रेय **'टीम एज्यूकेशन'** को जाता है। मेरी बधाई एवं शुभकामनाएँ।

जीवन आस और विश्वास (Hope and Faith) का दूसरा नाम है। निर्भय, सर्वतोभावेन सद्भावी और सदैव गतिमान रहकर आशावादी बने रहिए। अंधेरे के बाद प्रकाश और आँधी के बाद मेह वाली बात हम सुनते आए हैं। महामारी की मार के पिछले दस महीने और आज को देखकर इस जन मान्यता की सार्थकता समझ में आ जाती है। महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आंइस्टीन ने कहा है, "**बीते कल से सीखो, वर्तमान में जियो और आने वाले कल से अच्छे की आशा करो।**"

आप सब के लिए उज्ज्वल कल (Bright Tomorrow) की आशा एवं मंगलमय शुभकामनाओं के साथ-

(गोविन्द सिंह डोटासरा)

"जीवन आस और विश्वास (Hope and Faith) का दूसरा नाम है। निर्भय, सर्वतोभावेन सद्भावी और सदैव गतिमान रहकर आशावादी बने रहिए। अंधेरे के बाद प्रकाश और आँधी के बाद मेह वाली बात हम सुनते आए हैं। महामारी की मार के पिछले दस महीने और आज को देखकर इस जन मान्यता की सार्थकता समझ में आ जाती है। महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आंइस्टीन ने कहा है, "बीते कल से सीखो, वर्तमान में जियो और आने वाले कल से अच्छे की आशा करो।""

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते -श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।

In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 61 | अंक : 8 | माघ-फाल्गुन, २०७७ | फरवरी, 2021

प्रधान सम्पादक
सौरभ स्वामी

❁

वरिष्ठ सम्पादक
अनिल कुमार अग्रवाल

❁

सम्पादक
मुकेश व्यास

❁

सह सम्पादक
सीताराम गोदारा

❁

प्रकाशन सहायक
नारायणदास जीनगर
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 20

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 100
- राजकीय संस्थाओं/कार्यालयों/विद्यालयों के लिए ₹ 200
- गैर राजकीय संस्थाओं के लिए ₹ 300
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएँ।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका

माध्यमिक शिक्षा राजस्थान

बीकानेर-334 011

दूरभाष : 0151-2528875

E-mail : shivira.dse@rajasthan.gov.in

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **-वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- चुनौती को चुनौती 5
  आलेख
- स्वामी दयानंद सरस्वती का जीवन चरित्र 6
  शंकर लाल माहेश्वरी
- डिजिटल युग में शिक्षक 7
  भवेन्द्र कुमार गोयल
- स्वामी दयानंद सरस्वती और उनकी शिक्षाएँ 8
  जयसिंह सिकरवार
- संत रविदास के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता : **चेनाराम सीरवी** 9
- माँ सरस्वती का पूजन महोत्सव-बसंत पंचमी 10
  राजीव अरोड़ा
- बालक बना महान सरोजनी नायडू 12
  डॉ. चेतना उपाध्याय
- भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान 14
  चन्द्रभूषण शर्मा
- अब दिन आए बसंती नीरे 17
  सुधा रानी तैलंग
- साहस और शौर्य के प्रतीक शिवाजी 18
  इन्द्रजीत त्रिपाठी
- भारत के महान वैज्ञानिक 19
  बृजेश कुमार सिंह
- विज्ञान वरदान : **हनुमान प्रसाद चौधरी** 20
- शीघ्रता से संख्याओं का वर्ग ज्ञात करना 21
  भूपेन्द्र जैन
- धर्म और विज्ञान : **सुभाष चन्द्र कस्वाँ** 22
- जब सेनापति ने विद्यार्थियों को मिठाई बाँटी 23
  राम गोपाल प्रजापति
- विद्यालयी शिक्षा का बदलता स्वरूप 29
  भगवान सिंह मीना
- वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का महत्त्व : **रवि शंकर आचार्य** 31
- विद्यार्थियों का जीवन बदलता शिक्षक 32
  अरुण कुमार कैहरबा
- बाल अधिकार : **पृथ्वीराज लेघा** 33
- राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के कक्षा 12 के परीक्षा परिणाम ''मीरा'' एवं ''एकलव्य'' पुरस्कारों की घोषणा 34
  मोहन गुप्ता ''मितवा''
- किशोरों के जीवन में हस्तक्षेप की सीमा 35
  सीताराम गुप्ता
- खेलोगे तो बनोगे स्वस्थ 36
  सुनिता पंचारिया
- निरोगी काया : **शकुन्तला वैष्णव** 37
- अशिक्षा उन्मूलन से बनेगा प्रगतिशील समाज 38
  गौरव सिंह घाणेराव

कविता

- आओ नई शुरुआत करें : **शेषा राम** 13

स्तम्भ

- पाठकों की बात 4
- आदेश-परिपत्र : फरवरी, 2021 25
- शिक्षावाणी प्रसारण कार्यक्रम 28
- बाल शिविरा 43-44
- शाला प्रांगण 45-48
- चतुर्दिक समाचार 49
- हमारे भामाशाह 50

पुस्तक समीक्षा 39-42

- थर्ड एसी का सफर, लेखक : मधु आचार्य
  समीक्षक : **सीमा भाटी**
- चालूं अे बाई, छियां ढळगी
  कवि : विनोद स्वामी
  समीक्षक : **शंकरसिंह राजपुरोहित**
- जब भी देह होती हूँ
  कवि : नवनीत पाण्डे
  समीक्षक : **रश्मि भारद्वाज**

मुख्य आवरण :
नारायणदास जीनगर, बीकानेर

विभागीय वेबसाइट : www.education.rajasthan.gov.in/secondary

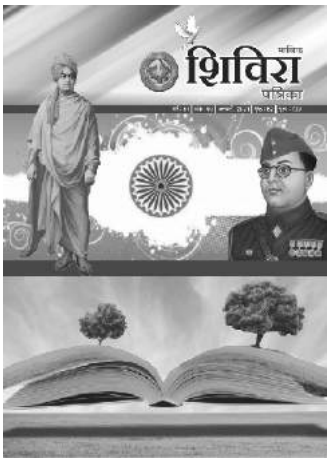

▼ *चिन्तन*

काव्य शास्त्र विनोदेन
कालो गच्छति धीमताम।
व्यसनेन च मूर्खाणां
निद्रया कलहेन वा।।

अर्थातः बुद्धिमान लोग अपना समय पठन-पाठन में व्यतीत करते हैं, जबकि मूर्ख लोगों का समय व्यसन, नींद व कलह में व्यतीत होता है।

(क्रितो/मि/1)

पाठकों की बात

● जनवरी-21 शिविरा! नया साल सारे सुख लाए। 'अपनों से अपनी बात' में शिक्षामंत्री आदरणीय श्री गोविन्द सिंह डोटासरा उद्बोधन सराहनीय है-

नया साल सारे सुख लाए नूतन हर्ष।
वे धरती पर मात स्वर्ग को मेरा भारतवर्ष।
इस कोने से उस कोने तक बहे प्रेम की गंगा।
दूर दूर तक नजर न आए,
अब कोई भूखा अब कोई नंगा

मेरा पृष्ठ-दिशाकल्प श्री सौरभ स्वामी निदेशक माध्यमिक शिक्षा का सारगर्भित कथन 'जो बीच राह में बैठ गए वो बैठे ही रह जाते हैं। जो लगातार चलते रहते, वो निश्चय मंजिल पाते हैं, प्रेरक है। सामयिक आलेख स्वामी विवेकानन्द, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपतराय, हम जल बिन अधूरे, गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती बहुतायत में पढ़ने को मिले। एक से एक प्रेरक आलेख। जल बिन अधूरे, समय का प्रबंध ही जीवन का प्रबंधन है। दोनों आलेख पठनीय, अनुकरणीय व संग्रहणीय है। राज्य के पुरस्कृत शिक्षक बने कोरोना योद्धा, सिल्वर एलीफेंट अंक में चार चाँद लगाते हैं। प्रेरक प्रसंग यथार्थतः प्रेरक हैं। तीनों ही प्रसंग सीख देने वाले हैं। बाकी के आलेखों को कम करके नहीं आंका जा सकता। राज्यस्तरीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों के चित्र व नाम बहुत ही उत्साह व कर्मठता का संदेश दे रहे हैं। निष्कर्षतः सम्पादक मंडल शिविरा को ऐसे सुन्दर चयन के लिए बहुत-बहुत हार्दिक बधाई व आभार। जो इस प्रकार की पाठ्य सामग्री अध्ययन हेतु उपलब्ध करता है।

-टेकचन्द्र शर्मा, झुंझुनूं

● रंगीन, बहुरंगी और देश की महान विभूतियों के आकर्षक चित्रों सहित शिविरा पत्रिका का माह जनवरी, 2021 का अंक प्राप्त हुआ। माह जनवरी जहाँ स्वामी विवेकानन्द, सुभाष चन्द्र बोस, गुरु गोविन्द सिंह और लाला लाजपतराय जैसी महान विभूतियों के जीवन दर्शन को आत्मसात करने हेतु प्रेरित करता है, वहीं मकर संक्रांति का पर्व परिवर्तन का सांकेतिक पर्व और गणतंत्र दिवस राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत से संबंधित है। पत्रिका में स्वामी विवेकानंद से संबंधित अनेक लेख हैं जिनसे इनके जीवन दर्शन से महत्त्वपूर्ण तथ्य प्राप्त होते हैं। स्वामीजी ने विश्व के समक्ष भारतीय संस्कृति और धर्म के महत्त्व को बड़े ही प्रभावशाली तरीके से रखा और भारत की आध्यात्मिक एवं धार्मिक समृद्धता से विश्व को परिचित कराया। विवेकानंद शिक्षा के प्रति बहुत संवेदनशील थे। शिक्षा के प्रति उनके उद्देश्य वर्तमान में प्रासंगिक हैं। उनका महान कथन- 'उठो! जागो और उस समय तक बढ़ते रहो जब तक कि चरम उद्देश्य की प्राप्ति न हो जाए।' आज के युवाओं का मार्ग प्रशस्त करता है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सुभाष बोस का अद्भुत योगदान भारतीय इतिहास की अमर गाथा जिसे भुलाए नहीं भुलाया जा सकता। 'पंजाब केसरी लाला लाजपतराय' लेख से लालाजी का स्वतंत्रता संग्राम में उनका बलिदान देशवासियों के लिए सदैव प्रेरणादायक रहेगा। 'साहिब ए-कमाल गुरु गोविन्द सिंह जी' लेख त्याग और बलिदान का पाठ पढ़ाता है। इन पर लिखी गई कविता गंज-ए-शहिदां बहुत ही मार्मिक है। राज्य के पुरस्कृत शिक्षकों ने कोरोना काल में जो अपनी सेवाएँ देकर मानव धर्म निभाया, धन्यवाद के पात्र हैं। सम्पादक मण्डल और शिक्षक बंधुओं को नववर्ष की शुभकामनाएँ।

महेन्द्र कुमार शर्मा, नसीराबाद,अजमेर

● माह जनवरी, 2021 का शिविरा का अंक समय पर प्राप्त हुआ। पत्रिका का मुखावरण सुन्दर व आकर्षक लगा। निदेशक महोदय का दिशाकल्प 'नवाचारों की पहल' बहुत पसंद आया। जनवरी माह की शिविरा पत्रिका में अनेक रोचक आलेखों से संग्रहित है। जिसमें मुख्य रूप से कमल नारायण शर्मा का ''पंजाब केसरी लाला लाजपतराय'' का आलेख बहुत ही प्रेरणादायी लगा। शिविरा के बेहतरीन आलेखों के संकलन में ''समय का प्रबन्ध ही जीवन का प्रबन्ध है'' एवं मंत्री जी की ''अपनों से अपनी बात'' बहुत प्रासंगिक लगी।

-रवि प्रकाश शर्मा, बीकानेर

सत्यमेव जयते

सौरभ स्वामी
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

चुनौती को चुनौती

कोविड-19 की विशेष परिस्थितियों ने विद्यालयों में पठन-पाठन की गतिविधियों के लिए जो चुनौती खड़ी की थी, हमारे विभाग ने उस चुनौती को चुनौती दी। मुझे यह तथ्य साझा करने में गर्वानुभूति हो रही है कि ऐसे समय में, जब कि विद्यालयों में विद्यार्थियों की नियमित कक्षाएँ भौतिक रूप से संचालित नहीं हो रही थी हमारे शिक्षकों, साथियों ने e-कक्षा, डिजिटिलाइजेशन, कार्यपुस्तिका जैसे नवाचार अपनाते हुए विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता पर पूरा खरा उतरने का प्रयास किया।

यह और भी सुखद है कि गत माह 18 जनवरी, 2021 से विद्यालयों में कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की कक्षाएँ नियमित रूप से चल रही हैं। आने वाले समय में विद्यालयों में छोटी कक्षाओं के संचालन के लिए भी हम उत्साहित हैं। अभिभावकों की सहमति और कोरोना गाइडलाइन की पालना करते हुए विद्यार्थी कक्षाओं में नियमित आकर विद्या अध्ययन कर रहे हैं। सम्पूर्ण राज्य में प्रत्येक विद्यालय में हो रहे शिक्षण कार्य पर प्रभावी प्रशासनिक मॉनिटरिंग हो रही है। प्रत्येक जिले के कलक्टर और अन्य प्रशासनिक अधिकारी भी अपने-अपने क्षेत्र में विद्यालयों का अवलोकन कर सम्बलन प्रदान कर रहे हैं। विभाग में दृढ़ इच्छाशक्ति और पूर्ण मनोयोग से कार्य सम्पादित करने की संस्कृति का ही सुफल है कि सभी नये उत्साह और उमंग के साथ श्रेष्ठ कार्य कर रहे हैं।

विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ कार्यालयों में भी शिक्षकों, कर्मचारियों के एसीपी, विभागीय जाँच, डीपीसी आदि प्रकरणों को द्रुतगति से निस्तारित करते हुए विभाग श्रेष्ठ मानकों के साथ नयी ऊँचाई प्राप्त कर रहा है।

मित्रों! रात कितनी भी लम्बी और स्याह क्यों न हो पर उजाला पाने की चाह, न केवल नई राह बनाती है, अपितु स्याह रात की भयावहता से भी मुक्त करती है। मुझे आशा है दृढ़ संकल्प और कठोर परिश्रम के बल पर हमारा विभाग न केवल राज्य में, अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र में शिक्षा का सिरमौर बनेगा। हम सभी अपने कर्त्तव्य का निर्वहन पूर्ण मनोयोग से करते रहें।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना के साथ,

(सौरभ स्वामी)

"मित्रों! रात कितनी भी लम्बी और स्याह क्यों न हो पर उजाला पाने की चाह, न केवल नई राह बनाती है, अपितु स्याह रात की भयावहता से भी मुक्त करती है। मुझे आशा है दृढ़ संकल्प और कठोर परिश्रम के बल पर हमारा विभाग न केवल राज्य में, अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र में शिक्षा का सिरमौर बनेगा। हम सभी अपने कर्त्तव्य का निर्वहन पूर्ण मनोयोग से करते रहें।"

जयंती विशेष

स्वामी दयानंद सरस्वती का जीवन चरित्र

❒ शंकर लाल माहेश्वरी

स्वामी दयानन्द सरस्वती आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म 12 फरवरी 1824 में काठियावाड़ जिला राजकोट के टंकारा ग्राम में हुआ। पिता श्री कृष्ण लाल त्रिवेद शैव मतावलम्बी थे अत: बचपन का नाम मूलशंकर रखा गया। यद्यपि स्वामीजी ने नियमित विद्यालयी शिक्षा ग्रहण नहीं की फिर भी वे संस्कृत, व्याकरण तथा वेदों की शिक्षा ग्रहण कर समाज सुधार की दिशा में प्रवृत्त हुए। 14 वर्ष की छोटी अवस्था में ही स्वामीजी सत्य की खोज में संलग्न हो गए। स्वयं की आध्यात्मिक प्रगति के लिए मथुरा के स्वामी विरजानन्द के श्री चरणों में बैठकर वेदों, आर्यग्रंथों का गहन अध्ययन किया तथा सामाजिक जीवन में कुरीतियों को दूर करने के लिए, वैदिक साहित्य का प्रचार करने, विदेशी शासन से मुक्ति हेतु अथक प्रयत्न करने में संलग्न हो गए। गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित रहते हुए गाँधीजी की कार्यप्रवृत्तियों को राष्ट्रहित में प्रचारित किया। भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों, पाखण्डों तथा पोंगापंथी गतिविधियों को दूर करने हेतु सन् 1876 में हरिद्वार में आयोजित कुम्भ मेले के अवसर पर आर्यसमाज की स्थापना की। स्वामी दयानन्द सरस्वती भौतिक सुख सुविधा प्राप्ति की अपेक्षा आध्यात्मिक प्रगति को विशेष महत्त्व देते थे। स्वाधीनता के प्रबल समर्थक स्वामीजी कहते थे **' विदेशी शासन किसी भी रूप में स्वीकार करने योग्य नहीं होता'** स्वामीजी ने सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम में राष्ट्रहित में समर्पित होकर कार्य किया। उनका मार्गदर्शन राष्ट्रभक्तों के लिए प्रेरणादायी बना और देश प्रेम की अटूट विचार परम्परा को गति देने में सफल रहा। स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक परम्पराओं के मुख्य पक्षधर रहे। वे सही अर्थों में हिन्दू धर्म के ऊर्जावान नेता थे। उनके अथक प्रयासों से सामाजिक जीवन में जो क्राँति की लहर आयी वह चिरस्मरणीय रहेगी। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने तो उन्हे 'आधुनिक भारत का निर्माता' कहा है।

स्वामीजी की विचारधारा और उनके सिद्धान्तों से पं. लेखराम स्वामी, श्रद्धानन्द पं. गुरुदत्त श्यामकृष्णन वर्मा, विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, मदन लाल मोगरा, रामप्रसाद बिस्मिल, महादेव रानाडे, महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय और कई राष्ट्रभक्त प्रभावित रहे हैं। स्वामीजी द्वारा प्रस्तुत 'सत्यार्थ प्रकाश' पुस्तक में जहाँ एक और सामाजिक रुढ़ियों से मुक्त होने की प्रेरणा है वही भारतीय स्वाधीनता के लिए भी प्रोत्साहन समाहित है। उन्होंने कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वीकारते हुए ब्रह्मचर्य, प्रभुभक्ति, अध्यात्मविद्या, वेदों का प्रचार-प्रसार आदि हिन्दू संस्कृति को प्रचारित करने तथा स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने, दलितों के उद्धार तथा छुआछूत को दूर करने का निरन्तर प्रयास किया। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समूचे विश्व में हिन्दू धर्म की पहचान स्थापित की तथा राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के लिए भारतवासियों को विशेष रूप से जाग्रत कर राष्ट्रहित में कार्य किया। दयानन्द सरस्वती के हृदय में आदर्शवादी विचारधारा तथा यथार्थवादी मार्ग का अनुसरण करने की इच्छाशक्ति, मातृभूमि के प्रति अटूट आस्था थी तथा सामयिक आवश्यकतानुसार चिन्तनशील रहकर जनजीवन में गौरवमय अतीत के प्रति निष्ठा जाग्रत करने में महती भूमिका का निर्वहन किया। गुरुवर विरजानन्द ने उन्हें पाणिनी व्याकरण, पतंजल योग सूत्र तथा वेद वेदांग का अध्ययन कराया। गुरुजी ने स्वामी दयानन्द से गुरुदक्षिणा में जो माँगा वह हर भारतीय को गर्वोन्नत करने वाला है। वह था 'विद्या को सफल करके दिखाओ, परोपकार करो, वेद वेदांग का अध्ययन कराओ, शास्त्रों का उद्धार करो, मत मतान्तरों की अविद्या को दूर करो, अज्ञान रूपी अंधकार को वेदों के प्रकाश से नष्ट करो, वैदिक धर्म का सर्वत्र विकीर्ण करो।' स्वामीजी ने कई स्थानों की यात्राएँ की तथा कलकत्ता में बाबू केशव चन्द्र सेन तथा देवेन्द्र नाथ ठाकुर के संपर्क में आए। यहीं से उन्होंने हिन्दी भाषा में लिखना, बोलना प्रारम्भ किया। स्वामी दयानंद संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान थे। उनकी तर्क शक्ति का सभी विद्वान लोहा मानते थे। उन्होंने इसाई और मुस्लिम धर्म ग्रंथों का भी गहन अध्ययन किया। तत्कालीन सनातन धर्मी हिन्दुओं से भी उन्हें जूझना पड़ा। उस समय के धर्मों में व्याप्त बुराइयों का विरोध करते हुए सुधारवादी कदम उठाए। प्रार्थना समाज व ब्रह्म समाज के लोगों से तार्किक विचार विमर्श किया और एक मत होकर दिल्ली और पंजाब में धर्म सभाएँ आयोजित की तथा आर्य समाज की शाखाओं का शुभारम्भ करके सामाजिक चेतना का बिगुल बजाया। स्वामी जी ने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों और रुढ़िगत बुराइयों को दूर करते हुए दलितोद्धार तथा स्त्री शिक्षा के लिए प्रयास किया। साथ ही बाल विवाह और सती प्रथा का निषेध करते हुए, सत्कर्मों की शिक्षा प्रदान की। दयानन्द समाज सुधारक होने के साथ ही धार्मिक पुनर्जागरण के प्रवर्तक थे। राष्ट्रवादी और राजनैतिक आदर्शवाद के पक्षधर थे। जब आर्य समाज द्वारा सामाजिक परिवर्तन का शुभारम्भ हुआ तो सरकार के गुप्तचर विभाग की स्वामीजी पर गहरी दृष्टि रहने लगी। सरकारी तन्त्र को यह लगने लगा कि यह सन्यासी और आर्य समाज कभी भी सरकार के लिए खतरा बन सकता है तो स्वामीजी को समाप्त करने के लिए कई षड़यन्त्र रचे गए।

स्वामीजी की मृत्यु 30 अक्टूबर 1883 को दीपोत्सव के दिन संध्या काल में हुई। महाराज जसवंत सिंह स्वामी जी के अनन्य भक्त थे। स्वामी जी कभी-कभी राजमहलों में भी जाते थे। मौका देखकर षड़यंत्रकारियों ने राजमहलों में ही नन्ही नामक वेश्या के माध्यम से स्वामीजी को विष देकर सदा सदा के लिए परम धाम पहुँचा दिया। स्वामीजी ने कई धार्मिक व सामाजिक पुस्तकें प्रारम्भ में लिखी। लिखि गई पुस्तकें संस्कृत भाषा में थी बाद में आर्य भाषा हिन्दी में पुस्तकें लिखी गई। जिनमें निम्नांकित ग्रंथ सुप्रसिद्ध हैं। सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, आर्याभीविनय, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि। स्वामी दयानन्द सरस्वती के बारे में फ्रांस के महान लेखक व चित्रकार रोमारोला ने लिखा है 'दयानन्द सरस्वती इलियड अथवा गीता के प्रमुख नायक के समान थे उनमें हरक्यूलिस की सी शक्ति थी। वस्तुत: शंकराचार्य के बाद ऐसी महान बुद्धि का दूसरा संत नहीं जन्मा।' स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व व कृतित्व के संबंध में विद्वान पुरुषों ने कहा है 'स्वामी दयानन्द हिन्दू जागरण के मुख्य निर्माता थे।' एनीबिसेन्ट कहती है स्वामीजी पहले व्यक्ति थे जिन्होने आर्यावृत की घोषणा की।' भारतीय स्वाधीनता के संबंध में विद्वान पुरुषों ने कहा है 'स्वामी दयानन्द हिन्दू जागरण के मुख्य निर्माता थे। भारतीय स्वाधीनता की नींव वास्तव में स्वामी दयानन्द ने ही डाली थी। फ्रेंच लेखक रिचर्ड कहते हैं कि ऋषि दयानन्द राष्ट्रीय भावना और जन जागृति को क्रियात्मक रुप देने में प्रयत्नशील थे। स्वामीजी के संबंध में लोकमान्य तिलक का कथन है 'स्वराज्य और स्वदेशी का सर्वप्रथम मंत्र प्रदान करने वाले जाज्वल्यमान नक्षत्र थे दयानन्द'। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने स्वामीजी को आधुनिक भारत का निर्माता बताया। वीर सावरकर जी के विचारों में महर्षि दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा थे। लाला लाजपतराय के अनुसार स्वामी दयानन्द ने हमें स्वतन्त्र विचारणा, बोलना और कर्त्तव्य पालन सिखाया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती भारत राष्ट्र के ऐसे प्रकाश स्तम्भ थे जिन्होंने भारतवासियों को नई राह दिखाकर राष्ट्र का उद्धार किया।

पोस्ट-आगूचा, भीलवाड़ा (राज) 311022
मो: 9413781610

ई-शिक्षा

डिजिटल युग में शिक्षक

❒ भवेन्द्र कुमार गोयल

कोरोना काल में विद्यार्थियों के शिक्षण कार्य को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु राजस्थान सरकार द्वारा SMILE (Online Teaching) कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है जो एक स्वागत योग्य एवं प्रभावशाली कदम माना जा सकता है। आज के डिजिटल युग में विद्यार्थियों को उचित मार्गदर्शन प्रदान करने में शिक्षक की एक बहुत बड़ी भूमिका एवं दायित्व बनता है जिसका व्यावहारिक ढंग से संचालन करने में शिक्षक को अग्रेसिव होकर प्रभावशाली भूमिका निर्वहन करना चाहिए। विद्यार्थी अपने जीवन मूल्यों को बरकरार रखते हुए कैसे अपने शिक्षण कार्य एवं कॅरियर को नवीन दिशा प्रदान करा सकते हैं यह कार्य एक शिक्षक से बेहतर और कौन कर सकता है? आज के युग में अनेक प्रकार की शिक्षण सामग्री, कॅरियर संबंधी मार्गदर्शन, साहित्य, कोचिंग सेंटर उपलब्ध हैं उनको हम शिक्षक दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को अनेक माध्यम से उपलब्ध करवाकर उनको सही मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

कोरोनाकाल में निश्चित रूप से बड़े एवं छोटे सभी विद्यार्थियों का शिक्षण कार्य बाधित और प्रभावित हुआ है। हम शिक्षक इस काल में अपनी-अपनी कक्षा व विषयों के विद्यार्थियों का डिजिटल माध्यम से उचित व प्रभावी शिक्षण कार्य करवा सकते हैं। इसलिए सभी शिक्षकों को प्रभावी ढंग से सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ते हुए दीक्षा एप्प और निष्ठा के ऑनलाइन प्रशिक्षण व सामग्री को विद्यार्थियों के साथ शेयर करना चाहिए। ये विद्यार्थी ही देश का भविष्य हैं जिनको उचित मार्गदर्शन देना शिक्षकों का गुरुत्तर दायित्व बनता है। आज शिक्षण का कार्य का स्वरूप काफी बदल गया है। विद्यार्थी कक्षा और टैक्स्ट बुक व चॉक और टॉक के भरोसे ही नहीं हैं बल्कि उनको हमें व्यावहारिक पहलुओं से परिचित भी करवाना होगा। आज सोशल साइट्स के कुछ दुष्प्रभाव भी देखने को मिलते हैं तथा कुछ विद्यार्थी गलत संगत में पड़कर तथा इन साइड के दुष्प्रभावों से बेखबर व अनभिज्ञता के कारण दुरुपयोग भी करते हैं तथा अपना कॅरियर शिक्षण कार्य को भुला बैठते हैं जो बाद में उनके पछतावे का सबब बनता है। इससे पहले कि हमारे विद्यार्थी इन बुराइयों की ओर बढ़ें, हमें उनको सही दिशा व मार्ग दिखाना होगा और हम सभी शिक्षक मिलकर टीम भावना से ऐसा कर सकते हैं। हमारी सकारात्मक सोच विद्यार्थियों के कॅरियर को एक नई दिशा दे सकती है। डिजिटल एवं इलेक्ट्रॉनिक युग में ढेरों सामग्री उपलब्ध है। हम शिक्षक इसके उचित अनुचित का संज्ञान कर विद्यार्थियों को उपयोगी, ज्ञानवर्द्धक सामग्री से परिचय करवा सकते हैं। विद्यार्थियों को हम इतना आत्मज्ञान करवा सकते हैं कि वो अच्छे बुरे की पहचान कर सकें। हम इलेक्ट्रॉनिक ज्ञान एवं व्हाट्सएप ग्रुपों के माध्यम से उनके शिक्षण कार्य को सुचारू कर सकते हैं और ये कार्य हमें करना ही होगा। हमारी इच्छा शक्ति इतनी मजबूत हो कि हम इस कोरोना काल के नुकसान की भरपाई कर सकें।

आइए! हम सब मिलकर 'डिजिटल इंडिया' की इस क्रांतिकारी मुहिम में शिक्षा के सारथी बनकर अपने विद्यार्थियों रूपी अभिमन्युओं एवं अर्जुनों को एक नई राह, मार्गदर्शन प्रदान करें। हमारे माननीय शिक्षा मंत्री जी बहुत दूरगामी सोच के धनी हैं। वे समय-समय पर हम सभी को अपना आशीर्वाद, संरक्षण, उत्साहवर्धन एवं प्रेरणा प्रदान करते हैं। हमारे आदरणीय निदेशक महोदय भी युवा प्रतिभाशाली प्रशासक हम सबके पथप्रदर्शक, मार्गदर्शक, संरक्षक व प्रेरक की बहुआयामी भूमिका में बहुत ही अग्रेसिव हैं। इनके मार्गदर्शन में राजस्थान की प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निरन्तर ऊंचाईयों की ओर अग्रसर है।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय होडू,
बाड़मेर (राज.)
मो: 9414529861

जयंती विशेष

स्वामी दयानंद सरस्वती और उनकी शिक्षाएँ

❒ जयसिंह सिकरवार

उस समय देश में अशांति तथा भय का आतंक था। लोगों में आत्म-सम्मान का अभाव था, अधार्मिक भाव पनप रहे थे-धर्म के नाम पर पाखंड था, जिसके कारण भारत-भूमि अनेक कुरीतियों से कंटकाकीर्ण हो चुकी थी। सैकड़ों चिताएँ भारतीय देवियों की सजीव देह को धधका रही थी। अधर्म तथा अज्ञान की काली निशा में भारतीय बेसुध पड़े सो रहे थे। लोगों का बहुत बड़ा भाग धर्मग्रंथों को पढ़ना तो दूर उनको सुनने का अधिकारी भी नहीं माना जाता था। नारी जाति की दीन अवस्था थी। ऐसी दुर्दशा के समय एक ऐसे समाज सुधारक का जन्म हुआ जिसने आजीवन नैष्टिक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए वैदिक आर्ष ग्रंथों के स्वाध्याय से अपने मन-बुद्धि को निर्मल किया और उन्होंने समाज में व्याप्त इन बुराइयों पर निर्भीकता से प्रहार किया, जिसके लिए उनको अनेकों बार कष्ट सहने पड़े। इसी सत्य के लिए उन्हें 17 बार विष दिया गया परन्तु उन्होंने अंत तक सत्य का परित्याग नहीं किया।

12 फरवरी, 1824 को काठियावाड़ (गुजरात) के टंकारा में एक करशन लाल जी तिवारी के परिवार में बालक मूलशंकर का जन्म हुआ जो बाद में महर्षि दयानंद सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए। बालक मूलशंकर बचपन से जिज्ञासु और प्रतिभाशाली थे। जब वे 16 वर्ष के थे तब उनके परिवार में उनके बहन की और जब वे 19 वर्ष के थे तब उनके चाचा की मृत्यु हो गई। बस यही से उनके मन में वैराग्य की भावना जाग्रत हो गई। बस फिर क्या था रात्रि में घर-परिवार को उस सत्य की खोज के लिए सदा के लिए छोड़ दिया। जीवन की इस यात्रा में उन्होंने 23 वर्ष की उम्र में आजीवन नैष्टिक ब्रह्मचर्य रहने का व्रत लिया। कुछ समय बाद उन्होंने स्वामी पूर्णानंद सरस्वती से संन्यास की दीक्षा ली और यहाँ से इनका नाम दयानंद सरस्वती रखा गया। लेकिन स्वामीजी के दर्शन में मूल परिवर्तन हुआ, मथुरा के स्वामी विरजानंद जी के सम्पर्क में आने के बाद यहाँ उनको शिक्षा देने के बाद के

गुरु विरजानंद ने इनसे दक्षिणा में माँगते हुए आशीर्वाद दिया- 'भारत देश में दीन-हीन जन कई प्रकार से दुःख पा रहे हैं, जाओ उनका उद्धार करो। मत-मतान्तरों के कारण जो कुरीतियाँ इस देश में प्रचलित हो गई हैं उनको दूर कर उनकी बिगड़ी हुई दशा को सुधारो तथा उनका उपकार करो।'

स्वामी दयानंद सरस्वती का समाज के लिए प्रमुख योगदान

1. स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान- स्वामीजी ने ही सर्वप्रथम स्वदेशी राज्य की अवधारणा की स्वतंत्रता को जन्म दिया और उनके दर्शन से प्रभावित होकर अनेकों युवा देश के स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े जिनमें प्रमुख रूप से लाला लाजपतराय राय, श्यामजीकृष्ण वर्मा, रामप्रसाद बिस्मिल आदि अनेक युवा लाभान्वित हुए।

2. शिक्षा का प्रसार- शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने शिक्षा को समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए आवश्यक बताया और उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज ने उनके गुरुकुलों की स्थापना की जो आज भी देश के अनेक भागों में संचालित हैं।

3. स्त्री शिक्षा- उन्होंने स्त्री शिक्षा का समर्थन किया, उन्होंने कहा कि माता निर्माता भवति यदि माता सुशिक्षित और संस्कारित होगी तो वह कई पीढ़ियों का उपकार करेगी।

4. अछूतोद्धार- उन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त अस्पृश्यता का जमकर विरोध किया और इसे उन्होंने अवैदिक बताया।

5. विधवा विवाह- उन्होंने विधवा विवाह को प्रोत्साहन दिया ताकि वो अपना और अपनी संतान का जीवन यापन सुखी होकर कर सके।

6. धार्मिक सुधार- धर्म में व्याप्त जड़-पूजा के स्थान पर एक परमात्मा की उपासना और कर्मवाद पर जोर दिया, उनके अनुसार कर्म के फलों को प्रत्येक व्यक्ति को ही भोगना पड़ता है। उन्होंने पाप क्षमा करने वाले गुरुओं और ग्रंथों को अवैदिक और मिथ्या सिद्ध किया।

7. चरित्र निर्माण- वैदिक संस्कारों के माध्यम से उन्होंने व्यक्ति की चरित्र शिक्षा पर जोर दिया। उनका मानना था कि जब तक व्यक्ति अपने चरित्र में नैतिकता और शुचिता नहीं लाता तब तक वह अपना और अपने समाज का भला नहीं कर सकता।

8. ठगप्रथाओं का उन्मूलन- स्वामी दयानंद ने अपने अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में धर्म के नाम पर बाबाओ के द्वारा किए जाने वाले चमत्कारों को गलत सिद्ध किया।

9. मृतक श्राद्ध और तर्पण- उन्होंने बताया कि जीवित माँ-बाप की हर प्रकार से तृप्ति करना ही 'तर्पण' और उनमें श्रद्धा रखना ही 'श्राद्ध' है। मरने के पश्चात किए जाने वाले कर्म पाखंड मात्र ही हैं।

10. कर्मवाद पर विश्वास- उन्होंने लोगों को भाग्यवाद के स्थान पर कर्मवाद पर जोर दिया। उन्होंने वेदों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि व्यक्ति कर्म से ही अपने भाग्य का निर्माण करता है।

इस प्रकार महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने समाज के लिए कई अविस्मरणीय कार्य किए। उनकी शिक्षाएँ आज भारत ही नहीं दुनियाँ के कई देशों में प्रासंगिक हैं, उनके द्वारा संस्थापित 'आर्यसमाज' आज भी शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में देश-विदेश में उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। आवश्यकता है हम अपनी भावी पीढ़ी के विद्यार्थियों को उनकी शिक्षाओं और आदर्शों से प्रेरित कर उनको लाभान्वित कर सकें।

अध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दयेरी,
धौलपुर (राज.)-328024
मो: 9414712742

रविदास जयंती विशेष

संत रविदास के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

❒ चेनाराम सीरवी

संत श्री रविदास का जन्म माघ पूर्णिमा संवत 1433 में सीर गोवर्धनपुर वाराणसी उत्तर प्रदेश में हुआ था। इसी दिन को रविदास जयंती के रूप में मनाते हैं। क्रांतिकारी, समाज-सुधारक, दार्शनिक, भक्त और कवि जैसी विशेषताओं से विभूषित रविदास एक लोकप्रिय संत है। सुविधा से वंचित, उपेक्षित वर्ण में जन्में रैदास जी ने तत्कालीन रुढ़ियों, जातिवाद, अंधविश्वास, सांप्रदायिकता, ऊँच-नीच का भेद, छुआछूत के प्रति विद्रोह किया। रविदास ने अपनी वाणी से मानव के लिए समतामूलक समाज, विश्व बंधुत्व, भाईचारा, प्रेम का संदेश दिया। संत रविदास ने सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक लकीर को ठुकराते हुए फकीर की भूमिका निभाई है। उन्होंने संयम, शील, संतोष का बखान अपनी वाणी में किया है वे कहते हैं-

जो बस राखे इंद्रियां सुख-दुख समझि समान।
सोउ अमरित पद पाइगे कहै रविदास बखान।।

जातिवाद मनुष्यता का दुश्मन है। इसके कारण मानव-मानव में सच्चा बंधुभाव व समानता पैदा नहीं हो सकती। जन्मजात मत पूछिए का जात और पात। रैदास पूत सम प्रभु के कोई नहि जात कुजात। एक ही जाति को सर्वोपरि मानते हैं, वह है मानव जाति। उनके अनुसार सभी मनुष्य परमात्मा की संतान हैं। आज के आधुनिक युग में ऊँच-नीच एवं जाति व्यवस्था दिखाई देती है। इसी कारण मानव मानव के भीतर मतभेद बढ़ा रहा है। रविदास जी की वाणी इस अभिशाप से भारत को मुक्ति दिलाने में सहायक है। उनके अनुसार ईश्वर की दिव्य अनुभूति अपने हृदय रूपी मंदिर में ही होती है।

बन खोजा पी ना मिलै बन मै प्रीतम नाहि।
रविदास पी हम बसै रहियो मानव माहि।।

शिक्षा के बढ़ते व्यवसायीकरण ने गुरु-शिष्य परंपरा को कम किया है। रविदास जी ने

गुरु के महत्त्व को अपनी वाणी द्वारा व्यक्त किया। अपने भीतर के तम को बुझाने के लिए गुरु की अनिवार्यता पर बल दिया है-

गुरु ग्यानन दीपक दिया बाती दई जलाय।
रैदास हरि भगति करने जन्म मरन बिलमाय।।

रविदास की रचनाओं से अनेक प्रेरक शिक्षाएँ हमें मिलती हैं। सच्ची शिक्षा वह है, जो मानव में सेवा धर्म जाग्रत करे, उसे स्वतंत्र बनाए अर्थात उसे पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त करें। उन्होंने पराधीनता को पाप कहा है-पराधीनता पाप है, जान लेहूँ रे मीत। वे समतामूलक समाज के समर्थक हैं, उन्होंने लिखा है कि-ऐसा चाहू राज मैं, जहाँ मिलै सबन को अन्न। उनके अनुसार शिक्षा मानव को सत्य की ओर अग्रसर करने वाली प्रक्रिया है, जिसे मनुष्य परंपरा एवं परिस्थिति के अनुसार ग्रहण करता है। शिक्षा कोई वस्तु नहीं है बल्कि वह एक प्रकार की चेतना है। जिसे मनुष्य स्वयं प्राप्त करता है। रविदास कहते हैं कि शिक्षा ही साधारण व्यक्ति में ऐसी योग्यता पैदा करती है, जिससे वे वर्ग एवं जाति भेद का विरोध कर सकते हैं। कोई मनुष्य जन्म के आधार पर ऊँचा या नीचा नहीं बन सकता। बल्कि सभी समान हैं।

जग में बेरी कोई नहीं है, सब है अपने मीत।
रविदास सबन ते राखिये, निज कुटुंब सी प्रीत।।

रविदास के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य प्राणियों के हृदय में विश्व बंधुत्व की भावना का विकास करना है। वे कहते हैं सभी धर्मों का मूल सत्य है, जो मनुष्य सत्य को छोड़ता है, उसका जीवन मृतक के समान बन जाता है- सत विद्या को पढ़ें, प्राप्त करें। सदा ज्ञान। रविदास कहे बिन विद्या, नर को जान अजान। संत रैदास का जीवन और काव्य उदात्त मानवता के लिए आवश्यक समाचारों के शाश्वत सैदांतिक मूल्यों का अक्षय भंडार है। जिसमें से प्रत्येक वर्ग और स्थिति तथा मानसिक स्तर पर व्यक्ति अपने लिए सुंदर-सुंदर मोतियों का चुनाव सुगमता से कर सकता है। आज भाग्य भगवान तीर्थ स्नान और ना जाने कितने प्रकार के तथाकथित क्रियाकलाप मनुष्य और मनुष्यता के दुश्मन बन कर हमारे सामने आ रहे हैं। ऐसे धार्मिक पाखंड से मुक्ति के लिए गुरुजी मन की शुद्धता व श्रम को महत्त्व देते हैं। रविदास जी का चिंतन दर्शन में संपूर्ण विश्व की चिंता साफ दिखती है। मानवीय प्रेम की वकालत करने वाले गुरु रविदास आज जाति धर्म देश की सीमाओं से परे अपने चिंतन दर्शन के कारण पूरे विश्व में समादरणीय है। रविदास जी का अनुभव चिंतन एक ऐसा दीपक है जो समाज में फैले भ्रष्टाचार, जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रवाद, सांप्रदायिकता, हिंसावाद एवं नैतिकता के घने अंधकार को नैतिकता में बदल सकती है। उनकी वाणी अमृता का उद्घोष करती हैं। संत रविदास की सामाजिक चेतना बहुआयामी है। वे किसी एक वर्ग की बात नहीं करते। संत रैदास जी के काव्य का वैचारिक आधार बहुत दर्द युक्त तथा उनकी भावात्मक पृष्ठभूमि बहुत ही विस्तृत तथा सामाजिक है। जिसकी प्रासंगिकता समसामयिक संदर्भों में भी असंदिग्ध है।

असिस्टेंट प्रोफेसर, आरएससीईआरटी,
उदयपुर (राज.)
मो: 9983449410

बसंत पंचमी विशेष

माँ सरस्वती का पूजन महोत्सव- बसंत पंचमी

❒ राजीव अरोड़ा

हमारे देश में पर्व या त्योहार किसी देवता की जन्मतिथि अथवा दैवी घटना-विशेष के कारण मनाए जाते हैं परन्तु बसन्त पंचमी पर्व की सबसे बड़ी विशेषता इसका विशुद्ध सांस्कृतिक पर्व होना है। इस पर्व का सम्बन्ध न तो किसी देवता के जन्मदिवस से है और न किसी दैवीय घटना-विशेष से। यह पर्व बसन्त ऋतु के आगमन के उपलक्ष में मनाया जाता है।

बसन्त पंचमी का पर्व माघ माह की शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाया जाता है। ऋतु सम्बन्धी पर्व होने के कारण बसन्त पंचमी को प्राकृतिक पर्व भी कहा जाता है। वैसे तो बसन्त ऋतु का आगमन मकर सक्रान्ति से ही हो जाता है किन्तु बसन्त आगमन-महोत्सव माघ माह की शुक्ल पंचमी को ही मनाने की प्रथा है।

ऋतुओं में केवल बसन्त ऋतु ही एक ऐसी ऋतु है जिसमें सभी ऋतुओं के अच्छे प्रभाव और गुणों के सर्वोत्तम अंश का समावेश होता है। इस ऋतु में न अत्यधिक गर्मी होती है, न अत्याधिक सर्दी और न वर्षा ऋतु से मिलने वाला कोई कष्ट। इस प्रकार बसन्त ऋतु में किसी भी प्रकार की ऋतु की 'अति' नहीं पाई जाती है। यदि इस ऋतु में कभी किसी चीज की 'अति' होती भी है तो वह आनन्द की 'अति' है इसलिए हमारे देश में बसन्त ऋतु को ऋतुराज अर्थात् समस्त ऋतुओं का राजा माना गया है। जिस प्रकार राजा के आगमन पर प्रजा द्वारा उत्सव मनाया जाता है, उसी प्रकार ऋतुराज के आने पर उत्सव मनाया जाता है। बसन्त ऋतु नवीन उत्साह, उमंग और आशा का प्रतीक है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, जड़-चेतन आदि में आनन्द और उल्लास का संचार होने लगता है। पतझड़ के कारण पत्तों से हीन वृक्षों पर नए-नए मुलायम पत्ते निकलने लगते हैं। आमों में मंजरियाँ निकलने लगती हैं, भौंरें उन पर गुंजन करते हैं और कोयल कूकने लगती है। सरसों के पीले-पीले फूलों से खेत लहरा उठते हैं। ऐसा लगता है कि प्रकृति ने हरे-हरे खेत रूपी पृथ्वी को पीले-पीले सरसों के फूल रूपी स्वर्णाभूषणों से शृंगार

किया हों।

बसन्तोत्सव का आरम्भ विक्रमादित्य के काल से आरम्भ हुआ। उस समय अच्छी फसल होने पर किसान खुशियाँ मनाते थे। पहले तो अकेले-अकेले ही, परन्तु बाद में समस्त प्रजा मिलकर उत्सव मनाने लगी। गुप्तकाल में यह उत्सव बहुत ही लोकप्रिय हो गया था। कालिदास ने अपने नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में बसन्त के उत्सव को 'मदनोत्सव' कहा है। इस समय तक फसल तैयार हो चुकी होती है तथा आगामी चैत्र फसल की चिन्ता किसानों को नहीं रहती है। इस समय किसान निश्चिंत होकर उत्सव मना सकते हैं इसलिए किसान निश्चिंत होकर नाचते-गाते, खुशियाँ मनाते हैं।

ऐसी मान्यता है कि बसन्त पंचमी के दिन वीणा पर बसन्त राग सुनने से समस्त मनोरथ सिद्ध होते हैं। इस दिन कामदेव के साथ उनकी पत्नी रति तथा कामदेव के मित्र बसन्त की पूजा का भी विधान है। बसन्त पंचमी के दिन भगवान् श्रीकृष्ण की भी पूजा की जाती है। ऐसी मान्यता है कि बसन्त पंचमी के दिन जो भगवान् श्रीकृष्ण की महापूजा करता है, वह बसन्त के समान उनका प्रिय हो जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण को छहों ऋतुओं में से बसन्त ऋतु अत्यधिक पसन्द थी। भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता में अपने विराट रूप का परिचय देते हुए कहा है- **'ऋतुणां कुसुमाकरः' अर्थात् 'ऋतुओं में बसन्त मैं हूँ।'**

माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी अर्थात् बसन्त पंचमी माँ सरस्वती की पूजा-आराधना का विशिष्ट दिन है। सरस्वती शब्द का शाब्दिक अर्थ है- **'सरस की स्वामिनी'** अर्थात् रसपूर्ण दिव्य भावों को प्रदान करने वाली देवी माँ। माँ सरस्वती को विद्या, ज्ञान, कला और संगीत की अधिष्ठात्री देवी होने के कारण सर्वाधिक सरस्वती नाम से जाना जाता है। चन्द्रमा की भाँति गौरवर्ण माँ सरस्वती अपने दोनों हाथों में वीणा धारण करती हैं। माँ सरस्वती के तीसरे हाथ में पुस्तक तथा चौथे हाथ में स्फटिक की माला सुशोभित रहती है। जहाँ वीणा संगीत और कला तथा पुस्तक ज्ञान का प्रतीक है, वहीं स्फटिक की माला इस बात का प्रतीक है कि माँ सरस्वती को भगवान् शिव के समान ही तप करना प्रिय है। माँ सरस्वती का वाहन हंस भी सात्त्विक गुणों को दर्शाता है। माँ सरस्वती का आसन भी श्वेत कमल पुष्प है। विद्या, कला, ज्ञान-विज्ञान और संगीत की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती को सफेद रंग की वस्तुएँ प्रिय हैं। माँ सरस्वती श्वेत वस्त्र धारण करने के साथ ही आभूषण भी मोतियों के बने हुए ही धारण करती हैं। यही कारण है कि माँ सरस्वती की पूजा-आराधना करते समय श्वेत रंग की वस्तुओं यथा-दूध-दही-मक्खन, सफेद तिल का लड्डू, श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, श्वेत परिधान, श्वेत अलंकार (चाँदी से निर्मित), खोवे का श्वेत मिष्ठान्न, शर्करा, श्वेत मोदक, घृत, नारियल, नारियल का जल, श्रीफल आदि का ही उपयोग करने का शास्त्रीय विधान है।

गोस्वामी तुलसीदासजी द्वारा रचित श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड में माँ सरस्वतीजी और देवनदी गंगाजी के संबंध में वर्णित है कि-

पुनि बंदउँ सारद सुरसरिता।

जुगल पुनीत मनोहर चरिता।।
मज्जन पान पाप हर एका।
कहत सुनत एक हर अबिबेका।।

अर्थात् मैं सरस्वतीजी और देवनदी गंगाजी की वन्दना करता हूँ। दोनों पवित्र और मनोहर चरित्र वाली हैं। एक (गंगाजी) स्नान करने और जल पीने से पापों को हरती हैं और दूसरी (सरस्वतीजी) गुण और यश कहने और सुनने से अज्ञान का नाश कर देती हैं। भाव यह है कि देवनदी गंगा और माँ सरस्वतीजी दोनों एक समान ही पवित्रकारिणी हैं। एक पापहारिणी और एक अविवेकहारिणी हैं।

भारतवर्ष में बसन्त पंचमी के अवसर पर माँ सरस्वती की पूजा-आराधना का उत्सव बड़े व्यापक रूप से मनाए जाने का यही रहस्य है। विद्यालयों में माँ सरस्वती की जयन्ती एक उत्सव के रूप में हर्ष और उल्लास के साथ मनाई जाती है। विद्यालयों में विद्यार्थियों द्वारा विद्या, कला, ज्ञान-विज्ञान और संगीत की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती की स्तुति एवं ध्यान करने के लिए निम्नलिखित दो श्लोकों से वन्दना की जाती है-

या कुन्देन्दुतुषारहालधवला
या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा
या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकरप्रभृतिभि:र्
देवै सदा वन्दिता,
स मा पातु सरस्वती भगवती
नि:शेषजाड्यापहा।।1।।

अर्थात् जो कुन्दपुष्प, चन्द्रमा व हिमकिरणों के हार की भाँति श्वेत हैं, जो सफेद वस्त्र धारण किए हुए हैं, वीणा से जिसके हाथ शोभायमान हैं, जो श्वेत कमल के आसन पर विराजमान हैं, जो ब्रह्मा-विष्णु-महेश आदि देवताओं द्वारा सदैव पूजनीया हैं, वह समस्त जड़ता को दूर करने वाली माँ सरस्वती हमारी रक्षा करें।

शुक्ला ब्रह्माविचारसारपरमां
आद्यां जगद्व्यापिनीम्,
वीणा पुस्तकधारिणीमभयदां
जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फटिकमालिकां विद्धती,
पद्मासने संस्थिताम्
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं
बुद्धिप्रदां शारदाम्।।

अर्थात् श्वेत वर्ण वाली, ज्ञानमय विचारों से परिपूर्ण, आदिकाल से ही पूजनीया, सम्पूर्ण संसार में व्याप्त, वीणा और पुस्तक को धारण करने वाली, अभय प्रदान करने वाली, जड़तारूपी अंधकार को दूर करने वाली, हाथों में स्फटिक की माला धारण करने वाली, कमल के आसन पर विराजमान, ऐश्वर्यमयी, बुद्धिप्रदाता देवी शारदा की मैं वंदना करता हूँ।

बसन्त पंचमी के दिन पीले रंग के वस्त्र धारण कर माँ सरस्वती की पूजा-आराधना करते हैं। गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के शान्ति निकेतन और काशी के प्रसिद्ध हिन्दू विश्वविद्यालय में माँ सरस्वती की पूजा का विशेष आयोजन किया जाता है। इस दिन स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों में विशेष उत्साह दिखाई देता है। इस अवसर पर माँ सरस्वती को आम्र की मंजरी विशेष रूप से अर्पित की जाती है तथा आम्र की मंजरी को प्रसाद के रूप में वितरित किया जाता है। पुस्तक और लेखनी (कलम) में भी माँ सरस्वती का निवास माना जाता है इसलिये बसंत पंचमी के दिन पुस्तकों व लेखनी (कलम) की भी पूजा की जाती है। माँ सरस्वती के पूजन में श्वेत कमल, श्वेत गुलाब, बेला, मोगरा, जूही, चमेली, श्वेत चम्पा और पीत चम्पा के फूलों के अर्पण का विशिष्ट महत्त्व है।

बसन्त पंचमी के दिन माँ सरस्वती की पूजा करके गुलाल उड़ाया जाता है। इस दिन लोग बसन्त रंग में रंगें वस्त्र धारण करते हैं। मन्दिरों में भी भगवान् को बसन्ती अथवा गुलाबी वस्त्र धारण करवाए जाते हैं। राजस्थान, उत्तरप्रदेश आदि में लोग इसी दिन से फाग या होली गाते हैं। बसन्त पंचमी से लेकर फाल्गुन की पूर्णिमा तक होली गाई जाती है। इसी दिन से छोटे बालक और बालिकाओं को माँ सरस्वती की पूजा के पश्चात् अक्षर ज्ञान का प्रारम्भ करवाया जाता है।

बसन्त पंचमी को 'श्री पंचमी' भी कहा जाता है। 'श्री' अर्थात् 'लक्ष्मी'। लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए विद्या और ज्ञान की आवश्यकता होती है। माँ सरस्वती विद्या की अधिष्ठात्री देवी हैं और विद्या को समस्त धनों में प्रधान धन कहा गया है इसलिए इस दिन माँ सरस्वती के साथ-साथ लक्ष्मी पूजन का भी विधान है। इस दिन उपवास करने वाले पर माँ लक्ष्मी सदैव प्रसन्न रहती हैं। माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाए जाने वाला बसन्त पंचमी का यह प्राकृतिक पर्व जीवन में नवीन उत्साह, उमंग और आशा का संचार करने के साथ-साथ विद्या, कला, ज्ञान-विज्ञान और संगीत की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती की पूजा-आराधना का विशिष्ट दिन भी है। इस प्रकार आनन्ददायिनी ऋतु में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आदि सभी दृष्टियों में बसन्त पंचमी का अपना विशेष महत्त्व है।

सहायक प्रशासनिक अधिकारी
31, शिव वाटिका, मॉडल टाउन-सी के पास,
मालवीय नगर, जयपुर (राज.)-302017
मो: 7742131000

सूचना

- **'शिविरा' मासिक पत्रिका में रचना भेजने वाले अपनी रचना के साथ व्यक्तिगत परिचय यथा- नाम, पता, मोबाइल नंबर, बैंक का नाम, शाखा, खाता संख्या, आईएफएससी. नंबर एवं बैंक डायरी के प्रथम पृष्ठ की स्पष्ट छायाप्रति अवश्य संलग्न करके भिजवाएँ।**
- **कुछ रचनाकार एकाधिक रचनाएँ एक साथ भेजने पर एक रचना के साथ ही उक्त सूचनाएँ संलग्न कर दायित्वपूर्ति समझ लेते हैं। अत: अपनी प्रत्येक रचना के साथ अलग से पृष्ठ लगाकर प्रपत्रानुसार अपना विवरण अवश्य भेजें। इसके अभाव में रचना के छपने एवं उसके मानदेय भुगतान में असुविधा होती है।**

-वरिष्ठ संपादक

प्रेरक व्यक्तित्व

बालक बना महान सरोजनी नायडू

❒ डॉ. चेतना उपाध्याय

श्री अघोरनाथ चट्टोपाध्याय एक नामी विद्वान थे। उनकी नन्हीं बिटिया रानी बचपन से ही उन्हें अपने से दो कदम आगे दिखाई देती थी। वे उसे भरपूर प्यार और स्नेहिल मार्गदर्शन समय-समय पर प्रदान करते रहते थे। इन्हें पूरी उम्मीद थी उनकी यह नन्हीं बिटिया आगे चलकर वैज्ञानिक या नामी इंजीनियर बनकर उनका नाम रोशन करेगी। कारण कि उसने मात्र बारह वर्ष की उम्र में बारह कक्षाएँ पास कर ली थीं। वह भी सर्वोत्तम स्थान पर रहते हुए। उसके पिता ने तब विज्ञान व गणित विषय में आगे अध्ययन हेतु उसके लिए पुस्तकें व सुविधाएँ उपलब्ध करवाई। एक दिन उन्होंने उसकी गणित की उत्तर-पुस्तिका को उठाकर गणित में उनकी प्रगति देखनी चाही।

पर यह क्या उसमें गणित के अंक तो कहीं दिखाई ही नहीं दिए... उसके स्थान पर भाषायी अभिव्यक्ति देखकर उन्हें बड़ा बुरा लगा, थोड़ा गुस्सा भी आया। किन्तु जब उन्होंने गौर से देखा और उसे पढ़ा तो आश्चर्यचकित हो गए। इतनी नन्हीं सी बालिका इतनी सशक्त अभिव्यक्ति भी कर सकती है? मात्र 13 वर्ष की अल्प आयु में 1300 लाईन की कविता लिख डाली। वे इसे देख अचंभित हो गए। उनका गुस्सा गायब हो गया। और अपनी बिटिया की इस योग्यता को देख उनकी खुशी का ठिकाना ना रहा। उन्होंने इस कविता की अनेकों कॉपी बनवा कर जगह-जगह बाँटी। एक हैदराबाद के नवाब को भी वह रचना दी जिसे देख वे बहुत खुश हुए और उन्होंने इस बच्ची को आगे विदेश में पढ़ने हेतु छात्रवृत्ति भी दी। जिससे वह बालिका लंदन के किंग कॉलेज में प्रवेश ले पाई।

जानते हो बच्चों वह विलक्षण प्रतिभा की धनी बालिका कौन थी? जी हाँ यह वही बालिका थी जो स्वर कोकिला के रूप में विख्यात हुई। जिसे आगे चलकर नित नवीन संघर्षों के साथ अनेकानेक विश्व स्तरीय उपलब्धियाँ भी हासिल हुई। साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक सभी क्षेत्रों में अपना व अपने परिवार, समाज व राष्ट्र का नाम रोशन करने वाली वह बालिका सरोजनी नायडू थी।

प्रारंभिक बाल्यकाल- सरोजनी नायडू का जन्म श्रीमती वरद सुन्दरी व डॉ. अघोरनाथ चट्टोपाध्याय के परिवार में 13 फरवरी, 1879 को हैदराबाद नगर में हुआ था। आपके पिता नामी रसायन वैज्ञानिक थे और निजाम कॉलेज के संस्थापक के रूप में जाने जाते थे। माँ विदूषी कवयित्री थी जो बांग्ला भाषा में लिखती थी। सरोजनी अपने आठ भाई-बहिनों में सबसे बड़ी थी। आपने लेखन कला अपनी माँ से विरासत में पाई थी। जिसे मेहनत, लगन व जुनून के साथ आपने बाँग्ला के साथ उर्दू, तेलुगू, अंग्रेजी, फारसी में भी बड़ी शिद्दत के साथ आगे बढ़ाया।

आपने मात्र 13 वर्ष की उम्र में 'लेडी ऑफ दी लेक' नामक कविता लिखी जो कि बड़ी प्रसिद्ध हुई। आगे भी आपकी पढ़ाई के साथ आपका पत्र लेखन निरंतर जारी रहा। गोल्डन थ्रेशोल्ड आपका पहला काव्य संग्रह था। उनके दूसरे तथा तीसरे कविता संग्रह बर्ड ऑफ टाइम तथा ब्रोकन विंग ने एक सुप्रसिद्ध कवयित्री बना दिया। बचपन में ही आपने 2000 पंक्तियों का विस्तृत नाटक लिखा जो कि आज तक पसंद किया जाता है।

अपनी पढ़ाई पूर्ण करने के बाद सरोजनी नायडू ने 1898 में मात्र 19 वर्ष की उम्र में अपने मित्र डॉ. गोविन्द राजुल नायडू से विवाह कर लिया। उनका यह कदम भी क्रांतिकारी था। क्योंकि उस दौर में अन्तर्जातीय विवाह भारतीय समाज में स्वीकार्य नहीं थे। उस समय भी उन्हें विरोध के साथ, पिता का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। जिससे कि उनका वैवाहिक जीवन सुखमय रह पाया। गोविन्द राजुल एक फौजी डॉक्टर थे।

सामाजिक, राजनैतिक जीवन- वर्ष 1905 में बंगाल विभाजन के दौरान आप भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हुई। इस आंदोलन के दौरान वो गोपाल कृष्ण गोखले, रविन्द्रनाथ टैगोर, मोहम्मद अली जिन्ना, एनी बेसेंट, सी.पी. रामा., स्वामी अय्यर, गाँधीजी और जवाहर लाल नेहरु के सम्पर्क में आई।

भारत में महिला सशक्तिकरण और महिला अधिकारों के लिए भी आपने आवाज उठाई। आपने छोटे-छोटे शहरों से लेकर राज्य स्तर की महिलाओं को जागरूक किया। तभी महिला सशक्तिकरण की मिसाल के रूप में आपका नाम सदैव कायम रहेगा।

वर्ष 1925 में आप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष चुनी गई। सविनय अवज्ञा आंदोलन में वो गाँधी जी के साथ जेल भी गई। वर्ष 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भी 21 माह के लिए जेल जाना पड़ा। उनका गाँधीजी के साथ बड़ा ही स्नेहिल सम्बन्ध था। गाँधीजी उन्हें बुलबुल कहते थे और विनोदी स्वभाव के कारण गाँधीजी के लघु दरबार में उन्हें विदूषक भी कहा जाता था। गाँधीजी को वो मिंकी माउस कहकर पुकारती थी। वैसे आप गाँधीजी को 1914 से पूर्व भी मिली थी मगर इंग्लैण्ड में (1914) गाँधीजी से असली स्वरूप में उनकी मुलाकात हुई थी। उनके विचारों से प्रभावित होकर ही वे देश के प्रति समर्पित हो गई थी।

संकटों से न घबराते हुए वे एक धैर्यवान वीरांगना की भाँति गाँव-गाँव घूमकर देश-प्रेम का अलख जगाती रही और देशवासियों को उनके कर्त्तव्य की याद दिलाती रही। उनके वक्तव्य जनता के हृदय को झकझोर देते थे और देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए प्रेरित कर देते थे। आप बड़ी ही मुखर व प्रेरक वक्ता रहीं। आपकी यह विशेषता थी कि आप क्षेत्र के आधार पर वहाँ उपयोग में ली जाने वाली भाषा के आधार पर अपना भाषण तुरन्त सहजता से उसी भाषा में बोलने लगती थी। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती या बांग्ला सभी भाषाएँ आप धाराप्रवाह रूप में बोल लेती थी। बहुभाषी होना आपके व्यक्तित्व का सकारात्मक पहलू था। बचपन से ही आपने विभिन्न भाषाओं का अध्ययन कर उन पर सहजता हासिल की थी।

कुछ ही समय में सरोजनी अपने व्यवहार, ज्ञान, जुझारूपन, बहुभाषी नेतृत्वकारी गुणों की बदौलत एक राष्ट्रीय नेता के रूप में पहचानी जाने लगी थी। 1925 में वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन की अध्यक्ष चुनी गई। तब तक वे गाँधीजी के साथ काम करते हुए 10 वर्षीय गहन राजनीतिक ज्ञान व अनुभव प्राप्त कर चुकी थी। आजादी के पूर्व भारत में कांग्रेस का अध्यक्ष होना बहुत सम्मानजनक था। फिर पितृसत्तात्मक समाज में एक महिला को अध्यक्ष पद मिलना बेहद गौरवपूर्ण था। देश के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से आपका अमिट योगदान लिखा गया। कांग्रेस अध्यक्ष पद पर रहते हुए आपने अनेकों संघर्षों का सामना किया पर पद गरिमा को अक्षुण्ण बनाए रखा। आपने संयुक्त राज्य अमेरिका और भारतीय राष्ट्रव्यापी संघर्ष के ध्वजवाहक के रूप में कई यूरोपीय देशों के लिए बड़े पैमाने पर यात्राएँ की। 1932 में भारत की प्रतिनिधि बनकर दक्षिण अफ्रीका भी गई।

स्वाधीनता की प्राप्ति के पश्चात आपके नेतृत्वकारी गुणों, योग्यताओं व क्षमताओं के चलते भारत के प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरु की अनुशंसा पर आपको उत्तर प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया गया। उस समय उत्तर प्रदेश विस्तार और जनसंख्या की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा प्रान्त था। उस पद को स्वीकारना आपके लिए बहुत बड़ी चुनौती थी। फिर भी सहर्ष राज्यपाल पद को स्वीकारते हुए आपने कहा कि-मैं इस समय अपने को कैद कर दिए गए जंगल के पक्षी की तरह अनुभव कर रही हूँ। मगर माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रति गहन प्रेम, स्नेह, सम्मान के कारण वे इस आज्ञा को टाल न सकी। पद स्वीकारने के पश्चात वे लखनऊ में जाकर बस गई और वहाँ सौजन्य व गौरवपूर्ण व्यवहार के द्वारा अपने राजनीतिक कर्त्तव्यों का सुदृढ़तापूर्वक निर्वहन किया।

जीवनपर्यन्त आपने गाँधीजी के विचारों और मार्ग का अनुसरण किया। भारतीय समाज में जातिवाद और लिंग भेद को मिटाने के लिए भी आपने अनेक कार्य किए। परिणामस्वरूप समाज में आपकी सामाजिक, साहित्यिक, राजनीतिक पहचान कायम रह पाई। आप दबंग राजनीतिज्ञ थी, प्रखर वक्ता थी, क्रांतिकारी व्यक्तित्व की धनी होने के साथ ही आप सुकोमल हृदय की स्वामिनी भी थी, जिससे आपका लेखन भी बड़ा ही मार्मिक होता था। आपने अपनी कविताओं में टूटे सपनों, आशाओं, शक्ति, गौरव, सौंदर्य, प्रेम अतीत और भविष्य, जीवन और मृत्यु इत्यादि को बड़ी ही कुशलता से अभिव्यक्त किया था। आप अपनी कविताओं में इतने सारे भावों को बड़ी ही सहजता से कलमबद्ध करती थी। यही कारण था कि आपकी रचनाओं से प्रत्येक पाठक मुग्ध हो जुड़ जाया करता था। आप अपनी रचनाओं को मधुर स्वरों में पाठ करती थी। इसी कारण महात्मा गाँधी द्वारा आपको भारत कोकिला नाम से नवाजा गया था। आपका सृजन गीतिकाव्य शैली में रहता था। 1905, 1912 और 1917 में आपकी कविताएँ प्रकाशित हुई थी। आपने फारसी भाषा में एक नाटक मेहर मुनीर लिखा। द बर्ड ऑफ टाइम्स, द ब्रोकन विंग, नीलांवुज, ट्रेवलर्स सांग आपकी प्रकाशित पुस्तकें हैं। अंग्रेजी साहित्यकार एडमंड विलियम गोसे ने आपको भारतीय परिप्रेक्ष्य में भारतीय जीवन दृश्यों पर लेखन को प्रेरित किया था अतः आपको सरोजनी जी साहित्यिक गुरु मानती थी। गोसे की प्रेरणा से ही आपकी रचनाओं में भारतीयता के दर्शन हुए।

आपके राजनीतिक जीवन में गोपाल कृष्ण गोखले साहब का भी बड़ा योगदान रहा। आप उन्हें अपने राजनीतिक पिता स्वरूप मानती थी। प्रखर वक्ता और प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष के रूप में 1908 में अंग्रेजों ने आपको 'कैसर ए हिन्द' के सम्मान से नवाजा था। लेकिन जलियांवाला बाग हत्याकांड से क्षुब्ध होकर उन्होंने इस सम्मान को वापस कर दिया था।

70 वर्ष की आयु में सरोजनी नायडू 2 मार्च, 1949 को लखनऊ में अपने कार्यालय में काम करने के दौरान दिल का दौरा पड़ने के कारण मृत्यु के आगोश में समा गयी। 13 फरवरी, 1964 को भारत सरकार ने उनकी जयंती के अवसर पर उनके सम्मान में 15 नए पैसे का एक डाक टिकट भी जारी किया।

तो ऐसी थी वह नन्ही बालिका जिसने बाल्यकाल से ही अपने लक्ष्यों को जीवन में साधे रखा व महानता की प्रतिभूति के रूप में इतिहास बन अपनी योग्यता के झण्डे गाढ़े।

49, गोपाल पथ, कृष्ण विहार, कुन्दन नगर,
अजमेर (राज.)
मो: 9828186706

आओ नई शुरुआत करें

❐ शेषा राम

एक दूसरे का साथ करें
आओ नई शुरुआत करें
देश पर संकट आ पड़ा
हरियाली हमें छोड़ चली
छोटे पेड़ परेशान हैं
हम उनकी पुकार सुनें
सब मिलकर बरसात करें
आओ नई शुरुआत करें।
बुराई का है बोलबाला
पैसों से होती मनमानी
सत्य-ईमान किताबों में रहा
सच्चे की बात न मानी
कोई तो देता इनको सहारा
हम उनको ज्ञात करें
सब मिलकर बात करें
आओ नई शुरुआत करें।
दोपहर में अंधियारा हुआ
सूरज चंदा छोड़ चले
रोजाना अमावस्या ही आती
दीपक की बुझ गई बाती
उदासीनता के माहौल में
मुस्कान को आह्वान करें
हम चांदनी रात करें
आओ नई शुरुआत करें।

अध्यापक
महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय
(अंग्रेजी माध्यम) देचू, जोधपुर
मो. 8003883954

विज्ञान दिवस विशेष

भारत में अंतरिक्ष अनुसंधान

❒ चन्द्रभूषण शर्मा

अंतरिक्ष सदैव से ही मानव की जिज्ञासा एवं उत्सुकता का क्षेत्र रहा है। अंतरिक्ष में अनुसंधान की व्यावहारिक शुरूआत सोवियत संघ ने 4 अक्टूबर, 1957 में 'स्पूतनिक-1' कृत्रिम उपग्रह भेजकर की। उसके तुरन्त बाद 3 नवम्बर, 1957 में 'स्पूतनिक-2' में 'लाइका' नामक कुत्ते को भेजा गया। अमेरिका ने 1958 में 'मैसेंजर' नामक कृत्रिम उपग्रह को भेजा। उसके बाद भारत ने भी अपना अंतरिक्ष अनुसंधान कार्य प्रारम्भ कर दिया। 3 अगस्त 1954 में राष्ट्रपति के आदेश से परमाणु ऊर्जा विभाग की स्थापना की गई। यह सीधे प्रधानमंत्री के अधीन है। इसका मुख्यालय 'मुम्बई' है। परमाणु ऊर्जा विभाग के अन्तर्गत 1962 में डॉ. विक्रम साराभाई की अध्यक्षता में भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति (Incospar) का गठन किया गया। इंकोस्पार (Indian National Committee on Space Research) ने तिरूअनंतपुरम स्थित 'सेट मेरी मैकडेलेने चर्च' के एक कमरे से अपना कार्य संचालन शुरू किया। थुम्बा, तिरूअनंतपुरम, केरल में भू-मध्ययीय रॉकेट प्रक्षेपण केन्द्र की स्थापना की। 21 नवम्बर, 1963 को देश का पहला साउंडिंग रॉकेट 'नाइक एपाश (अमेरिका द्वारा निर्मित) को थुम्बा, भूमध्य रेखीय रॉकेट प्रक्षेपण केन्द्र (Thumba Equatirial Rocket Launching Station) से प्रक्षेपित किया गया। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई के निधन के बाद TERLS का नामकरण विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र कर दिया गया। 1965 में थुम्बा में अन्तरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र (SSTC) की स्थापना की गई और 1968 में इसे संयुक्त राष्ट्र संघ को समर्पित किया गया। वर्तमान में यह केवल शोध केन्द्र है और भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के प्रतीक के रूप में है। 1967 में 'उपग्रह दूरसंचार भू-केन्द्र' की स्थापना अहमदाबाद में की गई।

भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति (इंकोस्पार) का पुनर्गठन करके 15

अगस्त, 1969 को भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) की स्थापना की गई। इसरो (Indian Space Research Organisation) विश्व के छः प्रमुख अंतरिक्ष संगठनों में से एक है। इसका मुख्यालय बेंगलुरु (कर्नाटक) में है। यह भारत के अंतरिक्ष विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में है। आदर्श वाक्य '**मानव जाति की सेवा में।**' अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी भारत सरकार ने जून 1972 में अंतरिक्ष आयोग का गठन तथा अंतरिक्ष विभाग की स्थापना की। परमाणु ऊर्जा विभाग के अन्तर्गत आने वाले स्वायत निकाय इसरो (ISRO) को सितम्बर 1972 में अंतरिक्ष विभाग के तहत लाया गया।

अंतरिक्ष आयोगः अंतरिक्ष विभाग (कार्यकारी निकाय)

- इसरो (ISRO)
- भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला, अहमदाबाद (PRL)
- भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह अंतरिक्ष खण्ड योजना (INSAT-SSP)
- राष्ट्रीय प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन प्रणाली (NNRMS)
- राष्ट्रीय दूरसंवेदन एजेंसी-हैदराबाद (NRSA)
- राष्ट्रीय मध्यमण्डल, समताप मण्डल और क्षोभमण्डल रीडर सुविधा (NSRF)

अन्तरिक्ष केन्द्र और इकाइयाँ

1. **विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र (VSSC) तिरूअनंतपुरम-** केरल तिरूअनंतपुरम के समीप थुम्बा में स्थित यह प्रक्षेपण यान (SLV, ASLV, PSLV, GSLV) विकास का इसरो का सबसे प्रमुख केन्द्र है।
2. **सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र (SDSC) या शार (SHAR) केन्द्र (श्री हरिकोटा हाई अल्टीट्यूट रेंज) श्री हरिकोटा आन्ध्रप्रदेश-** भारत का प्रमुख रॉकेट एवं उपग्रह प्रमोचक केन्द्र है। यहाँ भारतीय प्रक्षेपण यान के ठोस ईंधन रॉकेट के विभिन्न चरणों का सतह पर परीक्षण तथा प्रणोदक का प्रसंस्करण किया जाता है। इस केन्द्र में अत्याधुनिक दूसरे लांचिंग पैड का 5 मई 2005 को राष्ट्रपति ने उद्घाटन किया।
3. **इसरो उपग्रह केन्द्र (ISAC)- बेंगलुरु-** उपग्रह परियोजनाओं का डिजायन, निर्माण, परीक्षण एवं प्रबंधन के कार्य सम्पन्न किए जाते हैं।
4. **अंतरिक्ष अनुप्रयोग केन्द्र (SAC)- अहमदाबाद-**उपग्रहों की पेलोड प्रणाली की कल्पना तथा विकास एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के व्यावहारिक अनुप्रयोग प्रदर्शित करने के उद्देश्य से उस केन्द्र की स्थापना की गई।
5. **मुख्य नियंत्रण सुविधा केन्द्र (MCF)- हासन (कर्नाटक) तथा भोपाल (मध्यप्रदेश)-**इसरो के सभी भू-स्थिर उपग्रहों के सभी गतिविधियों तथा उपग्रह को उचित कक्षा में स्थापित करना, केन्द्र से उपग्रह का नियमित सम्पर्क स्थापित करना तथा कक्षा में उपग्रह की सभी क्रियाओं पर निगरानी एवं नियंत्रण का दायित्व कर्नाटक के हासन स्थित मुख्य नियंत्रण सुविधा केन्द्र के पास है। इसरो का मुख्य नियंत्रण सुविधा केन्द्र मध्यप्रदेश के भोपाल में 11 अप्रैल 2005 को स्थापित किया गया।

6. **भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (PRL) अहमदाबाद–** इसरो का सारा तकनीकी प्रबंधन (PRL) करती है। अंतरिक्ष विभाग के अंतर्गत कार्यरत यह संस्थान अंतरिक्ष और सम्बद्ध विज्ञानों में अनुसंधान एवं विकास करने वाला प्रमुख राष्ट्रीय केन्द्र है। उदयपुर सौर वेद्यशाला के प्रबन्ध कार्य का दायित्व भी इसी केन्द्र के अन्तर्गत है।
7. **राष्ट्रीय सुदूर संवेदन एजेन्सी (NRSA) हैदराबाद–** इसका प्रमुख केन्द्र बालानगर में है, जबकि उपग्रह भू-केन्द्र शादनगर परिसर में स्थित है। उपग्रहों से प्राप्त आँकड़ों का उपयोग करके पृथ्वी के संसाधनों की पहचान, वर्गीकरण व निगरानी करने की जिम्मेदारी इस एजेंसी की है। इसके अतिरिक्त देहरादून स्थित भारतीय दूरसंवेदी संस्थान (NRSA) भी इसका ही अंग है। जो दूरसंवेदी तकनीकों और हवाई चित्र व्याख्या तकनीकों का प्रमुख प्रशिक्षण केन्द्र है। इसकी प्रादेशिक इकाइयाँ यथा- पश्चिमी (जोधपुर), पूर्वी (खड़गपुर), उत्तरी (देहरादून), दक्षिणी (बैंगलुरू), मध्य (नागपुर)
8. **राष्ट्रीय मध्यमण्डल, समतापमण्डल, भारी क्षोभमण्डल रडार सुविधा–** तिरुपति के समीप गंडकी में स्थित इस केन्द्र द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों को अनुसंधान और विकास के लिए महत्त्वपूर्ण सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।
9. **भारतीय अंतरिक्ष तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (IIST)–तिरुअनंतपुरम–** यह एशिया का प्रथम अंतरिक्ष विश्वविद्यालय है जिसकी स्थापना 2007 में की गई।
10. **इसरो जड़त्व प्रणाली इकाई–तिरुअनंतपुरम–** इस इकाई का प्रमुख कार्य प्रक्षेपण यानों और उपग्रहों के लिए जड़त्व प्रणाली का विकास करना है।
11. **इसरो दूरमिति, अनुवर्तन एवं निर्देश संचार नेटवर्क** (ISRO Telemetry, Tracking & Command Communication Network-

ISTTAC)- इस नेटवर्क का मुख्यालय तथा उपग्रह नियंत्रण केन्द्र बेंगलुरु में स्थित है।

भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के उद्देश्य– भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य एक आत्मनिर्भर तरीके से क्रियाशील अंतरिक्ष सेवाओं की स्थापना के माध्यम से देश के सामाजिक-आर्थिक लाभ के अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और अंतरिक्ष विज्ञान के विकास और प्रयोग को उन्नत करना है।

जबकि मूल उद्देश्य दूर संचार, दूरदर्शन, प्रसारण, मौसम अध्ययन संसाधन सर्वेक्षण तथा प्रबंधन के क्षेत्र में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी विकसित करना। इसके क्रियान्वयन के लिए उपग्रहों, प्रक्षेपण यानों तथा संबद्ध भू-प्रणालियों का विकास करना। भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम का उद्देश्य मुख्यतः विकासात्मक है। वर्तमान में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

(1) उपग्रह कार्यक्रम– भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली (INSAT SYSTEM), भारतीय दूरसंवेदी उपग्रह प्रणाली (I.R.S. Satellite SYSTEM)।

(2) प्रक्षेपण यान कार्यक्रम– PSLV Polar Satellite launch Vehicle, GSLV geostationary or Geosynchronous Satellite launch Vehicle

भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह (इनसैट) प्रणाली– स्वदेशी तकनीक से निर्मित प्रथम भारतीय उपग्रह 'आर्यभट्ट' को 19 अप्रैल, 1975 को वैकानूर अंतरिक्ष केन्द्र से इँटर कास्मोस प्रक्षेपण यान (रॉकेट) द्वारा अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक स्थापित किया गया। पहले भारतीय उपग्रह आर्यभट्ट को अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक स्थापित करने में पूर्व सोवियत संघ की निःशुल्क मदद ली गई। इसके बाद भास्कर तथा रोहिणी शृंखला के उपग्रह स्थापित किए गए।

भारत का प्रथम प्रायोगिक संचार उपग्रह 'एप्पल' को 19 मार्च, 1981 को दक्षिण अमेरिका के उत्तर पूर्वी तट पर स्थित फ्रांस के क्षेत्र फ्रेंच गुयाना के कोरू अंतरिक्ष प्रक्षेपण केन्द्र से यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के एशियन-4 प्रक्षेपण यान द्वारा भू-स्थिर कक्षा में स्थापित किया गया। एप्पल से प्राप्त तकनीकी अनुभव ने इनसैट शृंखला के निर्माण एवं विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1977 में स्टेप (सैटेलाइट टेलीकम्यूनिकेशन एक्सपेरिमेंट प्रोजेक्ट) नाम दो वर्षीय कार्यक्रम ने दूर संचार के क्षेत्र में अंतरिक्ष अनुसंधान को अनिवार्य बना दिया। वर्ष 1983 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली अर्थात इनसैट प्रणाली एक बहुउद्देशीय कार्यरत उपग्रह प्रणाली है।

इनसैट अंतरिक्ष विभाग, दूरसंचार विभाग, भारतीय मौसम विभाग, दूरदर्शन और आकाशवाणी का संयुक्त उद्यम है जिसके नियंत्रण व संचालन का उत्तरदायित्व अंतरिक्ष विभाग का है। इनसैट एशिया प्रशांत क्षेत्र में सबसे बड़ी घरेलू संचार उपग्रह प्रणालियों में से एक है। इनसैट प्रणाली के पहली पीढ़ी के चारों उपग्रह अमेरिकी कम्पनी 'फोर्ड एरोस्पेस' द्वारा बनवाए गए। इसके बाद के सभी कार्यरत उपग्रह भारत में निर्मित हैं।

भारतीय दूरसंवेदी उपग्रह प्रणाली (Indian Remote Sensing Satellite System)

IRS (Satellite System)– भारतीय दूरसंवेदी उपग्रह प्रणाली के अंतर्गत पृथ्वी के गर्भ में छिपे संसाधनों को बिना स्पर्श किए प्रकीर्णन विधि द्वारा विश्वसनीय एवं प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। यह राष्ट्रीय प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन प्रणाली की सहायता करती है तथा भारतीय दूरसंवेदी प्रणाली इसरो द्वारा संचालित है जिसमें दृश्य, अवरक्त बैण्ड व माइक्रोबेव बैण्ड वाले कैमरों से चित्र लिए जाते हैं। भारतीय दूरसंवेदी उपग्रह प्रणाली विश्व की सबसे बड़ी संवेदन उपग्रह प्रणालियों में से एक है जो 1 मीटर से 500 मीटर तक वस्तुओं को साफ-साफ चित्रण करती है।

इसका महत्त्व व उपयोग–महाद्वीपीय व महासागरीय संसाधन प्रबंधन में उपयोग, कृषि प्रधान देश में फसल, जल, मृदा प्रबंधन, प्राकृतिक आपदा प्रबंधन, सामरिक महत्त्व जैसे –टोही उपग्रहों द्वारा जासूसी, मानचित्र निर्माण व सर्वेक्षण में, जलवायु परिवर्तन के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

प्रक्षेपण यान– वह यान जो कृत्रिम उपग्रह या प्रोव को उनके स्थान (कक्षा) पर पहुँचाते हैं प्रक्षेपण यान कहलाते हैं। यह दो प्रकार के होते हैं–

(1) बहुचरणीय प्रक्षेपण यान– ऐसे यान कई चरण वाले होते हैं जिसमें सामान्यतः तीन से पाँच चरण होते हैं। यह जैसे–जैसे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता है। वैसे–वैसे यह चरण, यान से अलग होकर नष्ट हो जाते हैं। इनका पुनरुपयोग नहीं किया जा सकता है।

(2) पुनरुपयोगी या एक चरणीय प्रक्षेपण यान– यह यान धरती से अंतरिक्ष को जाने और कार्य समाप्त करने के पश्चात पुनः धरती पर आने से सक्षम होते हैं। इनका उपयोग कई बार किया जा सकता है। भारत में प्रक्षेपण या रॉकेट विकसित करने का कार्य 1970 से प्रारम्भ कर दिया गया। इसके अन्तर्गत निम्न प्रकार से यानों का विकास किया गया।

- **एसएलवी–3 (Satellite Launch Vehicle-3)–** 18 जुलाई 1980 को (SLV-3) का सफल प्रायोगिक परीक्षण किया गया। (SLV-3) एक चार चरणों वाला साधारण क्षमता का प्रायोगिक उपग्रह प्रक्षेपण यान था जो 40 किग्रा भार के उपग्रहों को पृथ्वी की निचली कक्षा में स्थापित कर सकता था। इस उपग्रह प्रक्षेपण यान द्वारा प्रथम प्रायोगिक परीक्षण 10 अगस्त 1979 को श्री हरिकोटा से 'रोहिणी' उपग्रह के प्रक्षेपण के लिए किया गया था लेकिन प्रायोगिक परीक्षण उड़ान असफल सिद्ध हुई थी।
- **एसएलवी (Augmented Satellite Launch Vehicle-ASLV)–** (ASLV) (संवर्धित उपग्रह प्रक्षेपण यान) एसएलवी–3 का ही संबंधित रूप है। इसे 100 से 150 किग्रा भार के उपग्रहों को पृथ्वी की निचली

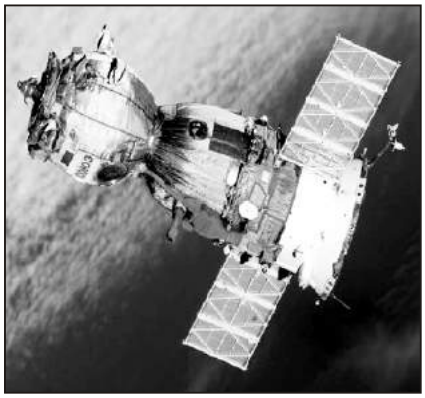

कक्षा में स्थापित करने के उद्देश्य से विकसित किया गया है।

- **पीएसएलवी (Polar Satellite Launch Vehicle) PSLV–** ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (PSLV) इसरो का प्रथम क्रियात्मक यान है जिसका प्रयोग कक्षीय दूरसंवेदी उपग्रह के प्रक्षेपण में किया जाता है। (PSLV) सूर्य–तुल्यकालिक और भू–तुल्यकालिक हस्तांतरण कक्षा में (कम भार के) उपग्रहों को प्रक्षेपित करने में सक्षम है। PSLV एक चार चरणों वाला एक ध्रुवीय प्रक्षेपण यान है जिसके प्रथम व तृतीय चरण में ठोस प्रणोदकों तथा द्वितीय व चतुर्थ चरण में द्रव प्रणोदकों का उपयोग किया जाता है। PSLV दुनिया के सबसे किफायती प्रक्षेपण यानों में शामिल है।
- **जीएसएलवी (Geostationary or Geo Synchronous Satellite Launch Vehicle) GSLV–** एक शक्तिशाली तीन चरणों वाला भू–तुल्यकालिक या भू–स्थिर उपग्रहण प्रक्षेपण यान है। GSLV में प्रथम चरण (GS-1) में ठोस प्रणोदक द्वितीय चरण (GS-2) में द्रव प्रणोदक तथा तृतीय चरण (GS-3) में क्रायोजेनिक इंजन का उपयोग किया जाता है।

क्रायोजेनिक इंजन–ग्रीक शब्द क्राओस से बना है जिसका तात्पर्य है हिमशीत (Ice-Cold) अर्थात निम्न ताप। शून्य 0° सेल्सियस से -150° सेल्सियस तापमान को क्रायोजेनिक तापमान कहते हैं। अति निम्न तापमान पर भरे गए प्रणोदकों (ईंधनों) का सहजता से उपयोग कर लेने वाले इंजनों को क्रायोजेनिक इंजन कहते हैं। क्रायोजेनिक इंजन में द्रव ऑक्सीजन व द्रव हाइड्रोजन का प्रयोग किया जाता है। जबकि सेमी क्रायोजेनिक इंजनों में द्रव ऑक्सीजन व द्रव कैरोसीन का इस्तेमाल होगा। यह अभी विकास के चरणों में है। यह पर्यावरण अनुकूल तकनीक होगी।

एन्ट्रिक्स– बेंगलुरु स्थित एंट्रिक्स कोऑपरेशन लिमिटेड अंतरिक्ष विभाग के अधीन इसरो की वाणिज्यिक (विपणन) एजेंसी है जो इसरो, अंतरिक्ष विभाग और अंतरिक्ष उद्योगों के संसाधनों पर पहुँच प्रदान करती है। एन्ट्रिक्स के माध्यम से भारतीय भू–केन्द्रों से दूरी नापने, उपग्रहों की स्थिति पर निगरानी और निर्देश भेजने की सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं। यह ट्रॉसपोण्डर्स, उपग्रहों की उप प्रणालियों व घटकों, स्पेस इमेजिंग, प्रक्षेपण सेवा ट्रेकिंग सुविधा इत्यादि का वैश्विक स्तर पर विपणन करती है।

व्योममित्र– 22 जनवरी, 2020 को बेंगलुरु में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) इंटरनेशनल एकेडमी ऑफ एस्ट्रोनाटिक्स (IAA) और एस्ट्रोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (ASI) के पहले सम्मेलन में इसरो द्वारा मानव युक्त गगनयान मिशन हेतु एक अर्द्ध मानवीय महिला रोबोट 'व्योम मित्र' को लाँच किया। इसरो के वर्तमान अध्यक्ष 'के सिवन' ने कहा कि गगन यान मिशन के लिए सभी प्रणालियों को 'मानव रेटिंग' में ढालने की प्रक्रिया गति पर है और उम्मीद है कि यह वर्ष 2021 के पूर्वार्द्ध में पूरी कर ली जाएगी। गगनयान मिशन का प्रक्षेपण इसरो के अत्याधुनिक और सबसे भारी रॉकेट GSLV मार्क–3 से किया जाएगा। मानव रेटिंग प्रक्षेपण यान उसे माना जाता है जिसकी विश्वसनीयता 0.99 है। अर्थात विश्वसनीयता के पैमाने पर गणितीय रूप से 100 में से 1 पर ही संदेह की गुंजाइश है। मिशन 'गगनयान' का मानव रहित अंतरिक्ष मिशन 2021 के अंत तक संभव है। रोबोट 'व्योममित्र' को अंतरिक्ष में भेजने के बाद ही मानव मिशन होगा।

प्रधानाध्यापक
राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय,
मालवीय नगर, सेक्टर–2, जयपुर
मो: 9468692943

बसंत पंचमी विशेष

अब दिन आए बसंती नीरे

❐ सुधा रानी तैलंग

अब दिन आए बसंती नीरे, ललित और रंग भीरे।
टेसू और कदम फूले हैं, कालिन्दी के तीरे।।

बुंदेली के लोकप्रिय कवि ईसुरी की फाग में बसंत ऋतु का आह्वान मन को इन्द्रधनुषी रंगों से सराबोर कर देता है। ऋतुराज बसन्त के मनभावन व रंगीले दिनों के आते ही टेसू व कदम के फूल खिल उठते हैं। आम के वृक्षों पर बौर आ जाते हैं। प्रकृति के मादक रूप के संग ऋतु बसंत की आहट मन को हर्षित, पुलकित कर रही है। शीतऋतु को विदाई देकर बसंत ने हौले से दस्तक दे दी है। सूर्य देव भी दक्षिणायण से उत्तरायण हो चले हैं।

चहुंओर पीले सरसों के फूलों से लदी फसलें लहलहाने लगी हैं। नव पल्लव किलोल कर रहे हैं। नवजात कलियाँ मुस्कराने लगी हैं। आम्र बौरने लगे हैं। कोयल अपने पंचम सुर बिखेर रही है। भ्रमर गीत सुना रहे हैं। मन्द-मन्द शीतल समीर के झोंके अन्तर्मन को झंकृत कर रहे हैं। प्रकृति दिल खोलकर बसंत का स्वागत कर रही। है। प्रकृति के साथ जड़ जंगम, जीवों में चारों उल्लास, ऊर्जा, चेतनता छा गई है। प्रकृति के मादक रूप को लेकर बसंत नव जीवन, नवचेतना, नव उत्कर्ष देने एक बार पुन: आ गया है।

बसंत को ऋतुराज माना गया है। बसंत के स्वागत के लिए हमारे पूर्वज भी बसंत उत्सव मनाते थे। बसंत पंचमी को विद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती के पूजन की परम्परा चली आ रही है। भगवान श्रीकृष्ण ने बसन्त को मनोरम व श्रेष्ठ ऋतु कहा है-

मासानां मार्ग शीर्षोअहमृतानां कुसुमाकर:।

कालिदास ने ऋतुसंहार में बसंत को सभी ऋतुओं में मनोहारी कहा है-

द्रुमा:सपुष्पा: सलिलं सपद्मम्,
स्त्रिया: सकामा: पवनं सुगन्धितम्।
सुख: प्रदोषा: हविसश्य रम्या:,
सर्व प्रियं चारूतरं वसन्तो।।

बसंत ऋतु के आते ही समूचा परिवेश ही रंगमय हो जाता है। माघ शुक्ल पंचमी से ही ग्रामीण अंचलों में फागें गाना शुरू हो जाती हैं। बड़े-बूढ़े भी बसंत के आगमन की खुशी में उत्साह, जोश से भरकर स्फूर्ति का अनुभव करने लगते हैं।

प्रकृति भी अंगड़ाई लेते इस मौसम में रंग और सुगन्ध से महक उठती है। ऐसे में मन के उद्‌गार भला कैसे प्रस्फुटित न हों।

बौराए आँगन में अंबुआ,
भौंरे खेले फगुआ।
टेसू की लाली पर मचला,
पाँवों में गिरता महुआ।

बसन्त ऋतु के आगमन के साथ ही प्रकृति सोलह शृंगार कर लेती है। प्रकृति के सौन्दर्य की एक झलक देखिए-

पुलकित पलाश हुए, बौराए आम।
कोपल के अधरों पर, वासन्ती नाम।

छायावाद व प्रकृतिवाद के कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के काव्य में प्रकृति के मानवीकरण का राग रंजित रूप से देखने को मिलता है। भावों का सुन्दर नव उन्मेष व मुक्त छन्दों में लय के तारों पर प्रकृति रूपी सुन्दरी का वर्णन देखते ही बनता है। ऋतुराज बसंत के आगमन की आह्लादित प्रस्तुति कितनी सहज जान पड़ती है।

सखी वंसत आया, भरा हर्ष वन के मन,
नवोत्कर्ष छाया।
मधुप वृन्द बन्दी, पिक स्वर शरमाया।

बसंत की प्राकृतिक, सुषमा, वैभव का नाता, मानव चेतना, अन्तर्मन से होता है। मानव प्रकृति के बीच आदान-प्रदान होता है। हिन्दी के सुपरिचित हस्ताक्षर नागार्जुन ने बसंत को अपने काव्य में शब्दों की परिधि में बाँधते हुए कहा है

ऋतु बसंत का सुप्रभात था।
वातावरण की मृदु किरणें थी।
अगल-बगल, स्वर्णाभ शिखर थे।
एक-दूसरे से, विरहित हो।

रीति कालीन कवि पद्‌माकर का कवि मन बसन्त ऋतु को देख कर भला कैसे मौन मूक रह सकता है-

कूलन में, केलिन में, कुजंन में, कछारन में।
बनन में बागन में बगर्‌यो बसन्त है।

बुन्देली व हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, कवि स्व. श्री अम्बिका प्रसाद 'दिव्य' के खण्डकाव्य अन्तर्जगत में मानव मन की सुन्दरतम भावनाओं, कल्पनाओं को प्रकृति के मनोरम शब्द चित्रों के माध्यम से बखूबी उकेरा है। जरा देखिए बसंत ऋतु का स्वागत, प्रकृति भी दिल खोलकर कर रही हैं-

प्रकति नटी बन प्यार पा कर,
तुम ऋतुराज बने साकार।
कहाँ, तुम्हारी जैसी सुषमे,
दिखती छटा बसंत में।
कहाँ समन्वित एक रूप में,
कलिका खिलती अन्त में।

निमाड़ी के एक बारहमासा गीत में बसंत ऋतु को लोक रंग में सहजता से बिखेरा है-

चढ़ी अटारी चांदणी, राधा जोवे बाट।
गिरधारी कब आवसे लग्यो महीनो माघ।
ये जी लगियो माघ, बसंत बघावणा,
ये जी वसंत पंचमी आज।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्रकृति के नवीन परिवर्तन का स्वागत करती हुई बसन्त ऋतु से होली तक मानव मन मौज मस्ती, रंग अबीर, ढोल मजीरे की थाप के संग पुलकित, चंचल हो उठता है। स्नेह, प्रेम के रंग में रंगे प्रेमी के लिए पूरा संसार ही रंगमय हो जाता है। गाँव की चौपालों में लोक कवि ईसुरी की फागे समूचे परिवेश को रंगमय कर देती हैं-

उड़त गुलाल, लाल भये अम्बर।

पतझड़ के बाद बसंत का आगमन प्रतीक है आशा, विश्वास, नूतन ऊर्जा, उमंग, ताजगी व उत्साह का। प्रकृति हमें प्रेरित कर रही है निराशा छोड़ो। आशा का दामन थामो। खुशियों का स्वागत करो, फूलों की सुगंध, नवपल्लव की सरसराहट, मन्द शीतल बयार, कोयल की कूक, पक्षी वृन्दों का कलरव, हमारे कानों में अमृत रस को घोल रहा है तो आइए हम सब बसंत का अभिनंदन, सुस्वागत करें।

सिमरन अपार्टमेन्ट त्रिलंगा,
भोपाल (म.प्र.)
मो: 9301468578

जयन्ती विशेष

साहस और शौर्य के प्रतीक शिवाजी

❒ इन्द्रजीत त्रिपाठी

भारत एक देश ही नहीं बल्कि एक राष्ट्र के तौर भी महसूस किया जाता रहा है। इसमें हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के साथ इसके रक्षण, संरक्षण एवं गौरवमयी बनाने में योगदान देने वाले साधु-संत, कवि, वीर, योद्धा एवं भामाशाहों की अनगिनत श्रृंखला रही है। जिन पर पूरे राष्ट्र को गौरव होता है। उनमें से एक छत्रपति शिवाजी महाराज भी है। जिनका नाम सुनकर ही शरीर में एक अलग ही तेजस व वीर भाव के साथ गौरवानुभूति होती है। शिवाजी ने अपने शासन काल में सम्पूर्ण भारत वर्ष को एक मानते हुए जीवन को माँ जीजा के मार्गदर्शन में संवारा और तैयार किया। बाल्यकाल से ही उसे एक करने के लिए प्रयास करते रहे और भारत को एक राष्ट्र के रूप में प्रकट किया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती महाराष्ट्र में वैसे तो 19 फरवरी को मनाई जाती है लेकिन कई संगठन शिवाजी का जन्मदिवस हिन्दू कैलेण्डर में आने वाली तिथि के अनुसार मनाते हैं। उनकी इस वीरता के कारण ही उन्हें एक आदर्श एवं महान राष्ट्रपुरुष के रूप में स्वीकारा जाता है।

परिचय– छत्रपति शिवाजी महाराज एक बहादुर, बुद्धिमानी, शौर्यवीर और दयालु शासक थे। उनका जन्म 19 फरवरी 1627 को मराठा परिवार में महाराष्ट्र के शिवनेरी में हुआ। शिवाजी के पिता शाहजी और माता जीजाबाई थीं। माता जीजाबाई धार्मिक स्वभाव वाली होते हुए भी गुण-स्वभाव और व्यवहार में वीरांगना नारी थीं। इसी कारण उन्होंने बालक शिवा का पालन-पोषण रामायण, महाभारत तथा अन्य भारतीय वीरात्माओं की उज्ज्वल कहानियाँ सुना-सुनाकर और शिक्षा देकर किया था। बचपन में शिवाजी अपनी आयु के बालक इकट्ठे कर उनका नेतृत्व करते हुए युद्ध करने और किले जीतने का खेल खेला करते थे। दादा कोणदेव के संरक्षण में उन्हें सभी तरह की सामयिक युद्ध आदि विधाओं में भी निपुण बनाया था। धर्म, संस्कृति और राजनीति की भी उचित शिक्षा दिलवाई थी। उस युग में परमसंत रामदास के संपर्क में आने से शिवाजी पूर्णतया राष्ट्रप्रेमी, कर्त्तव्यपरायण एवं कर्मठ योद्धा बन गए।

परिवार एवं गुरु– छत्रपति शिवाजी महाराज का विवाह सन् 14 मई, 1640 में सइबाई निबांलकर के साथ हुआ था। उनके पुत्र का नाम संभाजी था। संभाजी शिवाजी के ज्येष्ठ पुत्र और उत्तराधिकारी थे जिसने 1680 से 1689 ई. तक राज्य किया। संभाजी में अपने पिता की कर्मठता और दृढ़ संकल्प का अभाव था। संभाजी की पत्नी का नाम येसुबाई था। उनके पुत्र और उत्तराधिकारी राजाराम थे। शिवाजी के समर्थ गुरु रामदास का नाम भारत के साधु-संतों व विद्वत समाज में सुविख्यात है।

शिवाजी का पराक्रम– युवावस्था में आते ही उनका खेल वास्तविक कर्म बनकर शत्रुओं पर आक्रमण कर उनके किले आदि जीतने लगे। जैसे ही शिवाजी ने पुरंदर और तोरण जैसे किलों पर अपना अधिकार जमाया, वैसे ही उनके नाम और कर्म की सारे दक्षिण में धूम मच गई, यह खबर आग की तरह आगरा और दिल्ली तक जा पहुँची। अत्याचारी किस्म के यवन और उनके सहायक सभी शासक उनका नाम सुनकर डर के मारे बगलें झाँकने लगे। शिवाजी के बढ़ते प्रताप से आतंकित बीजापुर के शासक आदिलशाह जब शिवाजी को बंदी न बना सके तो उन्होंने शिवाजी के पिता शाहजी को गिरफ्तार किया। पता चलने पर शिवाजी आग बबूला हो गए। उन्होंने नीति और साहस का सहारा लेकर छापामारी कर जल्द ही अपने पिता को इस कैद से आजाद कराया। तब बीजापुर के शासक ने शिवाजी को जीवित अथवा मुर्दा पकड़ लाने का आदेश देकर अपने मक्कार सेनापति अफजल खां को भेजा। उसने भाईचारे व सुलह का झूठा नाटक रचकर शिवाजी को अपनी बाँहों के घेरे में लेकर मारना चाहा, पर समझदार शिवाजी के हाथ में छिपे बघनखे का शिकार होकर वह स्वयं मारा गया। इससे उसकी सेना अपने सेनापति को मरा पाकर वहाँ से दुम दबाकर भाग गई। छत्रपति शिवाजी महाराज एक भारतीय शासक थे जिन्होंने मराठा साम्राज्य खड़ा किया इसीलिए उन्हें एक अग्रगण्य वीर एवं अमर स्वतंत्रता सेनानी स्वीकार किया जाता है। वीर शिवाजी राष्ट्रीयता के जीवंत प्रतीक एवं परिचायक थे। इसी कारण निकट अतीत के राष्ट्रपुरुषों में महाराणा प्रताप के साथ-साथ इनकी भी गणना की जाती है। छत्रपति शिवाजी महाराज का 3 अप्रैल 1680 ई. में तीन सप्ताह की बीमारी के बाद रायगढ़ में स्वर्गवास हो गया।

उपसंहार– यूं तो शिवाजी पर मुस्लिम विरोधी होने का दोषारोपण किया जाता है, पर यह सत्य इसलिए नहीं क्योंकि उनकी सेना में तो अनेक मुस्लिम नायक एवं सेनानी थे तथा अनेक मुस्लिम सरदार और सूबेदारों जैसे लोग भी थे। वास्तव में शिवाजी का सारा संघर्ष उस कट्टरता और उद्दण्डता के विरुद्ध था, जिसे तात्कालिक शासकों और उनकी छत्रछाया में पलने वाले लोगों ने अपना रखा था। महान मराठा शासक छत्रपति शिवाजी महाराज अदम्य साहसी योद्धा और कुशल शासक थे। वह साहस और शौर्य की मिसाल थे। माता जीजाबाई और पिता शाहजी भोंसले द्वारा दिए गए संस्कारों के कारण ही शिवाजी महाराज महान बने। शिवाजी महाराज का पूरा नाम शिवाजी राजे भोंसले था। 1674 में रायगढ़ में उन्हें छत्रपति की उपाधि मिली। वह छत्रपति शिवाजी महाराज नाम से प्रसिद्ध हुए। वह धर्म निरपेक्ष शासक थे। वह सिर्फ अपने राज्य की रक्षा करने के लिए युद्ध करते थे। आज भी भारत में खेलों में मैदान में उतरने से पहले बच्चे जोश जगाने के लिए जोर से बोलते हैं-

'जय शिवा सरदार की-
जय राणा प्रताप की'

सहा. प्रशासनिक अधिकारी
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नवीन,
जोधपुर (राज.)
मो: 9530055222

विज्ञान दिवस विशेष

भारत के महान वैज्ञानिक

❒ बृजेश कुमार सिंह

भारत की पवित्र भूमि पर ऐसी महान विभूतियों का अवतरण हुआ। जिनके कार्यों ने भारतीय वैज्ञानिक सोच एवं अनुसंधान को विश्व पटल पर रखा तथा यह प्रमाणित किया कि यूरोपीय देशों के अथवा अन्य विदेशी वैज्ञानिकों की तुलना में हमारा ज्ञान कहीं अधिक प्रमाणिक एवं कसौटी पर खरा था ऐसे ही वैज्ञानिकों का कुछ वर्णन यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

कणाद:– भारतीय दर्शन के छः अंगों में से एक वैशेषिक दर्शन के प्रणेता महर्षि कणाद थे जिनका वास्तविक नाम उलूकमुनि था। ये द्वारका के पास प्रमास पत्रन में उत्पन्न हुए, उनके गुरु का नाम सोम शर्मा था। इनके वैशेषिक दर्शन का आधार परमाणुवाद था। किसी झरोखे से आती हुई किरणों में उड़ते हुए सूक्ष्म कण का साठवाँ भाग परमाणु कहलाता है। परमाणु का विवेचन करना ही वैशेषिक दर्शन है जो कल्पना जॉन डॉल्टन ने 1808 में की थी उसका वर्णन सैंकड़ों वर्ष पूर्व कणाद प्रस्तुत कर चुके थे महर्षि कणाद के अनुसार विश्व का निर्माण नौ इत्यों से हुआ (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, मन, आत्मा)।

कपिल :– महर्षि कपिल अग्नि के अवतार माने गए, प्रबल क्रोध के कारण ही इन्हें अग्नि का अवतार माना गया है। महाभारत के कथानुसार अयोध्या नरेश सगर के 60,000 पुत्रों को कपिल मुनि ने ही भस्म किया था जिनका उद्धार भगीरथ द्वारा गंगा को पृथ्वी पर लाने से हुआ।

महर्षि कपिल कर्दम ऋषि के पुत्र थे। ये सांख्य दर्शन के प्रणेता माने जाते हैं इन्हें भगवान विष्णु का अंश अवतार भी माना जाता है। सांख्य दर्शन के अनुसार सत् से ही सत् की उत्पत्ति होती है सत् कभी असत् नहीं बन सकता। आधुनिक विज्ञान का भी यह मत है कि शून्य से केवल शून्य बन सकता है अर्थात सांख्य दर्शन के अनुसार पदार्थ का कभी नाश नहीं होता, जो सिद्धांत वर्तमान में पदार्थ की अविनाशिता के सम्बन्ध में पढ़ाया जाता है उसे लगभग 4,000 वर्ष पूर्व महर्षि कपिल ने प्रतिपादित किया था। साथ ही महर्षि कपिल ने निर्दिष्ट ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति पर निष्क्रिय ऊर्जा की अवधारणा को स्पष्ट किया। जिसे आधुनिक वैज्ञानिक भी मान्यता दे चुके हैं।

आर्यभट्ट:– इनका जन्म कुसुमपुर (पाटिलपुत्र) में 476 ईसवी में हुआ। ये प्रसिद्ध गणितज्ञ एवं ज्योतिषी थे, इन्होंने अपने महान विख्यात ग्रंथ 'आर्यभट्टीय' की रचना केवल 23 वर्ष की आयु में की। इन्होंने राहु केतु की धारणा का खण्डन किया। इन्होंने सर्वप्रथम चन्द्रग्रहण एवं सूर्यग्रहण की व्याख्या की, इन्होंने ही पहली बार यह बताया कि पृथ्वी गोल है एवं सूर्य के चारो ओर घूमती है तथा यह बताया कि एक वर्ष में 365.2586805 दिन होते हैं। उन्होंने अंकगणित, ज्यामिती, बीजगणित तथा त्रिकोणमिति में अनेक आविष्कार किए जैसे– **पाई का सही मान ज्ञात किया, शून्य का प्रयोग प्रथम बार इन्हीं के द्वारा किया गया। घनमूल निकालने की पद्धति को खोजा इत्यादि।**

भारद्वाज :– महर्षि भारद्वाज के पिता देवगुरु बृहस्पति के पुत्र थे परन्तु शिशुकाल में ही इनके माता–पिता ने इनका परित्याग कर दिया था। इनका भरण–पोषण राजा भरत द्वारा किया गया। इसी कारण इनका नाम भारद्वाज पड़ा। इनकी गणना सप्तर्षियों में की जाती है। ऐसा माना जाता है कि ये 300 वर्ष तक जीवित रहे। ये 'यंत्र सर्वस्व' ग्रंथ के प्रणेता माने जाते हैं जिसमें वैमानिकी (वायुयान) का वर्णन है। ये आयुर्वेद के भी महान विद्वान थे।

ब्रह्मगुप्त :– इनका जन्म भीनमाल (वर्तमान जालौर जिला, राज.) में हुआ था, इन्होंने 'ब्रह्मस्फुट' सिद्धांत एवं 'करणखण्ड खण्डायका' नामक ग्रन्थों की रचना की। इन्होंने शून्य के उपयोग के नियम बताए। इनके अनुसार शून्य में किसी भी संख्या को जोड़ने या घटाने से उस संख्या में कोई अन्तर नहीं आता, शून्य का किसी संख्या से गुणनफल शून्य ही आता है, किसी संख्या को शून्य से विभाजित करने पर उसका परिणाम अनन्त होता है। इन्होंने ज्योतिष के प्रश्नों को हल करने के लिए बीजगणित का प्रयोग किया। उन्होंने सरल समीकरण जैसे– $ax+b=0$ एवं द्विघात समीकरण जैसे $x2+bx+c=0$ आदि को हल करने का तरीका बताया।

भास्कराचार्य : इनका जन्म कहाँ हुआ ये विवाद का विषय है परन्तु गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत को प्रतिपादित करने का श्रेय न्यूटन को जाता है लेकिन यह सिद्धांत न्यूटन से पूर्व ही भास्कराचार्य प्रस्तुत कर चुके थे। भास्कराचार्य द्वारा बीजगणित में खोजी गई 'चक्रवाल विधि' को वर्तमान में इनवर्स साइक्लिक कहा जाता है। इन्होंने बिना दूरबीन के ही ग्रहों, नक्षत्रों इत्यादि का अध्ययन किया। इन्होंने सिद्धांत शिरोमणि, सूर्य सिद्धांत 'करण कुतूहल' जैसे महान ग्रन्थों की रचना की। 'करण कुतूहल' आधुनिक पंचांग बनाने का आधार प्रस्तुत करता है।

चरक :– चरक महान आयुर्वेदाचार्य थे, वे कनिष्क के राजवैद्य थे, इन्होंने 'चरक संहिता' नामक ग्रंथ लिखा, इन्होंने हृदय को शरीर का नियंत्रक केन्द्र बताया, इन्होंने कहा कि पित्त, कफ व वात तीनों के असंतुलन से ही रोग उत्पन्न होता है। चरक संहिता में कुल आठ खण्ड हैं तथा प्रत्येक खण्ड में अलग–अलग विषयों का वर्णन है जैसे प्रथम खण्ड में औषधि विज्ञान, द्वितीय खण्ड में शारीरिक एवं मानसिक रोगों की चिकित्सा का वर्णन है। तृतीय खण्ड में शरीरवर्धक भोजन के बारे में वर्णन है, चतुर्थ खण्ड में शारीरिक संरचना का वर्णन है। आयुर्वेद में चरक के योगदान को देखकर इन्हें आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान के महान सम्राट की उपाधि से विभूषित किया गया।

सुश्रुत :– सुश्रुत शल्य चिकित्सा के महान ज्ञाता थे, प्रायः यह भ्रम होता है कि शल्य क्रिया का प्रारंभ यूरोप में हुआ परन्तु हमारे देश में प्राचीन काल से शल्य चिकित्सा अत्यंत विकसित अवस्था में थी तथा इसे सुश्रुत ने पूर्णता प्रदान की। इन्होंने 'सुश्रुत संहिता' नामक ग्रन्थ की रचना की। इस पुस्तक में छः स्थान तथा 189 अध्याय है ये अपने सैद्धांतिक ज्ञान की

अपेक्षा प्रयोगात्मक ज्ञान पर अधिक बल देते हैं। इन्होंने शल्य चिकित्सा से सम्बन्धित 121 उपकरणों का वर्णन किया तथा उपकरणों को रोगाणुमुक्त करने पर बल दिया। शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में किए गए योगदान के कारण इन्हें 'प्लास्टिक सर्जरी का जनक' कहा जाता है।

वराहमिहिरः इनका जन्म 499 में उज्जयिनी (वर्तमान उज्जैन) में हुआ। ये प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इन्होंने सम्राट विक्रमादित्य की कुण्डली देखकर कहा महाराज आपका एक पुत्र होगा जो बड़ा होने पर वराह (सूअर) द्वारा मारा डाला जाएगा, कालान्तर में ऐसा ही हुआ। इसलिए इनका नाम मिहिर से वराहमिहिर हो गया। इन्होंने पंच सिद्धांतिका नामक नक्षत्र विद्या का ग्रंथ लिखा तथा ज्योतिष विद्या से सम्बन्धित वृहज्जातक, वृहत्संहिता तथा लघु जातक नामक ग्रंथों की रचना की। इन्होंने नक्षत्रों की गति का मनुष्यों पर पड़ने वाला प्रभाव, वास्तुकला, मूर्ति निर्माण, शकुन, विवाह पद्धति तथा यात्रा के लिए शकुन प्रभाव (पुस्तक, योग यात्रा का विस्तार से वर्णन किया।)

नागार्जुनः– प्राचीनकाल में न केवल गणित एवं ज्योतिष के क्षेत्र में अनेक आविष्कार हुए बल्कि रसायन शास्त्र के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व कार्य हुए ऐसे ही प्रमुख रसायन शास्त्री थे नागार्जुन। इन्होंने रस रत्नाकर नामक ग्रन्थ की रचना की जिसमें धातुओं के गुण दोषों का वर्णन किया। इन्होंने आसवन, ऊर्ध्वपातन, द्रवण आदि प्रक्रियाओं का वर्णन किया, धातुओं से सोना बनाने की विधि बताई। वास्तव में ये भारत में धातुवाद के प्रवर्तक माने जाते हैं। इन्होंने ही पारे की भस्म तैयार करने की विधि बताई। पारे के प्रयोग से दीर्घकाल तक निरोगी रहा जा सकता है। अरबवासियों ने रसायन विज्ञान का ज्ञान इसी पुस्तक के माध्यम से प्राप्त किया।

ये तो कुछ ही वैज्ञानिकों का वर्णन है भारतीय इतिहास में ऐसे सैंकड़ों ज्ञानी महापुरुष अवतरित हुए जिनके ज्ञान का लोहा सबने माना, हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम उनके बारे में जानकारी संकलित करें, प्रकाशित करें तथा विस्तार से प्रचार-प्रसार करें ताकि समस्त विश्व भारतीय ज्ञान से भिज्ञ हो सके।

प्राध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बस्सी,
चित्तौड़गढ़ (राज.) **मो: 9414800527**

विज्ञान दिवस विशेष

विज्ञान वरदान

❐ हनुमान प्रसाद चौधरी

आज का युग विज्ञान का युग है। आज विज्ञान ने मानव जीवन को चहुँमुखी प्रभावित किया है। विज्ञान ने बाहर से हमारे सभी क्रियाकलापों को अपने प्रभाव में लिया है, तो भीतर से इसने हमारे मन-मस्तिष्क को अपने अनुकूल बना लिया है। इस प्रकार विज्ञान से हम पूर्णरूप से प्रभावित होकर इसके अनुकूल होने के लिए पूरी तरह बाध्य हो चुके हैं। विज्ञान ने नवीन आयामों, नवीन तकनीकी और नवीन आविष्कारों और उत्पादों से दुनिया को अचंभित कर काया पलट कर दी है।

विज्ञान की उन्नति अब शैशवावस्था को पार कर चुकी है अब वह अपनी यौवनावस्था में आ चुकी है। इस तथ्य की पुष्टि में संक्षिप्त रूप से इतना कहा जा सकता है कि अब इसने द्वितीय विधाता का नाम और स्थान प्राप्त कर लिया है। टेस्ट ट्यूब में इच्छानुसार संतान की प्राप्ति करने से लेकर आकाश-पाताल के गंभीर रहस्यों का ज्ञान प्राप्त करने तक विज्ञान ने अब मनुष्य को सृष्टि का दूसरा ब्रह्मा सिद्ध कर दिया है। आज विज्ञान का स्वरूप और उसके कार्य अनंत और अद्वितीय हैं। इससे इसने सम्पूर्ण चराचर जगत को प्रभावित और चमत्कृत कर दिया है।

आज विज्ञान 'यत्र-तत्र-सर्वत्र' विद्यमान है। इसने एक साथ ही थल, वायु और जल पर समान रूप से अधिकार प्राप्त कर लिए है।

अपनी सार्वभौमिकता और सर्वव्यापकता को प्रभावशाली बनाने के लिए विज्ञान ने प्रकृति के सभी स्वरूपों को प्रभावित किया है। आज विज्ञान का ही प्रभाव है कि आकाश और पाताल के गूढ़ रहस्य परत दर परत खुलते जा रहे हैं। प्रकृति पर अपनी विजय पताका फहराने के लिए विज्ञान ने अपना वजूद सिद्ध कर दिया है। इसने जल पर स्वत्वाधिकार प्राप्त कर लिया है। इसके लिए विज्ञान ने विभिन्न जलयान से लेकर दूरबीन जैसी चीजों का आविष्कार करके जल के विषय में अपने ज्ञान की अपार वृद्धि कर ली है। इसने विभिन्न वायुयान सहित कई प्रकार की संचार अनुसंधान सहित कई सुविधाओं को अर्जित करके अपने कौशल का परिचय दिया। बिजली के आविष्कार ने विज्ञान को सर्वाधिक गति और उसकी अन्य क्षमताओं का आकर्षक और रोम हर्षक परिचय दिया है। जिसके बिना हमारा कोई कार्य पूरी तरह से न संपादित हो सकता है और न उसके अगले कदम की परिकल्पना ही की जा सकती है। यही कारण है आज विज्ञान द्वारा प्रयोग में ली जा रही सम्पूर्ण तकनीकियों का सर्वाधिक आधार बिजली ही है।

मनोरंजन के क्षेत्र में विज्ञान सचमुच में वरदान सिद्ध हुआ है। उसने हमारे लिए अपेक्षित मनोरंजन के साधनों को उपलब्ध कराया है। इस दृष्टि से दूरदर्शन की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। इसके विभिन्न चैनलों से हम मनचाहे कार्यक्रमों को देखकर अपना मनोरंजन कर सकते हैं। चलचित्र, वीडियो गेम, फोटो कैमरा, टेपरिकॉर्डर, वी.सी.आर., वीडियो कैसेट आदि विज्ञान प्रदत्त मनोरंजन के श्रेष्ठ साधन हैं।

विज्ञान ने चिकित्सा के क्षेत्र में अद्‌भुत प्रगति की है। विभिन्न प्रकार की शल्य चिकित्सा करके हमारे जीवन को बड़ा ही सुखमय बनाने के अवसर प्रदान किए हैं। एक्स-रे, सी.टी.स्केन, एम.आर.आई. द्वारा शरीर के भीतर सूक्ष्माति-सूक्ष्म रोगों की जानकारी बड़ी सहजता और शीघ्रता से हो रही है। विज्ञान ने ब्रेन ट्यूमर, कैंसर, क्षय रोग, टिटनेस आदि प्राण घातक असाध्य रोगों को भी साध्य बनाकर हमारे जीवन को पूर्णतः स्वस्थ रहने में योगदान प्रदान किया है।

यातायात के क्षेत्र में अद्‌भुत प्रयोग करके कुछ ही समय में हजारों किलोमीटर की दूरी तय करने में रेलगाड़ी, हवाई जहाज, हेलीकॉप्टर आदि विज्ञान की विलक्षण देन है।

विज्ञान सचमुच में हमारे जीवन के लिए एक अपूर्व और अद्‌भुत वरदान सिद्ध हो रहा है। यह आवश्यक है कि हम इसके कल्याणकारी पक्ष को ही जीवन में उतारें। हम विज्ञान के आविष्कारों और उत्पादों का जनहित में प्रयोग करें।

वरिष्ठ अध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय घटियाली,
फागी, जयपुर (राज.)
मो: 9983288665

परीक्षा विशेष

शीघ्रता से संख्याओं का वर्ग ज्ञात करना

❒ भूपेन्द्र जैन

गणित का शिक्षक होने के नाते मेरे मन में कई बार यह विचार आया कि जिन विधाओं को मैं अपने विद्यार्थी जीवन में न सीख सका। जिन्हें मैंने शिक्षक बनने के काफी समय पश्चात सीखा, इन्हें मैं अपने शिक्षक साथियों व विद्यार्थियों के साथ साझा करूँ। जिससे वर्तमान प्रतिस्पर्द्धा के युग में मेरे विद्यार्थी सीख सकें तथा आवश्यकतानुसार अपनी गणना में शुद्धता के साथ-साथ शीघ्रता भी ला सकें।

मेरा ऐसा मानना है कि औपचारिक रूप से माध्यमिक कक्षा स्तर गणितीय गणनाओं (संक्रियाओं) को सम्पादित करने की Understanding (समझ) अच्छी होनी चाहिए, जिससे अधिगम स्थायी बने व अधिगम की उत्पत्ति का भी ज्ञान हो, वर्तमान प्रतिस्पर्द्धा के युग में गणित जैसे विषय में भी Knowledge (ज्ञान) के साथ-साथ Understanding (समझ) का होना आवश्यक है। क्योंकि किसी भी गणना (संक्रिया) का भी होना आवश्यक है। मेरा ऐसा मानना है कि शीघ्रता का सीधा-सीधा सम्बन्ध स्मृति से है। लेकिन कुछ गणितीय विधाएँ ऐसी भी हैं जिनका प्रयोग करके सम्बन्धित समस्या का हल शीघ्रता से निकाला जा सकता है।

मैं यहाँ संख्याओं के पूर्ण वर्ग के सम्बन्ध में आपसे चर्चा करना चाहता हूँ। अक्सर, अंकगणित, बीजगणित व ज्यामिति में वर्ग संख्याओं की आवश्यकता पड़ती रहती है। छात्र व अध्यापक प्रायः 1 से 25 तक की संख्याओं के वर्ग संख्याओं को तो याद कर लेते हैं, लेकिन इससे बड़ी संख्याओं को वर्ग निकालने के लिए गुणा की संक्रिया करते हैं। जिससे समय खर्च होता है जिससे गणना में शीघ्रता का पहलू गौण हो जाता है।

मैं अपने शिक्षक साथियों व विद्यार्थियों को यह विश्वास दिलाता हूँ कि यदि कोई विद्यार्थी 1 से 25 तक की संख्याओं के वर्ग याद कर लेता है तो आप उसे एक कालांश (40 मिनट) में 1 से 125 तक की संख्याओं का वर्ग मौखिक शीघ्रता से निकालना सिखा सकते हैं। छात्र अपनी आवश्यकतानुसार इच्छित संख्या का वर्ग निकाल कर अपनी गणना (संक्रिया) में काम ले सकता है व तत्काल गणना सम्पादित कर सकता है।

वर्ग निकालने की विधिः सर्वप्रथम 1 से 25 तक की संख्याओं का वर्ग याद करवाया जाए।

संख्या	वर्ग	संख्या	वर्ग	संख्या	वर्ग
1	1	2	4	3	9
4	16	5	25	6	36
7	49	8	64	9	81
10	100	11	121	12	144
13	169	14	196	15	225
16	256	17	289	18	324
19	361	20	400	21	421
22	484	23	529	24	576
25	625				

(अ) 26 से 50- सर्वप्रथम हम यह देखते है कि संख्या 50 से कितनी कम हैं, 50 से जितना कम है उतना ही 25 में से घटा कर शेष संख्या को सैंकड़ा बना देते हैं। इसके पश्चात जितनी संख्या 50 से कम थी उसका वर्ग बनाएँ गए सैकड़ा में जोड़ देते हैं।

उदाहरणः- यदि संख्या 25 व 50 के मध्य स्थित संख्या 42, का वर्ग ज्ञात करना है। जो कि संख्या 50-42 = 8, 50 से कम है इसे 25 में से घटाते हैं। 25-8 = 17, अब 17 को 1700 (सैकड़ा) बनाते हैं इसमें घटाई गई संख्या 8 का वर्ग 64 जोड़ देते हैं। अर्थात 1700+64=1764 यह संख्या 42 का वर्ग है। इस प्रकार से 26 से 50 तक की संख्या का वर्ग मौखिक व शीघ्र निकाला जा सकता है।

(ब) 51 से 75- सर्वप्रथम हम यह देखते हैं कि संख्या 50 से कितनी ज्यादा है, 50 से जितनी ज्यादा है उतना ही 25 में जोड़ कर प्राप्त संख्या को सैकड़ा बना देते हैं। उसके पश्चात जितनी संख्या 50 से ज्यादा थी उसका वर्ग बनाए गए सैकड़ा में जोड़ देते हैं।

उदाहरण- यदि संख्या 51 व 75 के मध्य स्थित संख्या 69, का वर्ग ज्ञात करना है। जो कि संख्या 69-50=19, 50 से ज्यादा है इसे 25 में जोड़ते हैं। 25+19=44, अब 44 को 4400 (सैकड़ा) बनाते हैं इसमें जोड़ी गई संख्या 19 का वर्ग 361 जोड़ देते हैं। अर्थात 4400+361=4761, यह संख्या 69 का वर्ग है। इस प्रकार से 51 से 75 तक की संख्या का वर्ग मौखिक व शीघ्र निकाला जा सकता है।

(स) 76 से100 सर्वप्रथम हम यह देखते है कि संख्या 100 से कितनी कम है 100 से जितना कम है उतना ही संख्या में से घटा कर सैकड़ा बना देते हैं। उसके पश्चात जितनी संख्या 100 से कम थी उसका वर्ग बनाए गए सैकड़ा में जोड़ देते हैं।

उदाहरण- यदि संख्या 76 व 100 के मध्य स्थित संख्या 93 का वर्ग ज्ञात करना है। जो कि संख्या 100-93=7, 100 से कम है इसे 93 में से घटाते है। 93-7=86, अब 86 को 8600 (सैकड़ा) बनाते हैं उसमें घटाई गई संख्या 7 का वर्ग 49 जोड़ देते हैं। अर्थात 8600+49=8649, यह संख्या 93 का वर्ग है। इस प्रकार से 76 से 100 तक की संख्या का वर्ग मौखिक व शीघ्र निकाला जा सकता है।

(द) 101 से 125- सर्वप्रथम हम यह देखते हैं कि संख्या 100 से कितनी ज्यादा है, 100 से जितना ज्यादा है उतना ही संख्या में जोड़कर सैकड़ा बना देते हैं। उसके पश्चात जितनी संख्या 100 से ज्यादा थी उसका वर्ग बनाए गए सैंकड़ा में जोड़ देते हैं।

उदाहरण-यदि संख्या 100 व 125 के मध्य स्थित संख्या 112 का वर्ग ज्ञात करना है। जो कि संख्या 112-100=12, 100 से ज्यादा है इसे 112 में जोड़ देते हैं। 112+12=124, अब 124 को 12400 (सैकड़ा) बनाते है इसमें जोड़ी गई संख्या 12 का वर्ग 144 जोड़ देते हैं। अर्थात 12400+144=12544, यह संख्या 112 का वर्ग है। इस प्रकार से 101 से 125 तक की संख्या का वर्ग मौखिक व शीघ्र निकाला जा सकता है।

वरिष्ठ अध्यापक (गणित)
माध्यमिक अनुभाग, निदेशालय, माध्यमिक शिक्षा
राज. बीकानेर **मो:9413107537**

विज्ञान दिवस विशेष

धर्म और विज्ञान

❐ सुभाष चन्द्र कस्वाँ

मानवीय चिंतन में धर्म एवं विज्ञान का स्रोत एक ही है। दोनों का आधार मानव का सैद्धांतिक दृष्टिकोण है तथा दोनों का लक्ष्य सत्य की प्राप्ति है। धर्म का शाश्वत उद्घोष **'सत्यमेव जयते'** की संकल्पना पर ही विज्ञान उस सत्य को अनवरत खोजने में लगा हुआ जिसकी शुरूआत धर्म विज्ञान ने विज्ञान के आगमन से पहले ही कर दी थी। दोनों की शाखाएँ आज इस मत से सहमत हैं कि खून-खराबा, संघर्ष तथा विस्तारवाद अनावश्यक है तथा शांति, सहयोग तथा भाईचारा आवश्यक है। विज्ञान से हमें आगे बढ़ने की शक्ति मिलती है जबकि धर्म से आत्मज्ञान के सही उपयोग करने की दिशा मिलती है। इसलिए आज के वैज्ञानिक एवं धर्माचार्य, धर्म व विज्ञान के संगम का विज्ञान खोजने में लगे हुए हैं। जीवन अनुभव दोनों को ही परिणामों पर सोचने का संदेश देते हैं। वजह साफ है जिस शताब्दी में आइंस्टीन जैसे वैज्ञानिक हुए, उसी में हिटलर, पोलपोट जैसे मानवता के दुश्मन भी पैदा हुए। सामूहिक नरसंहार का हिरोशिमा व नागासाकी में इतना बड़ा खेल हुआ। दरअसल उस वक्त विज्ञान और धर्म की राजनीति के मध्य समन्वय का नहीं होना था। यदि समन्वय हो जाता तो इस बड़े तांडव को रोका जा सकता था। हमारी भूलों का इतिहास फिर से न दोहराया जाए इसके लिए धर्म व विज्ञान में उन तत्वों को खोजना होगा जो मानव सभ्यता के साथ-साथ विज्ञान एवं धर्म का आपसी तालमेल रखते हुए विकास के उस क्रमिक पथ की ओर बढ़े जिसमें सत्य की अभिलाषा के लिए विज्ञान धर्म की जड़ों को उर्वरक जमीन उपलब्ध करवाए व धर्म विज्ञान की जड़ों को विस्तारित होने में शुद्ध जल अभिसिंचन की भूमिका को निभाए। कार्ल पोपर ने धर्म व विज्ञान के आपसी सहयोग के बारे में सही ही कहा है, 'विज्ञान की शुरूआत पौराणिक कथाओं तथा उनकी समालोचनाओं के साथ होनी चाहिए।'

धर्म एक स्वतंत्र अनुभूति है। धर्म का संबंध व्यक्ति के आंतरिक जीवन से है पर विज्ञान इसके विपरीत व्यक्ति की बाहरी दुनिया से जुड़ा हुआ है। विज्ञान का संबंध मनुष्य के बाह्य अनुभव से है। मनुष्य के आंतरिक अनुभव की उपेक्षा विज्ञान करता है। इसके अतिरिक्त विज्ञान का संबंध तथ्यों से है। धर्म का संबंध व्यक्ति के स्वभाव में जीने की कला से है। धर्म उपदेश का विषय नहीं धारण करने योग्य विचारधाराओं से है। विज्ञान का संबंध नतीजों से है। कोई नतीजा ही वैज्ञानिक अवधारणा की पृष्ठभूमि तैयार करता है। भौतिक शास्त्र का संबंध भूत से है। मनोविज्ञान का संबंध मन से है, परन्तु धर्म का संबंध मूल्यों से होता है। आध्यात्मिक मूल्यों को प्राप्त करना धर्म का मुख्य उद्देश्य होता है। मूल्यों की दुनिया जिसे धर्म अधिक प्रधानता देता है, वह विज्ञान के लिए अनजान प्रतीत होता है। व्यक्तिगत मूल्यों का संसार जो धर्म का आधार है विज्ञान के लिए अज्ञात है। जहाँ तक पद्धति एवं विधि का संबंध है विज्ञान और धर्म में समानता का अभाव है। विज्ञान विशेष उदाहरणों के निरीक्षण और प्रयोग के द्वारा सामान्य नियम की स्थापना करता है। वहीं इसके विपरीत धर्म में ईश्वर जगत संबंधी सामान्य नियम अथवा मान्यताओं से विशेष बात की पुष्टि की जाती है। इसके भिन्न विज्ञान की कई पुष्टियाँ अस्थाई एवं अशाश्वत होती हैं। आज जो बात विज्ञान में मान्य है, भविष्य में उसके अलग की बात भी सामने आ सकती है। आज से पचास वर्ष पूर्व विज्ञान जगत ने कैंसर व अन्य जानलेवा बीमारियों के जो लक्षण तय किए थे वे आज मनुष्य की बदलती जीवनशैली की वजह से बदल गए। ऐसे हालात में यदि विज्ञान की बातों को चिरन्तन मान लिया जाए तो विज्ञान की प्रगति रुक जाएगी। इसके विपरीत धार्मिक मत स्थायी एवं शाश्वत सिद्धांतों का निरुपण करते हैं। हमारी नैतिक मान्यता है कि **'ईमानदारी अच्छी नीति है।'** यह मान्यता एक मत बन अपनी सार्वकालिक सुन्दरता को कभी कुरूप नहीं होने देने से बचाए रखेगी। यदि धार्मिक मतों में कभी परिवर्तन भी होता है तब वह आकार के क्षेत्र में ही होता है मत प्रभावित नहीं होता है।

धर्म के बारे में कहा जाता है कि धार्मिक मनोवृत्ति व्यक्तिगत होती है। प्रत्येक व्यक्ति का धर्म के प्रति अपना दृष्टिकोण होता है। धर्म में व्यक्ति वास्तविकता का ज्ञान ही नहीं अपनाना चाहता अपितु वास्तविकता का मूल्यांकन भी चाहता है। धर्म की इस सरहद पर विज्ञान हरकत में आ जाता है। वैज्ञानिक प्रवृत्ति वस्तुपरक होती है। वैज्ञानिक परम्परा में भावना एवं संवेग के लिए कोई स्थान नहीं होता है। विज्ञान कार्य-कारण आधारित एक व्यवस्थित विषय है। विज्ञान के कार्य-कारण सिद्धांत द्वारा वस्तुओं के बीच स्थिरता कायम करना है। विज्ञान के अनुसार प्रत्येक दृश्य वस्तुएँ एक दूसरे से संबंधित हैं जिसके फलस्वरूप विश्व में आकस्मिता और संयोग का कोई स्थान नहीं है। परन्तु विज्ञान से जब पूछा जाता है कि कार्य-कारण की शृंखला एक व्यवस्था का निर्माण किस प्रकार करती है? तब विज्ञान खामोश हो जाता है। इस उत्तर को पाने के लिए हमें कार्य-कारण की धारणा से थोड़ा ऊपर उठना होगा। विज्ञान की तरह धर्म का उद्देश्य भी वस्तुओं की व्याख्या करना है। धर्म में वस्तुओं की व्याख्या करने के लिए कल्पित एवं अनुमानित कथाओं का सहारा लिया जाता है। विज्ञान उन्हीं कल्पित एवं अनुमानित कथाओं पर अपनी परिकल्पना बना उस सच तक पहुँचने की कोशिश करता है। उदाहरणार्थ महाभारत युद्ध के दौरान धृतराष्ट्र संजय से मैदानी युद्ध का आँखों देखा हाल-चाल जानना चाहते हैं। कहते हैं कि संजय के पास ऐसी दिव्य दृष्टि थी जिससे वे दूरस्थ घटनाओं को अपनी दिव्य दृष्टि से देख लेते थे। आधुनिक वैज्ञानिक युग में जब बेयर्ड महोदय ने इस बात को सुना तब उन्हें यह आश्चर्य नहीं लगा। उन्हें लगा क्या यह संभव है? इसी का ही नतीजा यह निकला कि टेलीविजन ने एक वैज्ञानिक आविष्कार बन दिखा दिया, हाँ यह संभव है। विज्ञान की हमेशा से ही सदाबहार परम्परा यह रही कि धर्म द्वारा प्रतिपादित विषय की सूक्ष्मता से जाँच कर उसमें व्याप्त सच को निकाला जाए। इस दृष्टि से धर्म एवं विज्ञान एक-दूसरे के पूरक हैं।

हमारा सत्य, शिव, सौंदर्य इसी सनातन धर्म से ही खिला। किसी एक भगवान, देवदूत, ऋषि या ग्रंथ के सूत्र अंतिम निष्पादित नहीं माने

गए। धर्म में ही अपनी निष्पत्तियों और प्रतीतियों को अतिक्रमित करने की सुन्दर आदत शुरू से ही रही है। श्रुति, स्मृति, पुराण और ब्रह्म सूत्र जैसे अनेक प्रवाहों से युक्त धर्म व्यक्ति को और अधिक जान लेने की प्रेरणा देता रहा है, यही और अधिक जान लेने की जिज्ञासा ही तो वैज्ञानिक प्रवृत्ति व प्रगति का एक खास लक्षण भी माना जाता है। कृष्ण के धर्म में धर्म का संबंध प्रकृति से है। प्रकृति से अलग कोई भी व्यक्ति आनंद नहीं पा सकता, लेकिन प्रकृति से बंधकर भी कोई व्यक्ति मुक्ति नहीं पा सकता। इस प्रकार धर्म की वैज्ञानिक व दार्शनिक प्रणाली का विकास भी यहाँ होता नजर आ रहा है। धर्म ने भी सृष्टि के रहस्यों को जानने का प्रयास किया। सृष्टि जगत को जानना धर्म का आदि उद्देश्य था जिसका क्रमिक विकास विज्ञान के रूप में हुआ। वास्तव में विज्ञान की प्रगति जिस तरह से हुई उसका प्लेटफॉर्म तो धर्म ही था। एक अर्थ में विज्ञान सदैव धर्म का पोषक रहा है। विज्ञान लोक ज्ञान का ही विकसित एवं व्यवस्थित रूप है।

वैज्ञानिक ज्ञान की उपज ने हमारे अंधविश्वास, कुरुतियों, गलत मान्यताओं व असंगत रुढ़ियों को खत्म किया है लेकिन यह भी सच है कि विज्ञान ने अध्यात्म एवं मानव मूल्यों के विश्वास की जड़ों को भी हिलाया है। आइंस्टीन ने धर्म एवं विज्ञान में समतामूलक तथ्य को खोजा है। उनके अनुसार धर्म अभाव में विज्ञान पंगु है तथा विज्ञान के अभाव में धर्म अंधा है। आइंस्टीन के अनुसार धर्म हमारे गंतव्य स्थान को निश्चित करता है तो विज्ञान हमारे समक्ष उन साधनों को रखता है जो लक्ष्य की प्राप्ति अथवा गंतव्य स्थान तक पहुँचाने में हमारी सहायता करते हैं। इस हिसाब से विज्ञान एवं धर्म में पारस्परिक निर्भरता का संबंध है। धर्म और विज्ञान में टकराव तभी होता है जब धर्म अपनी सीमा को त्यागकर संसार की वैज्ञानिक व्याख्या करना शुरू कर देता है तथा जब विज्ञान धर्म को अधार्मिक कह कर आगे बढ़ने लगता है। धर्म एवं विज्ञान दोनों की ही अपनी सीमाएँ हैं। सीमाएँ ही दोनों शाखाओं को सौंदर्य प्रदान करती हैं।

स्वतंत्र लेखक
पुत्र श्री हनुमान सिंह कस्वाँ
हेतमसर, वाया-नूँआ, झुंझुनूं (राज.)-333041
मोः 9460841575

शिक्षा-अनुभव

जब सेनापति ने विद्यार्थियों को मिठाई बाँटी

❐ **राम गोपाल प्रजापति**

मैं ने राजकीय सेवा की शुरूआत सन् 1974 में तृतीय श्रेणी अध्यापक के रूप में बाड़मेर जिले की रा.प्रा.वि. खींपसर (पं.सं. बायतु) से प्रारंभ की, यहाँ पहुँचने के लिए दस मील पैदल चलना पड़ता था। तीन माह पश्चात मेरा स्थानान्तरण रा.उ.प्रा. विद्यालय कानोड (बाड़मेर) में हो गया, कानोड विद्यालय नवक्रमोन्नत हुआ था अतः वहाँ विद्यालय निरीक्षक द्वारा प्रधानाध्यापक की नियुक्ति कर दी गई थी एवं शेष स्टाफ पंचायत समिति का ही था व पं. स. के मात्र वहाँ एक ही शिक्षक पदस्थापित थे व कक्षाएँ छः थी, अतः ग्रामवासियों के दबाव के चलते मेरा तबादला कानोड कर दिया गया व दूसरे दिन गाँव के मौजीज व्यक्ति श्री चीमाराम कूंदू व शिक्षक श्री चिमनाराम मुझे लेने ऊँट पर खींपसर पहुँच गए, मैं कार्यमुक्त होकर उनके साथ ऊँट पर सवार होकर रात्रि में कानोड आ गया। ऊँट सवारी का मेरा यह पहला अनुभव था जो चिरस्मरणीय बन गया, चांदनी रात थी, होली का पर्व नजदीक था। ढाणियों से दूर युवक चंग की थाप पर फाग गा रहे थे व थिरक रहे थे, मंद बयार में धोरों पर उनका लयबद्ध गाना व थिरकना रोमांच पैदा कर रहा था। गाँव के पास महिलाएँ होली के गीत गा रही थी, ठंडी रात में उनके स्वर लहरियाँ दूर तक सुनाई दे रही थी। इस दृश्य का प्रभाव श्री चीमाराम पर भी हुआ और उन्होंने प्रसिद्ध मारवाड़ी गीत 'रायचंद' की टेर लगाई 'चाली चाली रे बाढ़ाणा सूं रेल म्हारा रायचंद...' श्री चिमनाराम ने भी उनके साथ सुर में सुर मिलाया।

चूंकि कानोड विद्यालय उसी वर्ष क्रमोन्नत हुआ था व उनके पक्के भवन का निर्माण कार्य प्रगति पर था, इस हेतु राशि एकत्रित करने का भार ग्रामीणों ने श्री चीमाराम कूंदू, श्री चिमनाराम अध्यापक व श्री मुकनाराम की बनाई कमेटी को सौंप रखा था, अतः ये तीनों ढाणियों में घूम-घूम कर चंदा एकत्रित करते थे, इनके अथक प्रयासों से ही विद्यालय भवन का निर्माण हुआ जिसके लिए ये साधुवाद के पात्र हैं। चूँकि श्री चिमनाराम अध्यापक ही एक मात्र पढ़े लिखे इस कमेटी के सदस्य थे अतः उनका कमेटी सदस्यों के साथ रहना अपरिहार्य था, ऐसी स्थिति में वे विद्यालय में अपना समय कम ही दे पाते थे एवं प्रधानाध्यापक पाली जिले के रहने वाले थे वे घरेलू परिस्थितिवश अवकाश पर चल रहे थे, मैं चौबीस घंटे मुख्यालय पर उपस्थित रहता था। इसी दौरान इलाके में सेना की हलचल प्रारंभ हो गयी व ज्ञात हुआ कि फौज सैनिक अभ्यास हेतु यहाँ आई है। सेना का अफसर मुझसे मिले व आग्रह किया कि विद्यालय के कक्ष रात्रि के समय उन्हें उपलब्ध करवा दिए जावे तो वे अफसर वहाँ रात्रि विश्राम/पर्यवेक्षण कार्य कर लेंगे जो सैनिक अभ्यास की निगरानी कर रहे हैं। इस प्रस्ताव पर कोई आपत्ति नहीं थी क्योंकि शिक्षण कार्य बाधित नहीं होना था, चूँकि विद्यार्थी नीचे दरियों पर ही बैठते थे अतः शाम को दरियाँ हटा कर प्रधानाध्याक कक्ष में रख देते थे एवं तीन कमरे सेना को रात्रि समय उपलब्ध करवा दिए जाते थे।

सेना के दो डिवीजनों के बीच सैनिक युद्धाभ्यास चल रहा था, एक का नेतृत्व मेजर जनरल पृथ्वीराज सा. कर रहे थे व दूसरे का नेतृत्व मेजर जनरल सुंदर जी कर रहे थे एवं मेजर जनरल सरदार राजेश्वर सिंह चीफ अंपायर थे। यहाँ यह उल्लेख करना भी समीचीन होगा कि यही जनरल सुंदर जी बाद में भारत की थल सेना के सेनाध्यक्ष रहे। जनरल राजेश्वर सिंह जी व जनरल सुंदर जी प्रायः सायं विद्यालय में आते रहते थे मैंने पाया कि जनरल सुंदर जी बहुत सख्त मिजाज अफसर थे एवं मितभाषी थे, जबकि सरदार राजेश्वर सिंह जी बहुत मिलनसार थे व राजस्थानी संस्कृति, शिक्षा के बारे में पूछताछ करते रहते थे।

एक दिन मैं कक्षा छठी को अंग्रेजी पढ़ा रहा था, इतने में फौजी आए व कक्षा के सामने

बरामदे में एक बोर्ड लगाया, जिस पर एक बड़ा सा नजरी नक्शा अंकित था, इतने में ही फौजी गाड़ियाँ आकर रुकी, आगे की फौजी गाड़ी पर आगे लाल रंग की पट्टिका पर तीन सुनहरे स्टार लगे थे, जिससे मैंने अनुमान लगाया कि ये बड़े ही अधिकारी हैं, क्योंकि मेजर जनरल की गाड़ी पर दो स्टार लगे होते थे। उस फौजी गाड़ी पर दो स्टार लगे होते थे। उस फौजी गाड़ी से अधिकारी उतरे जिनका व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावी व भव्य था, गौर वर्ण, छः फीट लम्बाई व स्टालिन कट मूंछे, वे बोर्ड के पास आए तब जनरल राजेश्वर सिंह ने पोइंटर से उन्हें युद्ध की ताजा स्थिति की जानकारी देनी प्रारंभ की, करीब दस-बारह मिनट तक सैनिक अभ्यास की जानकारी लेने के बाद वे अफसर कक्षा में आए और मुझसे पूछा कि आप क्या पढ़ा रहे हैं? मैंने कहा सर, यह कक्षा छठी है और मैं अंग्रेजी पढ़ा रहा हूँ, हमारे यहाँ राजस्थान में अंग्रेजी कक्षा छठी से ही शुरू होती है। जनरल साहब ने कहा- 'क्या मैं बच्चों से कुछ सवाल पूछ सकता हूँ? मैंने कहा जी हाँ, परंतु मैं मन ही मन आशंकित हुआ, बच्चे अंग्रेजी में क्या जवाब दे पाएँगे, जबकि मेरा स्वयं का हाथ भी अंग्रेजी में तंग था।

जनरल साब ने सवाल किया 'What's your name?' छात्रों ने जवाब देने के लिए हाथ लहराएँ, एक उतावले छात्र ने बिना ईशारे के इंतजार किए, खड़े होकर जवाब दिया- 'Sir, My name is Peer Singh' उन्होंने दूसरा सवाल किया कि 'Where do you live' एक छात्र नैनाराम ने उत्तर दिया- 'Sir I live at Kanod' उन्होंने अगला प्रश्न किया- 'What's Your Father' एक छात्र उदयसिंह ने उत्तर दिया, 'My father is a farmer' तत्पश्चात जनरल साब ने इसी तरह के दो-तीन प्रश्न और पूछे, जिनके छात्रों ने सही उत्तर दे दिए। मेरी साँस में सांस आयी, मैंने मन ही मन प्रभु का धन्यवाद किया, दरअसल उस कालखंड में अंग्रेजी में इस तरह के सवाल-जवाब कक्षा छठी में आते ही छात्रों को याद करवा दिए जाते थे, मुझे भी कक्षा छठी में ये सवाल-जवाब याद करवाए गए थे और मैंने भी छात्रों को इस तरह के सवाल-जवाब का अभ्यास करवा रखा था। जनरल साब छात्रों के जवाब से अति प्रसन्न हुए और मुझसे कहा- Boys are very intelligent, I'll bring sweets for them और वे युद्धाभ्यास का मौका मुआयना करने के लिए प्रस्थान कर गए। बाद में मेजर स्वामीनाथन ने मुझे बताया कि वे लेफ्टिनेंट जनरल ओ.पी. मल्होत्रा साहब हैं और सदर्न कमांड पूना के जनरल ऑफिसर कमांडिंग इन चीफ है और पूना से चार-पाँच दिन बाद यहाँ युद्धाभ्यास का जायजा लेने के लिए आते हैं। छात्र यह जानकर बहुत उत्साहित थे कि उनके सही जवाब देने से बड़े जनरल साब बहुत प्रसन्न हुए और मिठाई लाने की बात से तो उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं रही। छात्र उत्सुकता से उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे, उस जमाने में गुड़ ही एकमात्र गाँवों में मिठाई थी जो छात्रों को गणतंत्र दिवस व स्वाधीनता दिवस के अवसर पर वितरित करते थे। पाँचवे दिन जनरल मल्होत्रा साहब जोंगा से उतरे तो जवानों ने वाहन से मोर्टन चाकलेट के बड़े डिब्बे भी उतारे जो काफी मात्रा में लाए गए थे, उस काल में 'मॉर्टन' कीमती चॉकलेट होती थी व आम जन की पहुँच से दूर थी। जनरल साब की उपस्थिति में जवानों ने सभी छात्रों को धोबे भर-भर कर चाकलेट्स वितरित की, छात्रों की प्रसन्नता का कोई पारावार नहीं रहा। यहाँ यह उल्लेख करना समीचीन होगा कि बाद में जनरल मल्होत्रा भारतीय सेना के थल सेनाध्यक्ष नियुक्त हुए व भारत के राजदूत भी रहे। युद्धाभ्यास के दौरान तत्कालीन सेनाध्यक्ष जनरल बैवूर का दौरा भी हुआ व मुझे उनसे मिलने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ।

करीब एक पखवाड़े बाद युद्धाभ्यास समाप्ति के पश्चात सेना की वापसी का समय आ गया, विद्यालय के सामने मैदान में जनरल मल्होत्रा साहब सेना के अधिकारियों की मीटिंग ले रहे थे, मीटिंग समाप्ति के पश्चात मैं जनरल मल्होत्रा साहब के समक्ष उपस्थित हुआ, वे आत्मीयता से मिले और कहा हम आपकी क्या मदद कर सकते हैं? मैंने निवेदन किया कि विद्यालय में पीने के पानी की बहुत किल्लत है, उन्होंने कहा कि पानी तो टैंकर से डलवा देंगे मगर आप कहाँ स्टॉक करेंगे, मैंने विद्यालय के पीछे बने बड़े पक्के टांके का उन्हें अवलोकन करवाया, टांके के तलिये (Bottom) में बहुत कम पानी था, जनरल साहब ने टांके में देखा और कहा, Oh it is a well मैंने कहा सर, यह कुआँ नहीं है, पानी का होज है, पैंदे में थोड़ा सा पानी है, आप एक टैंकर डलवा दें तो हम ग्रीष्मावकाश तक काम चला लेंगे बाद में बरसात हो जाएगी। जनरल साहब ने कहा एक टैंकर से क्या होगा इसका Bottom ही नहीं ढकेगा, तीन टैंकर पानी के डाल दिए जावें, उनके साथ चल रहे कैप्टन सिंह ने आदेश को डायरी में नोट कर लिया।

सेना ने प्रस्थान करना शुरू कर दिया था, मगर टैंकर नहीं आए थे, कर्नल सेठी ने जिनका ज्यादा समय विद्यालय में ही डेरा रहा था वे जाने लगे तो मैंने उनसे पूछा सर फौज जा रही है, टैंकर नहीं आए है। कर्नल साहब ने कहा मास्टर जी यह G.O.C.inc का हुक्म है, अगर हम पूना चले जाएंगे तो भी वापिस आकर पानी तो डालना ही होगा। दो तीन बाद एक सूबेदार मय टैंकर्स आए और कहा कि उन्हें हुक्म हुआ है कि विद्यालय के हौज को मीठे पानी से भरना है। तीन टैंकर्स की जगह बात नीचे पहुँचते-पहुँचते टांका भरने तक आ गई। मीठे पानी का स्रोत करीब 45 किमी. दूर ऊण्डू गाँव में था, फौजी टैंकर ऊण्डू से पानी लाकर टांके में डालते, गाँव वाले भी टाँके से पानी ले जाते क्यों मीठे पानी की भारी किल्लत थी, फौजियों के भोजन की व्यवस्था ग्रामीणों द्वारा की गयी क्योंकि फौज जा चुकी थी, आखिरकार तीन दिन के बाद टांका भर गया तब मेरे द्वारा टांका भरने के प्रमाण पत्र को लेकर फौजी मय टैंकर पूना हेतु प्रस्थान कर गए।

इस समयावधि में मैंने फौजियों के जीवन को नजदीक से देखा एवं उनके दो गुण कड़ी मेहनत व कठोर अनुशासन को अपने जीवन में अपनाने का प्रयास किया। फौजी जीवन से प्रेरणा लेकर मैंने इस विद्यालय में कार्यरत रहते हुए, एक झौंपड़े में निवास करते हुए लालटेन की रोशनी में चारपाई पर बैठकर अध्ययन करते हुए स्वयंपाठी के रूप में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। कठोर अनुशासन व समय की पाबंदी के गुणों ने मेरे जीवन में प्रगति के मार्ग को प्रशस्त किया। औरंगजेब ने पढ़ाने के काम को राज करने के बराबर दर्जा दिया, मैं इस कथन से सहमत हूँ, आपको क्या लगता है?

सेवानिवृत्त (R.A.S.)
बी-36, समता नगर, बीकानेर (राज.)
मो: 9414470251

आदेश-परिपत्र : फरवरी, 2021

1. शिक्षा संकुल के केन्द्रीय विद्यालयों के संबंध में।
2. शिक्षा संकुल के केन्द्रीय विद्यालयों के संबंध में।
3. वरिष्ठता की सूची के सम्बन्ध में।
4. वरिष्ठता की सूची के सम्बन्ध में।
5. कार्मिकों को विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत वर्ष 2020-21 में दी गई सहायता राशि का वितरण।
6. माह दिसम्बर, 2020 के अंक में प्रकाशित आदेश में संशोधन।

1. शिक्षा संकुल के केन्द्रीय विद्यालयों के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/आदर्श विद्यालय/सीआरसी/61069/2019-20/10 दिनांक 11.01.2021 ● विषयः शिक्षा संकुल के केन्द्रीय विद्यालयों के संबंध में।

संकुल संदर्भ केन्द्रों (सीआरपी) के पुनर्गठन बाबत शासकीय स्वीकृति पत्रांक-प. 4(6)शिक्षा-1/2014/आदर्श विद्यालय पार्ट जयपुर, दिनांक 19.02.2020 एवं इस कार्यालय के पत्रांक-शिविरा-माध्य/आदर्श विद्यालय/सीआरसी/2019-20/02 दिनांक 05.03.2020 एवं 03 दिनांक 29.05.2020 के द्वारा क्रमशः समस्त पदेन पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारियों (पीईईओ.) को संबंधित ग्राम पंचायत के समस्त अधीनस्थ विद्यालयों के अतिरिक्त शेष रहे उसी ग्राम पंचायत के माध्यमिक शिक्षा के विद्यालयों (पूर्व प्राथमिक से कक्षा-12 तक संचालित समस्त विद्यालय) हेतु 'संकुल संदर्भ केन्द्र प्रभारी (सीआरसीएफ)' तथा संबंधित पीईईओ. विद्यालय/कार्यालय को 'संकुल संदर्भ केन्द्र (सीआरसीएफ)' तथा शहरी क्षेत्र के आदर्श विद्यालय योजनान्तर्गत चयनित विद्यालयों तथा उच्चतम कक्षा वाले विद्यालयों को पूर्व प्राथमिक कक्षा-12 तक संचालित नजदीकी विद्यालयों का 'संकुल संदर्भ केन्द्र (सीआरसी)' एवं संबंधित संस्थाप्रधान को 'संकुल संदर्भ केन्द्र प्रभारी (सीआरसीएफ)' घोषित किया गया है।

शासकीय स्वीकृति पत्रांक-4(6) शिक्षा-1/2014 आदर्श विद्यालय पार्ट जयपुर, दिनांक 03.12.2020 के क्रम में पूर्वोक्त समसंख्यक पत्र दिनांक 29.05.2020 द्वारा शहरी क्षेत्र में नामित सीआरसीएफ को शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के प्रभावी प्रबोधन एवं अनुवर्तन हेतु ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत पदेन पंचायत प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी (पीईईओ) की भाँति ही 'शहरी संकुल प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी (Urban Cluster Elementary Education Officer)' भी एतद् द्वारा नामित किया जाता है। UCEEO का कार्यालय/मुख्यालय संबंधित विद्यालय होगा।

नामित UCEEO द्वारा निर्धारित/संबंधित शहरी सीआरसी परिक्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा के विद्यालयों (राप्रावि./राउप्रावि.) में कार्यरत शिक्षकों/संस्थाप्रधानों के संस्थापन संबंधित कार्य यथा- आकस्मिक अवकाश, वार्षिक कार्य मूल्यांकन प्रतिवेदन की व्यवस्था इत्यादि तथा उनके आहरण-वितरण अधिकार व सेवा अभिलेख पंजिका के संधारण एवं अन्य संबंधित संस्थापन कार्य का संपादन ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत 'पदेन पंचायत प्रारंभिक शिक्षाधिकारी (पीईईओ)' की भाँति ही सम्पादित किया जाएगा।

संबंधित जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) प्रारंभिक शिक्षा तथा मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं पदेन बी.आर.सी.एफ., समग्र शिक्षा, नियमानुसार सेवाभिलेखों में प्रविष्टियां पूर्ण कर संबंधित 'शहरी संकुल प्रारंभिक शिक्षा अधिकारी (UCEEO) को माह मार्च, 2021 के प्रथम सप्ताह तक आवश्यक रूप से हस्तान्तरित करना/करवाया जाना सुनिश्चित करें। माह मार्च, 2021 से आहरण/वितरण/वेतन व्यवस्था, अवकाश स्वीकृति, सेवाभिलेख पंजिका के संधारण एवं अन्य संबंधित संस्थापन कार्य का सम्पादन नियमानुसार नवीन कार्यालय/UCEEO द्वारा किया जाना सुनिश्चित करावें। इसके अतिरिक्त अन्य समस्त संबंधित पंजिकाएँ भी निर्देशानुसार/नियमानुसार संबंधित कार्यालयों को हस्तान्तरित करें।

इसे सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करें।

संलग्नः पूर्वोक्त समसंख्यक पत्र दिनांक 29.05.2020 (शहरी क्षेत्र में नामित संकुल संदर्भ केन्द्र एवं उनके अधीनस्थ विद्यालयों की जिलेवार सूची)

उक्त जिलेवार सूची विभागीय वेबसाइट www.education.rajasthan.gov.in/secondary (लिंक-https://cutt.ly/MjdcHvz) पर भी उपलब्ध है।

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

2. शिक्षा संकुल के केन्द्रीय विद्यालयों के संबंध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा-माध्य/आदर्श विद्यालय/सीआरसी/2019-20/03 दिनांक 29.05.2020 ● विषयः शिक्षा संकुल के केन्द्रीय विद्यालयों के संबंध में।

संकुल संदर्भ केन्द्रों (सीआरसी) के पुनर्गठन बाबत शासकीय स्वीकृति पत्रांक-प.4(6) शिक्षा-1/2014/आदर्श विद्यालय पार्ट जयपुर, दिनांक 19.02.2020 के क्रम में इस कार्यालय के समसंख्यक पत्रांक-02 दिनांक 05.03.2020 द्वारा समस्त पदेन पंचायत प्रारंभिक शिक्षाधिकारी (पीईईओ.) को संबंधित ग्राम पंचायत के समस्त विद्यालयों के अतिरिक्त शेष रहे उसी ग्राम पंचायत के माध्यमिक शिक्षा के विद्यालयों हेतु संकुल संदर्भ केन्द्र प्रभारी (सीआरसीएफ) तथा संबंधित पीईईओ विद्यालय/कार्यालय को संकुल संदर्भ केन्द्र (सीआरसी) एतद् द्वारा घोषित किया गया था।

उक्त शासकीय स्वीकृति के क्रम में पूर्वोक्त समसंख्यक पत्र दिनांक 05.03.2020 द्वारा शहरी क्षेत्र में संकुल संदर्भ केन्द्र (सीआरसी) एवं संबंधित संस्थाप्रधान को संकुल संदर्भ केन्द्र प्रभारी (सीआरसीएफ) नामित करने हेतु विस्तृत प्रस्ताव जिला स्तरीय कार्यालयों से मांगे गए थे। जिला स्तरीय कार्यालयों से प्राप्त प्रस्तावों के आधार संलग्न परिशिष्ट के कॉलम संख्या 05 में वर्णित विद्यालय को कॉलम संख्या 11 में वर्णित अधीनस्थ विद्यालयों के लिए 'संकुल संदर्भ केन्द्र (सीआरसी)' तथा कॉलम संख्या 05 में वर्णित विद्यालय के संस्थाप्रधान को 'संकुल संदर्भ केन्द्र प्रभारी (सीआरसीएफ)' एतद्द्वारा नामित किया जाता है।

उक्त प्रभारी अधिकारी (सीआरसीएफ) अपने अधीनस्थ विद्यालयों के पर्यवेक्षण, शैक्षिक एवं प्रबंधकीय गुणवत्ता के विकास एवं सुदृढ़ीकरण हेतु उत्तरदायी होंगे।

नोटः-शहरी क्षेत्र में नामित संकुल संदर्भ केन्द्र एवं उनके अधीनस्थ विद्यालयों की जिलेवार सूची विभागीय वेबसाइट www.education.rajasthan.gov.in/secondary (लिंक-https://bit.ly/3FUa49R) पर उपलब्ध है।

शहरी क्षेत्र में नामित संकुल संदर्भ केन्द्रों (सीआरसी) की जिलेवार संख्या

क्र.सं.	जिले का नाम	नामित संकुल संदर्भ केन्द्रों (सीआरसी) की संख्या
1	2	3
1.	AJMER	21
2.	ALWAR	15
3.	BANSWARA	4
4.	BARAN	6
5.	BARMER	5
6.	BHARATPUR	14
7.	BHILWARA	15
8.	BIKANER	13
9.	BUNDI	10
10.	CHITTAURGARH	9
11.	CHURU	14
12.	DAUSA	5
13.	DHAULPUR	5
14.	DUNGARPUR	5
15.	GANGANAGAR	12
16.	HANUMANGARH	9
17.	JAIPUR	51
18.	JAISALMER	4
19.	JALOR	6
20.	JHALAWAR	7
21.	JHUNJHUNUN	12
22.	JODHPUR	22
23.	KARAULI	6
24.	KOTA	20
25.	NAGAUR	12
26.	PALI	14
27.	PRATAPGARH	3
28.	RAJSAMAND	6
29.	S. MADHOPUR	3
30.	SIKAR	10
31.	SIROHI	6
32.	TONK	9
33.	UDAIPUR	12
	कुल योग	**365**

● निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

● **(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.** निदेशक प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

3. वरिष्ठता की सूची के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/संस्था/वरि./के-2/11968/मानदण्ड/19-20 दिनांक : 18.01.2021 ● विषयः वरिष्ठता की सूची के सम्बन्ध में।

निदेशालय स्तर से द्वितीय श्रेणी अध्यापक एवं समकक्ष स्तर के पद की जारी हो चुकी वरिष्ठता सूचियों में नामांकन, विलोपन, योग्यता अभिवृद्धि एवं अन्य संशोधन के आदेश परीक्षण उपरांत राज्यस्तरीय आदेश जारी किए जाते है।

निदेशालय स्तर पर डीपीसी वर्ष 2021-22 हेतु द्वितीय वेतन शृंखला से उच्च पदों पर पदोन्नति हेतु पात्रता निर्माण का कार्य अंतिम चरण में है। अतः इस सत्र में अर्जित योग्यता को जुड़वाने हेतु आवेदन करने से यदि कोई वंचित है तो निर्धारित प्रपत्र में अपना प्रकरण मय दस्तावेज कार्यालयाध्यक्ष/संस्थाप्रधान/पीईईओ से अग्रेषित करवाकर सीबीईओ कार्यालय को दिनांक 20 फरवरी, 2021 तक प्रेषित करें। सीबीईओ कार्यालय समस्त प्रकरण संयुक्त निदेशक शिक्षा संभाग कार्यालय को प्रेषित कर, प्रमाण पत्र देंगे कि दिनांक 20 फरवरी, 2021 तक प्राप्त समस्त प्रकरण संभाग कार्यालय को प्रेषित किए जा चुके है एवं कोई प्रकरण बकाया नहीं है।

निर्धारित तिथि तक सीबीईओ कार्यालय से प्राप्त समस्त प्रकरण संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, संभाग द्वारा जाँच उपरान्त कार्यालय स्तर से स्थाई वरिष्ठता सूची में इस हेतु उक्त कार्यवाही के आदेश प्रसारित कर दिनांक 27 फरवरी, 2021 तक आवश्यक रूप से निदेशालय को भिजवाया जाना सुनिश्चित करें। निर्धारित तिथि तक आवेदन नहीं करने के कारण मण्डल एवं राज्य स्तरीय आदेश जारी नहीं होने की स्थिति में यदि कार्मिक वर्ष 2021-22 की डीपीसी से वंचित रहता है तो कार्मिक स्वयं जिम्मेदार होगा।

●**(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस.,** निदेशक प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

4. वरिष्ठता की सूची के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांकः शिविरा/माध्य/संस्था/वरि./के-2/11968/मानदण्ड/2019-20 दिनांक : 18.01.2021 ● विषयः वरिष्ठता की सूची के सम्बन्ध में।

निदेशालय स्तर से द्वितीय श्रेणी अध्यापक एवं समकक्ष तथा प्रधानाध्यापक (मा.वि.) एवं समकक्ष स्तर के पद की जारी हो चुकी वरिष्ठता सूचियों में नामांकन, विलोपन, योग्यता अभिवृद्धि एवं अन्य संशोधन के आदेश परीक्षण उपरांत राज्य स्तरीय आदेश जारी किए जाते है।

पूर्व में प्रकाशित वरिष्ठता सूचियों में योग्यता अभिवृद्धि हेतु 06 माह से पूर्व अर्जित योग्यता अभिवृद्धि के मामले में एक और अंतिम अवसर देते हुए आवेदन करने की अंतिम तिथि 20 फरवरी 2021 निर्धारित की जाती है। कार्मिक निर्धारित प्रपत्र में अपना प्रकरण मय दस्तावेज कार्यालयाध्यक्ष/संस्थाप्रधान/पीईईओ से अग्रेषित करवाकर सीबीईओ कार्यालय को प्रेषित कर सूचनार्थ अपने आवेदन मय दस्तावेजों की समेकित पी.डी.एफ. फाइल (स्पष्ट पठनीय) varishta.add@gmail.com पर भेजेंगे। सीबीईओ कार्यालय समस्त प्रकरण संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा संभाग कार्यालय को प्रेषित करेंगे एवं प्रमाण पत्र देंगे कि दिनांक 20 फरवरी, 2021 तक प्राप्त समस्त प्रकरण संभाग कार्यालय को प्रेषित किए जा चुके है एवं कोई प्रकरण बकाया नहीं है।

निर्धारित तिथि तक सीबीईओ कार्यालय से प्राप्त समस्त प्रकरण संयुक्त निदेशक स्कूल शिक्षा, संभाग द्वारा जाँच उपरान्त कार्यालय स्तर से स्थाई वरिष्ठता सूची में इस हेतु उक्त कार्यवाही के आदेश प्रसारित कर दिनांक 27 फरवरी, 2021 तक आवश्यक रूप से निदेशालय को भिजवाया जाना सुनिश्चित करें।

उक्त तिथि के पश्चात 06 माह (परीक्षा परिणाम तिथि) से पुराने प्रकरण पर भविष्य में किसी भी स्तर पर विचार नहीं किया जाएगा। भविष्य में आयोजित होने वाली डीपीसी से यदि वंचित रहता है तो कार्मिक स्वयं जिम्मेदार होगा।

●(सौरभ स्वामी) आइ.ए.एस., निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

5. कार्मिकों को विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत वर्ष 2020-21 में दी गई सहायता राशि का वितरण।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ●दिनांक 8-1-2020 ●अनौपचारिक टिप्पणी

हितकारी निधि, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर द्वारा सभी श्रेणी के कार्मिकों को विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत वर्ष 2020-21 में अप्रेल 2020 से दिसम्बर 2020 तक दी गई सहायता राशि का वितरण किया गया है।

(अप्रेल 2020 से दिसम्बर 2020)

क्र. सं.	योजनाओं का नाम	प्रकरण संख्या	राशि
1.	मृतक कर्मचारियों के आश्रितों की दी गई सहायता	164	2,45,00,000/-
2.	बालिका विवाह उपहार योजना के अन्तर्गत	610	67,54,000/-
3.	अजमेर बोर्ड की सैकण्डरी/वरिष्ठ उपाध्याय में 70% या अधिक अंक प्राप्त करने पर सहायता के अन्तर्गत	352	35,20,000/-
4.	शिक्षा विभाग के राज्य कर्मचारियों को बालिका शिक्षा स्नातक/स्नातकोत्तर में अध्ययनरत होने पर ऋण।	03	1,50,000/-

● **(पितराम सिंह)** उप निदेशक (प्रशासन) एवं सचिव हितकारी निधि माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

6. माह दिसम्बर, 2020 के अंक में प्रकाशित आदेश में संशोधन

(आदेश प्रकाशन क्रमांक 9. APAR के संबंध में।)

1. बोल्ड बिन्दु संख्या **9. APAR लिखने के लिए सामान्य निर्देश** पृष्ठ संख्या 22 व 23 के बिन्दु संख्या 9 के साथ कार्मिक विभाग के आदेश क्रमांक प.13(51)/ का./क-1/गो.प्र./2015 जयपुर दिनांक 09.04.2015 बिन्दु संख्या 14 के साथ कार्मिक विभाग के आदेश क्रमांक प. 13(51) कार्मिक/एसीआर/2008 जयपुर दिनांक 12.10.2009 एवं बिन्दु संख्या 17 के साथ कार्मिक विभाग के आदेश क्रमांक प. 13(51) का./क-1/गो.प्र./2016 जयपुर दिनांक 17.05.2018 पढ़ा जावे।
2. बोल्ड बिन्दु संख्या **11. प्रतिकूल प्रविष्टियाँ** पृष्ठ संख्या 23 के बिन्दु संख्या 2 व 3 के साथ कार्मिक विभाग के आदेश क्रमांक प.13 (51) का./क-1/गो.प्र./2012 जयपुर दिनांक 17.09.2013 व बिन्दु संख्या 4 के साथ कार्मिक विभाग के आदेश क्रमांक प.13(51) का./क-1/गो.प्र./2013 जयपुर दिनांक 17.09.2013 पढ़ा जावे।
3. बोल्ड बिन्दु संख्या **14. कोई प्रमाण नहीं कि रिपोर्ट** पृष्ठ संख्या 24 व 25 के बिन्दु संख्या E के साथ कार्मिक विभाग के आदेश क्रमांक प.13(51) का/क-1/गो.प्र./2008 जयपुर दिनांक 30.11.2012 पढ़ा जावे।
4. पृष्ठ संख्या 26 पर वर्णित मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सारणी के बिन्दु संख्या 6 में स्तंभ 4 (समीक्षक अधिकारी) में **मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी** के स्थान पर **मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी** पढ़ा जावे।

शिक्षावाणी प्रसारण कार्यक्रम (दिनांक 01.02.2021 से 27.02.2021 तक)
प्रसारण समय : प्रातः 11.00 से 11.55 बजे तक

दिनांक	वार	प्रारंभ से 15 मिनट	16 मिनट से 35 मिनट तक					36 मिनट से 55 मिनट तक		
		मीना की कहानियां	कक्षा	विषय पाठ्यपुस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम	कक्षा	विषय पाठ्यपुस्तक	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
01.02.2021	सोमवार	बड़े खुश नजर आ रहे हो	7	सामाजिक विज्ञान	2	हमारी पृथ्वी के अंदर	9	हिन्दी क्षितिज गद्य	3	श्यामाचरण दुबे– उपभोक्तावाद की संस्कृति
02.02.2021	मंगलवार	बर्फी हो तो ऐसी	7	संस्कृत रूचिरा भाग–2	3	स्वावलंबन	11	अर्थशास्त्र	1	भारतीय अर्थव्यवस्था (पंचवर्षीय योजनाएँ)
03.02.2021	बुधवार	दोस्ती का रहस्य	8	सामाजिक विज्ञान	2	धर्म निरपेक्षता की समझ	10	संस्कृत स्पन्दना	4	जृम्भस्व सिंह दन्तास्त्रे गणयिष्ये
04.02.2021	गुरुवार	सबसे बड़ा इंसान	6	संस्कृत	2	शब्द परिचय स्त्रीलिंग	11	इतिहास	1	प्रारंभिक समाज
05.02.2021	शुक्रवार	गुल्लक भरो	3	हिन्दी	3	शिष्टाचार	12	राज. विज्ञान	1	भारतीय संविधान की विशेषताएँ–प्रस्तावना
06.02.2021	शनिवार	कौन बनेगा स्टार	7	संस्कृत रूचिरा	9	समवायो हि दुर्जयः	12	भौतिक विज्ञान	15	नाभिकीय भौतिकी
08.02.2021	सोमवार	राजकुमार की कहानी	1	हिन्दी	2	अ ब म न	10	संस्कृत स्पन्दना	10	सुभाषित रत्नानि (1–8)
09.02.2021	मंगलवार	भोला भाला भालू	6	हिन्दी	12	संसार पुस्तक है (पत्र)	12	इतिहास	4	मुगल आक्रमण
10.02.2021	बुधवार	दादी ने कहा	6	विज्ञान	8	शरीर में गति	12	राज. विज्ञान	4	स्वतंत्रता एवं समानता
11.02.2021	गुरुवार	जूता बड़ा काम का	3	पर्यावरण अपना परिवेश	8	जल ही जीवन का आधार	10	सामाजिक विज्ञान	12	मानव संसाधन
12.02.2021	शुक्रवार	मधुमक्खी का छत्ता	8	सामाजिक विज्ञान	1	भारतीय संविधान	12	हिन्दी अनिवार्य सृजन	4	बिहारी
13.02.2021	शनिवार	ट्राफी का राज	6	सामाजिक विज्ञान–1	1	विविधता की समझ	10	संस्कृत स्पन्दना	11	स्वदेश कथ रक्षेयम्
15.02.2021	सोमवार	जरा सुनो ना	8	संस्कृत	4	सदैव पुरतो निधेहि चरणम्	10	हिन्दी क्षितिज काव्य	7	सूर्य कान्त त्रिपाठी निराला अभी ना होगा अन्त मातृ वंदना
16.02.2021	मंगलवार	कृष्णा की किताबें	4	पर्यावरण अपना परिवेश	15	हमारे गौरव–2	12	अर्थशास्त्र–समष्टि	18	व्यापारिक बैंक, अर्टा, कार्य एवं महत्त्व
17.02.2021	बुधवार	नदी के किनारे	7	विज्ञान	7	मौसम एवं जलवायु	10	हिन्दी क्षितिज–2	3	स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन
18.02.2021	गुरुवार	भाग सुनीता भाग	6	संस्कृत रूचिरा–1	3	शब्द परिचय (नपुसंकलिंग)	10	संस्कृत स्पंदना	12	मरू सौंदर्यम
19.02.2021	शुक्रवार	आज की ताजा खबर	7	सा.वि.–हमारे अतीत–2	3	दिल्ली के सुल्तान	12	जीव विज्ञान	3	परागण, निषेचन भ्रूणपोष व भ्रूण का परिवर्धन
20.02.2021	शनिवार	दौड़	7	हिन्दी बसंत भाग–2	15	नीलकंठ	10	सामाजिक विज्ञान	11	विनिर्माण
22.02.2021	सोमवार	हाथ बढ़ाओं	8	हिन्दी	12	सुदामा चरित (कविता)	12	भूगोल	1	मानव भूगोल प्रकृति व विषय क्षेत्र
23.02.2021	मंगलवार	जरा बचके	8	विज्ञान	7	पौधे एवं जंतुओं का संरक्षण	12	इतिहास	6	आधुनिक स्वाधीनता आंदोलन
24.02.2021	बुधवार	पर्ची उड़ाओ	5	हिन्दी	6	स्वस्थ तन सुखी जीवन	10	विज्ञान	4	प्रतिरक्षा एवं रक्त समूह
25.02.2021	गुरुवार	तस्वीर बनाओ	4	हिन्दी	10	कूड़ेदान की कहानी अपनी जुबानी	12	अर्थशास्त्र–समष्टि	16	राष्ट्रीय आय का मापन
26.02.2021	शुक्रवार	हरी भरी पढ़ाई	7	विज्ञान	10	जीवों में श्वसन	10	संस्कृत स्पन्दना	10	सुभाषित रत्नानि 9–15
27.02.2021	शनिवार	पॉकेटमार	6	संस्कृत	4	विद्यालय (निबन्ध)	12	हिन्दी साहित्य सरयु	14	मिठाई वाला (कहानी)

शिक्षा की गुणवत्ता

विद्यालयी शिक्षा का बदलता स्वरूप

❒ भगवान सिंह मीना

21 वीं शताब्दी की वैश्विक अर्थव्यवस्था ऐसे वातावरण में उन्नति कर सकती है जो रचनात्मकता एवं काल्पनिकता, विवेचनात्मक सोच और समस्या के समाधान से संबंधित कौशल पर आधारित हो। अनुभव मूलक विश्लेषण शिक्षा और आर्थिक उन्नति के मध्य सुदृढ़ सकारात्मक संबंध होते हैं। देश में स्कूल जाने वालों की आयु 6-18 वर्ष के मध्य की 30.5 करोड़ (2011 की जनगणना के अनुसार) की विशाल जनसंख्या है, जो कुल जनसंख्या का 25% से अधिक है। यदि बच्चों को वास्तविक दुनिया का आत्मविश्वास से सामना करने की शिक्षा दी जाए तो भारत में इस जनसांख्यिकीय हिस्से की संपूर्ण सामर्थ्य का अपने लिए उपयोग करने की क्षमता है। संधारणीय विकास लक्ष्य 2030 को अंगीकार करने के बाद ध्यान माध्यमिक शिक्षा के स्तर तक 'गुणवत्ता के साथ निष्पक्षता' पर स्थानांतरित हो गया है। कुछ समय पहले देश के प्रधानमंत्री ने अपने एक उद्बोधन में गुणवत्ता के महत्त्व पर इन शब्दों में जोर दिया था- अब तक सरकार का ध्यान देश भर में शिक्षा के प्रसार पर था किंतु अब वक़्त आ गया है कि ध्यान शिक्षा की गुणवत्ता पर दिया जाए। अब सरकार को स्कूलिंग की बजाय ज्ञान पर अधिक ध्यान देना चाहिए। स्कूलिंग की बजाय ज्ञानार्जन पर ध्यान स्थानांतरित करने का अर्थ इनपुट से नतीजों पर ध्यान देना होगा।

राज्य सरकारों की साझेदारी के साथ केंद्र द्वारा प्रायोजित एवं भारत सरकार द्वारा कार्यान्वित सर्व शिक्षा अभियान (एसएसए.) ने प्रारम्भिक शिक्षा को सर्वव्यापी बनाने में यथेष्ट सफलता पाई है साथ ही राज्य के विद्यालयों में समग्र शिक्षा अभियान के माध्यम से संबल मिला है। आज देश के 14.5 लाख प्राथमिक विद्यालयों में 19.67 करोड़ बच्चे दाखिल हैं। स्कूली शिक्षा को बीच में छोड़ कर जाने की दर में यथेष्ट कमी आई है, किंतु यह अब भी प्राथमिक स्तर पर 16% एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर 32% बनी हुई है, जिसमें उल्लेखनीय कमी करना आवश्यक है। राज्य ने स्कूलिंग में निष्पक्षता एवं अभिगम्यता सुनिश्चित करने के मामले में अच्छा प्रदर्शन किया है। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एनएएस.) की पाँचवी कक्षा के छात्रों की एक ताज़ा रिपोर्ट के मुताबिक पढ़ पाने की समझ से जुड़े प्रश्नों के आधे से अधिक प्रश्नों के सही जवाब दे पाने वाले छात्रों का प्रतिशत बेहतर है। विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता के स्तर को सुधारने के लिए केंद्र एवं राज्य दोनों सरकारें नवीन व्यापक दृष्टिकोणों एवं रणनीतियों को बना रहे हैं। कुछ विशेष कार्य क्षेत्रों की बात करें तो अध्यापकों, कक्षा-कक्ष में अपनाई जाने वाली कार्य विधियों, छात्रों में ज्ञान के मूल्यांकन एवं निर्धारण, विद्यालयी अवसंरचना, विद्यालयी प्रभावशीलता एवं सामाजिक सहभागिता से संबंधित मुद्दों पर कार्य किया गया है।

शिक्षा का केंद्र अध्यापक : जहाँ बच्चे विद्यालयी शिक्षा का केंद्र होते हैं, बच्चों में ज्ञानार्जन सुनिश्चित करने में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका एक अध्यापक की होती है। सर्व शिक्षा अभियान की शुरुआत के साथ ही आरम्भिक कक्षाओं में अध्यापकों के पदों का सृजन किया गया है। इन पदों के लिए अध्यापकों की नियुक्ति से छात्र-शिक्षक अनुपात में 42:1 से 24:1 का सुधार हुआ है। वर्तमान में सरकारी विद्यालयों में नियमित अध्यापकों में से 85% व्यावसायिक रूप से योग्यता संपन्न हैं। प्रदेश में सभी अध्यापकों के पास अपेक्षित योग्यता है। सरकार आगामी 2-3 वर्षों तक प्रदेश के सभी अध्यापकों का पूर्णतया दक्ष होना सुनिश्चित करने के लिए तमाम कदम उठा रही है। सर्व शिक्षा अभियान एवं राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान योजनाओं, दोनों में अध्यापकों के ज़रूरत आधारित व्यावसायिक विकास के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इन प्रयासों को पूरा करने के लिए ऑनलाइन कार्यक्रमों की योजना भी है। जरूरत है कि विद्यालयी तंत्र प्रतिभाशाली युवाओं को अध्यापन के क्षेत्र में लाएँ, राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद ने चार वर्षीय समेकित बीए-बीएड एवं बीएससी-बीएड कार्यक्रमों की शुरुआत की है एवं श्रेष्ठ विद्यालयी तंत्र के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में ईमानदारी से रुचि रखने वालों का ध्यान आकर्षित करने के लिए इन कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है।

कक्षा-कक्ष में अपनाई जाने वाली कार्यविधियाँ: बच्चों में ज्ञान की समझ विकसित करने, कक्षा-कक्ष प्रबंधन, प्रभावी छात्र शिक्षक संवाद एवं निर्देशों की उत्तमता; संरचित अध्यापन एवं सीखने पर जोर देने वाली गतिविधियों के दृष्टिकोण से इन कार्यविधियों का सर्वाधिक महत्त्व है। आईसीटी समर्थित शिक्षण और अधिगम के संदर्भ में सीखने की प्रक्रिया के परिणामों में स्पष्ट रूप से प्रत्येक कक्षा और प्रत्येक विषय के लिए संभावित शिक्षण परिणामों पर विशेष रूप से ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है ताकि यह शिक्षकों, विद्यालय प्रमुखों के द्वारा आसानी से समझा जा सके और इसे माता-पिता और समुदाय के बीच व्यापक रूप से प्रचारित किया जा सके। गणित, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अध्ययन को रोचक और लोकप्रिय बनाने के क्रम में सरकार ने 2015 में राष्ट्रीय आविष्कार अभियान का शुभारंभ किया। इस पहल के माध्यम से विद्यालयों के पास आईआईटी और एनआईटी जैसे संस्थानों से परामर्शदाता के तौर पर अनुभव प्राप्त करने के अवसर होते हैं। हाल ही में प्रारंभ किए गए अटल अभिनव अभियान और अटल टिंकरिंग लैब से छात्रों के बीच महत्त्वपूर्ण विश्लेषण, सृजनात्मकता और समस्या को सुलझाने जैसी गतिविधियों को बल मिलेगा। राज्य के सभी सरकारी माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालयों को आईसीटी से लैस किया जा रहा है ताकि बच्चों को पढ़ाने में आईसीटी का लाभ लिया जा सके और उनमें सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ी साक्षरता में भी सुधार किया जा सके। द नेशनल रिपोजिटरी ऑफ ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेस

(एनआरओईआर) और हाल ही में प्रारंभ किया गया ई-पाठशाला विद्यालय शिक्षा और शिक्षक शिक्षा के सभी स्तरों पर सभी डिजिटल और डिजिटल योग्य संसाधनों को एक साथ एक मंच पर ला रहा है। जिसमें दीक्षा एप्प के माध्यम से प्रशिक्षण कार्य प्रमुख है।

मूल्यांकन और आकलन : एक छात्र की अध्ययन प्रगति का आकलन करना शिक्षक की प्राथमिक भूमिकाओं में से एक है। कक्षा में छात्रों के नियमित और निरंतर मूल्यांकन से अभिप्राय बच्चों और माता-पिता को प्रतिक्रिया देना, शिक्षक को प्रतिक्रिया और बच्चों के बीच अध्ययन समस्याओं के समाधान के लिए हल निकालना है। अध्ययन मूल्यांकन तंत्र पर आधारित एक शैक्षिक वातावरण वाली कक्षा में ये सुनिश्चित किया जा सकता है कि शिक्षक और छात्र दोनों ही सीखने पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हमें क्या मूल्यांकन करना है? तथा इसमें क्या सुधार किया जा सकता है? छात्र अपने अध्ययन में कितनी प्रगति कर रहे हैं? और इसके साथ-साथ शिक्षा के संपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने के मामले में व्यवस्था का निष्पादन कैसा है? जैसे मुद्दों के लिए मूल्यांकन पर आधारित कक्षा के साथ व्यापक स्तर पर उपलब्धि सर्वेक्षण को जानने की भी आवश्यकता होती है। सरकार ने एक प्रक्रिया की पहल की है जिसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण के माध्यम से बच्चों का मूल्यांकन किया जाएगा। इसमें सरकारी विद्यालयों, सरकार से सहायता प्राप्त विद्यालय और निजी विद्यालय शामिल होंगे। इस सर्वेक्षण का प्राथमिक प्रायोजन निर्धारित अध्ययन लक्ष्यों की तुलना में छात्रों के प्रदर्शन को समझने के लिए विद्यालयों को एक अवसर प्रदान करना है। परिणामों के आधार पर विद्यालय सीखने के स्तर में सुधार करने के लिए एक विद्यालय स्तर की योजना तैयार करेंगे। इस तरह के सर्वेक्षण से शिक्षण परिणामों को सुधारने की दिशा में एक सकारात्मक परिवेश तैयार होगा। शिक्षकों और छात्रों की प्रतिक्रियाएँ शीघ्रता से मिलेंगी ताकि वे शिक्षण अंतरालों के समाधान के लिए समय से कार्रवाई कर सकें तथा एक समयावधि के भीतर छात्रों के प्रदर्शन को समझ सकें और शैक्षिक व्यवस्था की स्थिति के बारे में पाठ्यक्रम निर्माताओं, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों शैक्षिक प्रशासकों को एक व्यवस्थित प्रतिक्रिया प्रदान कर सकें। यह शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए आवश्यक है।

विद्यालय शिक्षा में सामुदायिक भागीदारी और विकेन्द्रीकरण की भूमिका : एक व्यापक और विविधता से भरे देश में निर्णय लेना और जवाबदेही का विकेन्द्रीकरण ही सफलता की कुंजी है। विद्यालय शिक्षा के मामले में समुदाय विद्यालय प्रबंधन समितियों के माध्यम से विद्यालय प्रबंधन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अब तक इन समितियों को विद्यालय भवन के निर्माण जैसी गतिविधियों के प्रावधानों में शामिल किया जा चुका है। इससे आगे बढ़ते हुए विद्यालय समितियों को मजबूत किये जाने की आवश्यकता होगी ताकि वे बच्चों के शिक्षण के लिए विद्यालय की जवाबदेही पर भी अपना नियंत्रण कर सकें। माता-पिताओं और एसएमसी सदस्यों को कक्षावार शिक्षण लक्ष्यों के प्रति जागरूक रहने की आवश्यकता होगी। एसएमसी बैठक, सामाजिक अंकेक्षण अथवा विद्यालय शिक्षा पर ग्राम सभा बैठकों जैसे प्रयासों को भी विद्यार्थी के अध्ययन से जोड़ने और उनका मूल्यांकन करने की आवश्यकता होगी। यह सुनिश्चित करने के लिए कि माता-पिता और समुदाय के सदस्य आगे कदम बढ़ाते हुए अपने बच्चों के शिक्षण के लिए विद्यालयों की जवाबदेही पर नियंत्रण बना सकते हैं इसके लिए भाषा को आसानी से समझने के लिए शिक्षण लक्ष्यों को कक्षावार तैयार करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। इस अभियान में सरकार, नागरिक सामाजिक संगठन, विशेषज्ञों, माता-पिता, समुदायिक सदस्यों और बच्चों सभी के प्रयासों की आवश्यकता होगी।

विद्यालय प्रभावशीलता : विद्यालयों के प्रभावी ढंग से प्रदर्शन के लिए विद्यालय प्रमुख का सशक्तिकरण महत्त्वपूर्ण है। विद्यालयों का विभिन्न आयामों में निरंतर मूल्यांकन किए जाने की आवश्यकता है ताकि सुधार की आवश्यकता का समावेशन किया जा सके। राजस्थान में सम्बलन बेहतर उदाहरण है। एनयूईपीए द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर शाला सिद्धि नामक एक व्यापक विद्यालय मूल्यांकन प्रारूप को तैयार किया गया है और नवंबर 2016 में इसका शुभारंभ कर दिया गया है। यह आत्म-मूल्यांकन और तीसरे पक्ष के मूल्यांकन का एक घटक है। अपनी सुधार योजनाओं को कार्यान्वित करने और उन्हें बनाने के लिए विद्यालयों के द्वारा आत्म-मूल्यांकन का उपयोग किया जाएगा।

छात्रों और शिक्षकों का सक्षम आधार डाटा बनाने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं। इससे बच्चों के एक कक्षा से अगली कक्षा में जाने की प्रक्रिया पर निगरानी रखी जाएगी और इस प्रकार से स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की पहचान के लिए प्रणाली को सक्षम बनाया जाएगा और यह सुनिश्चित किया जाएगा कि सभी पात्र बच्चे मध्याह्न भोजन, पाठ्य पुस्तकें और छात्रवृत्तियों को प्राप्त करने के साथ-साथ छात्र और शिक्षक की उपस्थिति की निगरानी भी की जाएगी।

विद्यालयी बुनियादी ढांचा : सर्व शिक्षा अभियान और राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान के अंतर्गत विभिन्न हस्तक्षेपों के माध्यम से विद्यालयी बुनियादी ढांचे के प्रावधानों के तहत उल्लेखनीय प्रगति की गयी है। एसएसए के प्रारंभ होने के बाद से प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के लिए विद्यालय भवन तैयार किए गए हैं। प्रत्येक विद्यालय में छात्राओं और छात्रों के लिए एक-एक पृथक कार्यात्मक शौचालय स्वच्छ विद्यालय पहल के अंतर्गत निर्मित किया जा चुका है। शौचालयों को स्वच्छ, कार्यात्मक और बेहतर बनाए रखने को सुनिश्चित करने की दिशा में भी कदम उठाए जा रहे हैं। आज हम विद्यालयों को मात्र इमारतों और कक्षाओं के रूप में ही नहीं देखते हैं, बल्कि एक स्कूल में मूल शिक्षण स्थितियों के साथ-साथ इसमें बिजली की व्यवस्था, कार्यात्मक प्रयोगशाला और पठन स्थल, विज्ञान प्रयोगशालाएँ, कम्प्यूटर प्रयोगशालाएँ, शौचालय और मध्याह्न भोजन को पकाने के लिए एलपीजी कनेक्शन के रूप में भी देखते हैं। राज्य में वर्तमान में सभी प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों में बिजली, पानी आदि की भौतिक व्यवस्था उपलब्ध है। तभी हम कह सकते हैं कि विद्यालयी शिक्षा में भौतिक संसाधनों के साथ-साथ गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है।

व्याख्याता
राजकीय बालिका उच्च माध्यामिक विद्यालय
धौलपुर (राज.)-328001
मो: 7891330439

शैक्षिक चिन्तन

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा का महत्त्व

❒ रवि शंकर आचार्य

मानव तू मत फिक्र कर,
यश अपयश सम हव्य,
बल, धीरज, मन, बुद्धि से,
करता जा कर्त्तव्य।

वास्तव में मानव मूल्य, आदर्श और कर्त्तव्य ही नैतिक शिक्षा के मूल हैं, यही मनुष्य के चरित्र को संवारती है, सजाती है तथा पोषित करती है। नैतिक शिक्षा का तात्पर्य जो नीति की बातें बताए जो जीवन को अच्छा और सुन्दर बनाने के बारे में ज्ञान प्रदान करे। विश्व में भारतवर्ष ही एकमात्र देश है जहाँ धर्म एवं नीति को सर्वोपरी स्थान दिया जाता है। वेदों के अनुसार नीति का अर्थ आचरण है।

जब किसी समाज में अर्थ प्राप्ति ही परम लक्ष्य होता है तो शोषण की प्रवृत्ति जन्म लेती है। महर्षि दयानन्द के अनुसार जो धार्मिक, विद्वान, सत्यवादी, निष्कपटी के उपदेश के अनुकूल है वह ग्राह्य और जो विरुद्ध हो वह अग्राह्य है जिस प्रकार अपने सुख प्रिय एवं दुःख प्रिय हैं वैसे ही सर्वत्र समझना चाहिए यही भावना नैतिकता है। सच्चे धर्म एवं सच्ची नैतिकता का आधार चरित्रबल है, जो आत्मा के विकास से संभव है। अतः नैतिकता के गुण का विकास करने के लिए आत्मिक विकास आवश्यक है। सत्य के प्रति निष्ठा एवं असत्य के प्रति अनाकर्षण विवेक से ही संभव है और तभी नैतिकता का आचरण भी संभव है। भारत और यूरोप के नैतिक आदर्शों में बहुत अंतर है। कई मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि समाज या वर्ग के रीति-रिवाजों का पालन करना ही नैतिकता है। भारत संसार का गुरु रहा है, इसकी संस्कृति लाखों-करोड़ों वर्ष पुरानी है। ऐसा विश्व शिरोमणि देश भारत है परन्तु आज देश व समाज के बदलते परिवेश के परिप्रेक्ष्य में यह एक प्रश्न चिह्न बनता जा रहा है कि सद्-समाज के निर्माण हेतु विद्यार्थी वर्ग को किस प्रकार की धार्मिक व नैतिक शिक्षा दी जाए ताकि समुन्नत समाज का स्वरूप विकसित हो सके। आज यह आवश्यकता अनुभव की गई है कि हमारी मान्यताओं का जो स्खलन हो रहा है, सामाजिक जीवन में अनैतिकता दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। उसका मूल कारण नैतिक शिक्षा का अभाव है।

नैतिक शिक्षा का प्रश्न हमारे सामने नवीन नहीं है। आज शिक्षा का महत्त्व केवल पुस्तकीय ज्ञान मात्र है जो पुस्तकों में ढलता जा रहा है। आज विद्यार्थियों में व्याप्त अनुशासनहीनता, निराशा एवं हतोत्साह का प्रमुख कारण मानसिक एवं आध्यात्मिक अनुशासन का अभाव है। विद्यार्थियों में प्रारम्भ से ही चरित्र, शिक्षा और भक्ति की भावना जाग्रत करने के लिए नैतिक शिक्षा देना अत्यावश्यक है। नैतिक शिक्षा के बिना स्वस्थ समाज की कल्पना करना असंभव है। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा देने के लिए हमें प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर यह सोचकर प्रयास करने होंगे कि नैतिक शिक्षा की आज भी सबसे बड़ी आवश्यकता है। नैतिक शब्द 'नीति' शब्द से बना है। अतः मानवीय संबंधों का निर्वाह तथा उचित-अनुचित व्यवहार का विवेक ही नैतिकता है। शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास की कुंजी है जो व्यक्ति में नैतिक गुणों का विकास करती है तथा उसके चरित्र को उज्ज्वल बनाती है। नैतिक चरित्र का उचित विकास ही नैतिक शिक्षा है। समाज में जटिलताएँ एवं विकृतियाँ बढ़ती जा रही हैं। कुविचारों और दुर्भावनाओं के कारण नैतिकता समाप्त प्रायः हो गई है। हमारी प्राचीन परम्पराएँ जो नैतिक जीवन की नींव थी, जिसके कारण भारतवर्ष विश्वगुरु जाना जाता था, उन्हीं आदर्शों, मूल्यों, संस्कृति और नैतिकता की परिभाषा विपरीत दिशा में चलायमान है।

वर्तमान में युवा पीढ़ी पर विशेषकर छात्रों पर यह आरोप लगाया जाता है कि वे उच्छृंखल एवं अनुशासनहीन हो रहे हैं। शिक्षण संस्थाओं में, समाज में और सड़कों पर भी हमें उच्छृंखलता और अनुशासनहीनता दिखाई देती है। प्रश्न यह उठता है कि ऐसा क्यों हैं? कोई भी बालक जन्म से न अच्छा होता है और न बुरा उसका मस्तिष्क खाली कागज के समान होता है। जिस पर इबारत लिखने का दायित्व समाज का होता है, यह दायित्व सर्वप्रथम उसके परिवार का होता है। जिन बालकों को बचपन में अच्छे संस्कार मिल जाते हैं वे विपरीत परिस्थितियों में भी अपने उन संस्कारों को नहीं भूलते। संस्कारों को आगे सुधारने या बिगाड़ने का दायित्व शिक्षण संस्था का होता है जिसके मुख्यतः दो अंग हैं, प्रथम शिक्षा का पाठ्यक्रम और दूसरा उसको समझाने वाला शिक्षक। हमारी वर्तमान शिक्षा के पाठ्यक्रम में बालकों को केवल अक्षरज्ञान, सामान्य ज्ञान और विषय से संबंधित ज्ञान ही अधिक दिया जाता है, नैतिकता का ज्ञान नहीं। विद्यालय का वातावरण नैतिक विकास पर गहरा प्रभाव डालता है। इसका क्षेत्र परिवार की अपेक्षा व्यापक होता है। खेल के द्वारा, अनुशासन के द्वारा सामूहिक प्रयोजनों के द्वारा बालक में एक आदर्श नागरिक के गुणों का विकास किया जाता है। विद्यालय इस प्रकार नैतिक गुणों के विकास हेतु उत्तम स्थल है। विद्यालय के अलावा उस पर उसके मित्रों तथा संगी-साथियों का भी प्रभाव पड़ता है। समुदाय में रहने वाले बालकों में आत्मविश्वास तथा मित्रता की भावना पाई जाती है।

'संक्षेप में कह सकते हैं कि सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास, चरित्र का निर्माण, उचित मूल्यों का समावेश, अच्छे गुणों एवं अच्छी आदतों का विकास, संस्कृति का पोषण तथा सभ्यता की सुरक्षा हेतु नैतिक शिक्षा देना नितान्त आवश्यक है।'

वरिष्ठ सहायक
अनुभाग-ऑडिट आई.सी.पी.
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो: 9918342124

प्रेरणा स्तंभ

विद्यार्थियों का जीवन बदलता शिक्षक

❒ अरुण कुमार कैहरबा

भारत के एक प्राथमिक शिक्षक की उल्लेखनीय उपलब्धियों की चर्चा आजकल अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर हो रही है। महाराष्ट्र के सोलापुर जिले के पारितवाडी गाँव के जिला परिषद प्राथमिक स्कूल के 31वर्षीय शिक्षक रणजीत सिंह डिसले ने शिक्षा के नॉबेल पुरस्कार के रूप में प्रसिद्ध **ग्लोबल टीचर पुरस्कार–2020** प्राप्त किया है। पुरस्कार के रूप में उन्हें सात करोड़ रुपये की राशि मिली है। पुरस्कार के साथ–साथ वे इसलिए भी चर्चाओं में हैं कि इतनी बड़ी राशि का आधा हिस्सा उन्होंने अपने साथ शामिल हुए नौ अन्य उपविजेताओं में बाँटने का फैसला किया है। प्रतियोगिता में दुनिया के 140 देशों के 12 हजार से अधिक अध्यापकों ने हिस्सा लिया था। वर्की फाउंडेशन व यूनेस्को द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार की घोषणा लंदन में प्रसिद्ध अभिनेता स्टीफन फ्राई द्वारा की गई तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था। यह सम्मान प्राप्त करने वाले वे पहले भारतीय हैं।

अवार्ड से अधिक रणजीत डिसले के कार्य हैं, जो कि शिक्षा जगत को गौरवान्वित होने का अवसर देता है। उन्हें यह नामचीन अवार्ड लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए दिया गया है। पितृसत्तात्मक समाज में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने का कार्य इतना सरल नहीं होता है, जितना इसे कहा जाता है। ऐसा ही उस गाँव में भी था, जिसमें डिसले को शिक्षण कार्य का जिम्मा मिला था। वहाँ पर लड़कियों की कम उम्र में शादी कर दी जाती थी। बाल विवाह के कारण लड़कियों पर परिवार की जिम्मेदारियों का बोझ आ पड़ता था और पढ़ाई छूट जाती थी। नन्हीं उम्र में ही शादी कर दिए जाने के कारण स्कूल में आने वाली लड़कियों की भी पढ़ाई में रुचि नहीं बन पाती थी। रणजीत सिंह डिसले ने समाज की सोच और बाल विवाह की कुरीति पर समाज में व्यापक अलख जगाई। लोगों को कुरीति के दुष्प्रभावों के बारे में समझाया। यह कार्य भी इतना आसान नहीं रहा

होगा। कोई समाज जिन मूल्य–मान्यताओं में वर्षों से यकीन करता है, उन्हें आसानी से छोड़ता नहीं है। यदि उसके विपरीत कोई बोलता है तो उसके बारे में भी नकारात्मक धारणाएँ बना लेता है। डिसले बताते हैं कि 11 साल बाद अपने काम को देखता हूँ तो संतोष होता है। बाल विवाह पूरी तरह से खत्म हो गए हैं। लड़कियों की स्कूल में शत–प्रतिशत उपस्थिति रहती है। हालांकि उपस्थिति ही शिक्षा नहीं होती। लड़कियाँ अपने समाज में सुरक्षित महसूस करने लगी हैं। उनमें हौंसला और आत्मविश्वास आया है। शिक्षा सभी सामुदायिक व सामाजिक समस्याओं का हल है। चुनौतिपूर्ण क्षेत्रों में असर ही शिक्षा की कसौटी भी है।

शिक्षा के कार्य को सरल बनाने के लिए डिसले ने तकनीक का सहारा लिया। उन्हें क्विक रिस्पोंस कोड पर आधारित किताबों की क्रांति लाने का श्रेय दिया जाता है। उनके द्वारा इजाद की गई तकनीक को एनसीईआरटी ने भी स्वीकार किया। इस तकनीक के तहत उन्होंने विद्यार्थियों के लिए उपयोगी किताबों के हर अध्याय के अंत में क्यूआर कोड प्रकाशित किया। किताब की पाठ्य सामग्री पर उन्होंने दृश्य–श्रव्य सामग्री तैयार की। जिससे विद्यार्थियों का स्कैनिंग के जरिए डिजिटल सामग्री तक पहुँचना सरल हो गया। बच्चों को कम्प्यूटर–लैपटॉप आदि की मदद से पढ़ाया जाने लगा। शिक्षा को मनोरंजन और मनोरंजन को शिक्षा में बदलना डिसले के शिक्षण की खूबी है। वे खुद के द्वारा दी जाने वाली शिक्षा को **'एजूटेनमैंट'** कहते हैं। बच्चा पढ़ाई का मजा लेता है। वह उसके लिए बोझ नहीं रहती है। डिजीटल सामग्री की मदद से बच्चे दूसरों से स्पर्धा करने की बजाय अपनी गति से सीखते हैं।

मजेदार शिक्षा का असर यह हुआ कि स्कूल से बाहर रहने वाले विद्यार्थी स्कूल में खींचे चले आने लगे। स्कूल में बच्चों की संख्या बढ़ी। विद्यार्थियों का सीखना समझ से जुड़ा। जब डिसले ने 2009 में स्कूल में कार्य करना शुरू किया था, तब स्कूल की दशा बेहद खराब थी। स्कूल भवन टूटा था। स्कूल के एक तरफ पशु बांधे जाते थे, दूसरी तरफ गोदाम था। उन्होंने स्कूल की दशा बदलने के लिए अथक मेहनत की।

डिसले के प्रयासों का असर यह हुआ कि 2016 में उनके स्कूल को जिले के सर्वश्रेष्ठ स्कूल का दर्जा मिला। उनकी इस कामयाबी का जिक्र माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ सत्य नडेला ने अपनी पुस्तक 'हिट रिफ्रेश' में भी किया। 2016 में ही केन्द्र सरकार ने उन्हें **'इनोवेटिव रिसर्च ऑफ द ईयर'** पुरस्कार से सम्मानित किया। 2018 में नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन द्वारा उन्हें **'इनोवेटर ऑफ दा ईयर'** का पुरस्कार दिया।

डिसले 83 देशों में ऑनलाइन विज्ञान पढ़ाते हैं। वे एक अन्तर्राष्ट्रीय परियोजना चलाते हैं, जिसमें युद्ध सहित अनेक संघर्षशील क्षेत्रों के विद्यार्थी शांति की शिक्षा ग्रहण करते हैं। रणजीत सिंह डिसले के स्कूल के विद्यार्थी अन्य देशों के विद्यार्थियों के साथ अंग्रेजी में बेझिझक बातचीत करते हैं। इसके लिए उन्होंने मातृभाषा के महत्त्व को समझा और विद्यार्थियों को मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाया। उन्होंने किताबों का अनुवाद बच्चों की मातृभाषा में किया। फिर उन पर डिजीटल सामग्री तैयार की। मातृभाषा का मजबूत आधार मिलने के बाद अंग्रेजी भाषा सीखना भी आसान हो गया।

हमारे समाज में सरकारी स्कूलों को नकारात्मक ढंग से लिया जाता है। जबकि सरकारी स्कूल किसी से कम नहीं हैं। सरकारी स्कूलों के अध्यापक अपने स्कूलों को चमकाने

और विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए कई दिशाओं में मेहनत कर रहे हैं। डिसले की उपलब्धि इसका उदाहरण है। उन्होंने स्कूल को मनोरंजन का स्थान बना दिया। एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाते हुए विद्यार्थी आनंदित महसूस करते हैं। लैपटॉप, कम्प्यूटर, टीवी, फिल्में, गानें, कहानियाँ, कविताएँ, खेल खेलते हुए बच्चों को बोझ का कोई अहसास ही नहीं होता। शिक्षा को आनंद से जोडऩा ही आज की सबसे बड़ी जरूरत है। यदि शिक्षा बोझ बन जाएगी तो शिक्षा ही निरर्थक हो जाएगी।

यह भी हैरानी पैदा करने वाला है कि शिक्षण डिसले की पहली पसंद नहीं थी। वे इंजीनियर बनना चाहते थे। उन्होंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू की, लेकिन पूरा नहीं कर पाए। पिताजी की सलाह पर उन्होंने शिक्षण महाविद्यालय में दाखिला लिया। जिस शिक्षण महाविद्यालय में डिसले ने दाखिला लिया, उस महाविद्यालय के अध्यापक प्रशिक्षकों ने उसे पूरी तरह बदल दिया। वहाँ पर उन्होंने महसूस किया कि किस तरह अध्यापक परिवर्तनकर्ता है। वहाँ के अध्यापकों ने उनमें शिक्षण का जुनून भरा, उसी ऊर्जा का परिणाम है कि वे अपने स्कूल में बदलाव के लिए जुट गए।

वे चाहते हैं कि हर दिन उनके बच्चे उन्हें हँसते-खेलते दिखें। जब भी वे कक्षा में जाते हैं तो उनसे ऊर्जा ग्रहण करते हैं। बच्चों की खुशी उन्हें नया-नया करने के लिए प्रेरित करती है। डिसले ने कहा, 'टीचर बदलाव लाने वाले लोगों में से होते हैं, जो चॉक और चुनौतियों को मिलाकर अपने स्टूडेंट की जिंदगी बदलते हैं, इसलिए मैं यह कहते हुए खुश हूँ कि मैं अवार्ड की राशि का आधा हिस्सा अपने साथी प्रतिभागियों को दूँगा। मेरा मानना है कि साथ मिलकर हम दुनिया बदल सकते हैं क्योंकि साझा करने वाली चीज ही बढ़ती है। **शिक्षक इनकम के लिए काम नहीं करता आउटकम के लिए काम करता है।'** उन्होंने बताया कि पुरस्कार राशि के एक हिस्से से वे टीचर इनोवेशन फंड विकसित करेंगे ताकि अध्यापकों को कक्षा-कक्ष में नवाचारों को महत्त्व व मदद दी जा सके।

हिन्दी प्राध्यापक, स्तंभकार व लेखक
वार्ड नं.-4, रामलीला मैदान, इन्द्री,
जिला-करनाल, हरियाणा
मो: 9466220145

बाल-संरक्षण

बाल अधिकार

❒ पृथ्वीराज लेघा

अठारह साल से कम उम्र का हर व्यक्ति बच्चा है। बच्चे की देखरेख और पालन-पोषण की जिम्मेदारी बुनियादी तौर पर माँ-बाप के ऊपर होती है। राज्य प्रत्येक बच्चे के अधिकारों का सम्मान करता है और उन्हें साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है।

प्रतिष्ठा और अभिव्यक्ति: -

- मुझे अपने अधिकारों के बारे में जानने का हक है। (अनुच्छेद-42)
- बच्चा होने के नाते मुझे अधिकार मिले हैं। मैं कौन हूँ, कहाँ रहता हूँ, मेरे माँ-बाप क्या करते हैं, मेरी भाषा क्या है, मेरा धर्म क्या है, मैं लड़का हूँ या लड़की, मेरी संस्कृति कौनसी है। मैं विकलांग हूँ या नहीं, मैं गरीब हूँ या अमीर, इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता। किसी भी आधार पर मेरे इन अधिकारों को नहीं छीना जा सकता। सभी को यह बात जाननी चाहिए। (अनुच्छेद-2)
- मुझे अपनी राय स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का अधिकार है जिसे गंभीरता से लेना चाहिए। सभी की यह जिम्मेदारी है कि वे दूसरों की बात सुनें। (अनुच्छेद- 12,13)
- मुझे गलती करने का अधिकार है और सभी को मानना चाहिए कि हम अपनी गलतियों से सीखते हैं। (अनुच्छेद-28)
- मुझे सभी कार्यवाहियों में शामिल होने का अधिकार है, चाहे मेरी क्षमताएँ भिन्न हैं। सभी को दूसरों की भिन्न क्षमताओं का सम्मान करना चाहिए। (अनुच्छेद-23)

विकास

- मुझे अच्छी शिक्षा का अधिकार है और यह हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह सभी बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करे। (अनुच्छेद-23, 28,29)
- मुझे अच्छे स्वास्थ्य, चिकित्सा का अधिकार है और यह प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह औरों को भी बुनियादी स्वास्थ्य सेवा और पीने का साफ पानी मुहैया कराने में मदद करे। (अनुच्छेद-24)
- मुझे भरपेट खाने का अधिकार है और हर व्यक्ति की यह जिम्मेदारी है कि वह किसी को भी भूखा न मरने दे। (अनुच्छेद-24)
- मुझे स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार है और हर व्यक्ति की यह जिम्मेदारी है कि वह इसे प्रदूषित न करे। (अनुच्छेद-29)
- मुझे खेलने और आराम करने का अधिकार है। (अनुच्छेद-31)

देखभाल और सुरक्षा

- मेरा अधिकार है कि मुझे प्यार मिले और किसी भी तरह के दुराचार व नुकसान से मुझे बचाया जाए। हर एक की जिम्मेदारी है कि वह औरों की देखभाल करे व उनके साथ स्नेह भाव से रहे। (अनुच्छेद-19)
- मुझे सुरक्षित परिवार तथा आरामदेह घर का अधिकार है हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह इस बात का ख्याल रखे कि सभी बच्चों को परिवार और घर मिले। (अनुच्छेद-9,27)
- मुझे अपनी विरासत और मान्यताओं पर गर्व करने का अधिकार है। हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह औरों की संस्कृति व मान्यताओं का सम्मान करे। (अनुच्छेद-29, 30)
- मुझे हिंसा (मौखिक, शारीरिक व भावात्मक) के बिना जीवन जीने का अधिकार है। हर एक की जिम्मेदारी है कि वह किसी के साथ अत्याचार न करे। (अनुच्छेद-28, 37)
- मुझे आर्थिक और यौन शोषण से सुरक्षा का अधिकार है। हर एक की यह जिम्मेदारी है कि वह किसी भी बच्चे को काम पर न रखे और बच्चों को एक आजाद और सुरक्षित माहौल मुहैया कराए। (अनुच्छेद-32,34)
- मुझे किसी भी तरह के शोषण से सुरक्षा का अधिकार है। हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है कि वह इस बात का ख्याल रखे कि कोई किसी भी तरह से मुझे इस्तेमाल न करे और मेरा फायदा न उठाए। (अनुच्छेद-36)
- बच्चों से सम्बन्धित सभी कार्रवाहियों में बच्चों के हितों को प्राथमिकता दी जाएगी।

ये सारे अधिकार और जिम्मेदारियाँ संयुक्त राष्ट्र बाल अधिकार कन्वेंशन, 1989 में उल्लेखित हैं। इस कन्वेंशन में उन सारे अधिकारों को शामिल किया गया जो दुनिया भर के बच्चों को मिले हुए हैं। भारत सरकार ने इस दस्तावेज पर 1992 में दस्तखत किए थे।

कार्यक्रम अधिकारी समग्र शिक्षा,
अभियान, बीकानेर (राज.) **मो: 9929548840**

रिपोर्ट

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल के कक्षा 12 के परीक्षा परिणाम ''मीरा'' एवं ''एकलव्य'' पुरस्कारों की घोषणा

❒ मोहन गुप्ता 'मितवा'

राजस्थान स्टेट ओपन स्कूल द्वारा माह मई, 2020 के स्थान पर लॉकडाउन के कारण विलम्ब से सितम्बर 2020 में आयोजित कक्षा 12 का परीक्षा परिणाम शिक्षामंत्री श्री गोविन्द सिंह डोटासरा ने एस.एस.ए. सभागार में कम्प्यूटर पर क्लिक कर जारी किए। परिणाम 35.16 प्रतिशत रहा जो पिछले वर्षों के मुकाबले 0.34 प्रतिशत अधिक रहा। परीक्षा में कुल 60804 परीक्षार्थी पंजीकृत हुए जिनमें उत्तीर्ण होने वालों की संख्या 17584 रही इसमें महिलाओं की संख्या 9238 के मुकाबले पुरुष वर्ग 8346 ही उत्तीर्ण होने में सफल रहे।

डूंगरपुर की सार्राह टेलर ने महिला वर्ग में प्रथम स्थान एवं जालौर के कमलेश कुमार ने पुरुष वर्ग प्रथम स्थान प्राप्त कर क्रमशः ''मीरा'' एवं ''एकलव्य'' पुरस्कार का खिताब जीता इन्हें 21,000/- रु. का नकद पुरस्कार भी दिया जावेगा। माननीय शिक्षामंत्री ने इनसे मोबाईल फोन पर बात कर बधाई दी।

माननीय शिक्षामंत्री ने अपने उद्बोधन में दिव्यांग छात्रों को निःशुल्क शिक्षा दिए जाने की घोषणा की तथा सभी विवेकानन्द मॉडल विद्यालयों में प्री प्राइमरी कक्षा की शुरूआत किए जाने की बात भी कही।

प्रदेश में चयनित लगभग 50 मेघावी छात्रों को शिक्षा प्रन्यास योजना के अन्तर्गत हवाई सफर द्वारा शैक्षिक भ्रमण कराए जाने की घोषणा की।

श्री डोटासरा जी ने सरकार के ''दो साल... बेमिसाल! के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तिका होनहार राजस्थान का उल्लेख करते हुये विभाग में हुए चहुंमुखी एवं समग्र विकास की जानकारी भी इस अवसर पर दी। माननीय शिक्षामंत्री ने बताया कि भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा छात्रों में विज्ञान

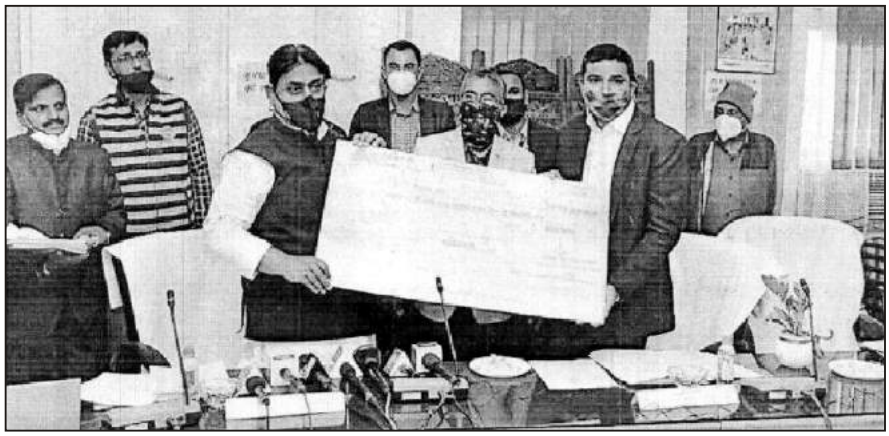

विषय में रुचि बढ़ाने हेतु आयोजित इन्सपायरड योजना के अन्तर्गत 29 प्रदेशों के शामिल छात्रों में राजस्थान के सर्वाधिक चयनित 8027 छात्रों के चयन तथा इन्सपायरड चयनित प्रत्येक छात्र के खाते में 10,000 रुपये की राशि प्राप्त होने को शिक्षा विभाग के लिए गौरव की बात बताई। प्रदेश के विद्यालयों में एन.सी.ई.आर.टी. सलेबस लागू किया जाना, स्माईल कार्यक्रम के द्वारा छात्रों को वाट्सअप के माध्यम से शिक्षण कार्य कराया जाना छात्रों के समग्र विकास हेतु प्रत्येक शनिवार 'नो बेग डे' मनाकर सहशैक्षिक गतिविधियों को प्रोत्साहित करना, कक्षा 1 से 5 तक के लगभग 40 लाख छात्रों को निःशुल्क कार्य पुस्तिका वितरित किए जाने का भी उल्लेख किया। विद्यालयों में गुणवत्ता शिक्षा के स्तर में उल्लखित वृद्धि हुई है। पूरे देश में राजस्थान का गुणवत्ता शिक्षा में तृतीय स्थान आंका गया है।

प्रदेश में 160 विद्यालयों का शहीदों के नाम पर नामकरण किया जाकर शहादत को सम्मान देते हुए छात्रों में देशभक्ति भावना व शहीद परिवार को सम्मान दिए जाने की जिक्र भी किया।

प्रदेश में 201 महात्मा गाँधी अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों में 68,540 छात्रों का नामांकन होना तथा लॉक डाउन के कारण भारी आर्थिक मंदी के फलस्वरूप राजस्व घाटे के बावजूद प्रारंभिक शिक्षा में 26,789 एवं माध्यमिक शिक्षा में 25,249 कुल 52,038 शिक्षकों की भर्ती किया जाना भी बहुत बड़ी उपलब्धि बताया।

समारोह में स्टेट ओपन स्कूल के निदेशक श्री मुकेश मीना ने मुख्यमंत्री सहायता कोष के लिए पाँच करोड़ पिचासी लाख का चैक भी शिक्षामंत्री को भेंट किया। ओपन स्कूल की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी देते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

समारोह में शिक्षा परिषद के अधिकारीगण एवं स्टेट ओपन सचिव श्री महेश कुमार उपस्थित रहे।

धीरज रखने वाला इंसान आत्मविश्वास की नाव पर सवार होकर मुशीबत की हर नदी को पार कर लेता है।

मितवा स्टूडियो,
नाहरगढ़ रोड, जयपुर
मो. 9414265628

नैतिक शिक्षा

किशोरों के जीवन में हस्तक्षेप की सीमा

❒ सीताराम गुप्ता

जहाँ तक किशोरावस्था का प्रश्न है यह अत्यंत संवेदनशील अवस्था होती है। अपने किशोर पौत्र-पौत्रियों की पढ़ाई-लिखाई अथवा उनके भविष्य को लेकर घर के बुजुर्गों की चिंता स्वाभाविक है लेकिन उम्र के आखिरी पड़ाव पर पहुँचने के बाद इसकी मुख्य चिंता बच्चों के माता-पिता पर छोड़ देनी चाहिए और जहाँ बहुत जरूरी अथवा अपेक्षित हो वहीं अपनी राय व्यक्त करनी चाहिए। उनकी शिक्षा-दीक्षा और कॅरियर के विषय में उनके माता-पिता अपेक्षाकृत अधिक उचित निर्णय ले सकते हैं। उनको माँगने पर सलाह दी जा सकती है लेकिन उनके निर्णयों को बदलने अथवा उनमें कमी निकालने का प्रयास किसी भी दृष्टि से उचित प्रतीत नहीं होता। वैसे भी आज कॅरियर के क्षेत्र में बहुत परिवर्तन हो चुके हैं अत: समय के अनुसार कॅरियर के सही चयन के विषय में वे स्वयं अधिक जानते हैं। आज के जमाने की तुलना अपने ज़माने से करना तो किसी भी तरह से उचित नहीं ठहरता। समय के साथ हर चीज़ बदलती है इस बात को अच्छी तरह से जान लेना और स्वीकार कर लेना चाहिए।

समय के साथ-साथ नई पीढ़ियाँ भी बदल जाती हैं। उनकी सोच पुरानी पीढ़ियों की सोच जैसी नहीं हो सकती। होनी भी नहीं चाहिए। यदि नई पीढ़ी की सोच में समयानुसार अपेक्षित परिवर्तन नहीं होगा तो वो आगे बढ़ने की बजाय पिछड़ जाएगी। नई पीढ़ी की सोच ही नहीं उनका खानपान, पहनावा व आदतें सब बदल जाते हैं जो अत्यंत स्वाभाविक है। उनकी दिनचर्या, खानपान व पहनावे को लेकर ज्यादा टोकाटोकी करना अथवा हर बात में हस्तक्षेप करना किसी भी तरह से उचित नहीं। विशेष रूप से उनके मित्रों अथवा अपने परिचितों या रिश्तेदारों की उपस्थिति में। उनके स्वास्थ्य के विषय में चिंता व्यक्त की जा सकती है लेकिन उनकी शारीरिक बनावट अथवा देहदृष्टि के विषय में नकारात्मक टिप्पणी करके नहीं। यदि हम किसी बच्चे से कहें कि ये क्या गैंडे जैसा शरीर बना रखा है तो निश्चित रूप से वो हमसे दूर-दूर रहने और हममें कमियाँ निकालने का प्रयास करेगा। हमारी बातों से किसी भी कीमत पर बच्चे के स्वाभिमान को ठेस नहीं पहुँचनी चाहिए।

जो बच्चे घर से बाहर रहकर पढ़ाई करते हैं वे छुट्टियों में अथवा बीच में जब कभी भी घर के सदस्यों से मिलने अथवा छुट्टियाँ बिताने के लिए घर आएँ तो उनकी हर बात में हस्तक्षेप करने या उन्हें हर बात पर प्रवचन देने से वे घर आनाजाना कम कर देते हैं जो दोनों के लिए ही ठीक नहीं। माना कि हम अत्यंत सात्त्विक भोजन करते हैं और हमारी दिनचर्या भी आदर्श और व्यवस्थित रहती है लेकिन बाहर पढ़ने वाले बच्चों के लिए यह संभव नहीं हो पाता। आजकल स्टूडेंट्स पर पढ़ाई का बड़ा प्रेशर रहता है। रात-रात भर जागकर पढ़ने वाले बच्चों के लिए ब्रह्म मुहूर्त्त में उठकर स्नान-ध्यान करना कैसे संभव है? हम अपने बच्चों को डॉक्टर अथवा इंजीनियर बनाना चाहते हैं लेकिन साथ ही ये भी चाहते हैं कि उनकी दिनचर्या गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों जैसी हो जो असंभव है।

हमें परिवर्तित समय में परिस्थितियों के अनुसार होने वाले परिवर्तन को स्वीकार कर लेना चाहिए अन्यथा ये हमारे लिए ठीक नहीं होगा। यदि हम बच्चों पर अपनी पसंद थोप देंगे तो इसकी संभावना अधिक है कि वे अपने पीयर ग्रुप में उपहास के पात्र बन जाएँ। इससे उनके व्यक्तित्व का विकास बुरी तरह से प्रभावित हो सकता है जो हर तरह से उनकी उन्नति में बाधक होगा। यदि बच्चे गलतियाँ करते हैं तो भी निराश होने की जरूरत नहीं क्योंकि गलतियों से भी वे सीखते हैं। यदि बच्चों की गलतियों से परेशान होकर उन्हें टोकते व कुछ नया करने से रोकते रहेंगे तो वे बहुत अधिक नया नहीं सीख पाएँगे।

प्रश्न उठता है कि बच्चों के मामले में माता-पिता अथवा बुजुर्गों की भूमिका क्या हो? वे किस सीमा तक उनके जीवन में हस्तक्षेप करें? बच्चों से यहाँ तात्पर्य किशोरों और युवाओं से है। बच्चे अथवा पौत्र-पौत्रियाँ चाहे वे स्कूल-कॉलेज में पढ़ रहे हों अथवा अन्य किसी प्रकार का प्रशिक्षण ले रहे हों या किसी व्यवसाय अथवा सेवा में जा रहे हों बुजुर्गों की महत्त्वपूर्ण भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता लेकिन उनकी भूमिका फिलर की तरह होनी चाहिए। पत्र-पत्रिकाओं में विभिन्न रचनाओं अथवा आलेखों के अंत में कई बार कुछ जगह बच जाती है। संपादक उन स्थानों पर छोटी-छोटी रचनाएँ, प्रेरक प्रसंग, दोहे अथवा शेर आदि डाल देते हैं। मजे की बात तो ये है कि कई बार ये संक्षिप्त प्रस्तुतियाँ मुख्य रचनाओं से भी महत्त्वपूर्ण और उपयोगी होती हैं। मैंने इन्हें हमेशा ही रोचक व ज्ञानवर्धक पाया। यदि हम बच्चों के जीवन में हस्तक्षेप के मामले में अपनी भूमिका फिलर्स की रखें और अच्छे फिलर्स की रखें तो बच्चे न केवल हमारी ओर ध्यान देंगे अपितु हमारी बातों से लाभांवित भी होंगे।

हम उनके जीवन के उन हिस्सों को प्रभावित करें जिनका पाठ्यक्रमों में कोई स्थान नहीं अथवा जो अन्य किसी कारण से उपेक्षित रह जाते हैं। जब वे चलते हुए किसी दोराहे पर आकर भ्रमित होकर रुक जाएँ अथवा कोई गलती कर बैठें तब उनका मार्गदर्शन करें व उन्हें सही मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों की पसंद को महत्त्व दें और उनकी पसंद में अपनी पसंद जोड़ दें। बच्चों की आलोचना करने की बजाय उनकी अच्छी आदतों को रेखांकित करके इनके लिए उनकी प्रशंसा करें। आज बच्चे ऐसा बहुत कुछ जानते हैं जो हम बिल्कुल नहीं जानते। उनकी नई-नई जानकारियों और ज्ञान को न केवल महत्त्व दें अपितु उनसे कुछ नया सीखने का भी प्रयास करें। इससे उन्हें अच्छा लगेगा और वे हमारे और अधिक निकट आने लगेंगे। इससे हमारे आपसी संबंधों में तनाव की अपेक्षा प्रगाढ़ता उत्पन्न होगी। यदि किशोरों से हमारे संबंधों में आत्मीयता और विश्वास होगा तो वे हमारी बातों को भी अवश्य महत्त्व देंगे।

ए डी-106-सी, पीतम पुरा, दिल्ली-110034
मो: 9555622323

स्कूली शिक्षा और खेलकूद

खेलोगे तो बनोगे स्वस्थ

❐ सुनिता पंचारिया

खेलकूद का इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि पृथ्वी पर मानव जीवन। खेल बच्चों के लिए शिक्षा प्राप्ति का एक आसान व लोकप्रिय साधन है। प्राचीन काल से लेकर आज तक एथेंस इतिहास से लेकर वर्तमान तक सभी शिक्षाविद् खेल को मान्यता प्रदान करते हैं कि स्वस्थ शरीर की रचना खेल जगत से कहीं अलग नहीं है तभी तो हमारे यहाँ पर कहा गया है 'शरीर माध्यम खलु धर्मसाधनं' अर्थात स्वस्थ शरीर के होने पर ही व्यक्ति सभी प्रकार के साधन से संपन्न होता है। खेलों से केवल शरीर ही नहीं वरन् मन और मस्तिष्क का विकास भी होता है इसलिए कहा गया है स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। शारीरिक शिक्षा व शक्ति के बिना शिक्षा अपने आप में पंगु है। खेलकूद व्यक्ति के जीवन का एक अहम हिस्सा है, एक अभिन्न अंग है। शिक्षा का अर्थ यह कदापि नहीं है कि केवल बच्चा किताबी क्रीड़ा बने बल्कि इसके अंतर्गत खेलकूद का ज्ञान भी होना आवश्यक होता है। शिक्षा का अर्थ मानसिक विकास के साथ-साथ शारीरिक विकास करने से भी होता है शिक्षा और खेलकूद एक दूसरे के पूरक हैं। एक दूसरे के बिना इनका कोई महत्त्व नहीं रह जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि दोनों एक दूसरे के बिना अपंग हैं इसी संदर्भ में शिक्षा की परिभाषा गाँधीजी ने इस प्रकार दी है- **'शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक या मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क, आत्मा का सर्वांगीण एवं सर्वोत्तम विकास से है।'** अरस्तु के अनुसार **'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करना ही शिक्षा है'** उक्त परिभाषाओं से भी यही पता चलता है शिक्षा केवल किताबी ज्ञान नहीं वरन् शारीरिक व मानसिक विकास भी है।

प्रभाव-खेल व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में अहम भूमिका निभाते हैं। भाईचारा, मैत्री, एकता, निस्वार्थ, एकाग्रता, टीम वर्क आदि गुण जो वह किताबों से सीखते हैं और इन्हीं गुणों को वह खेलों में अपनाते हैं। खेलों में भाग लेने से प्रतिस्पर्धा की भावना सद्भावना व सकारात्मक चीजों की ओर अग्रसर होते हैं साथ ही व्यक्ति पढ़ाई में भी अपनी ओर से बेहतरीन करने लग जाता है। खेल खेलने से व्यक्ति अपने जीवन में अनुशासन प्रिय हो जाता है। खेलों से बच्चों में सोचने समझने की शक्ति में वृद्धि होती है जिसका उपयोग बच्चे अपनी पढ़ाई लिखाई या हम यूं कहें कि लेखन अभिव्यक्ति में प्रदर्शित करते हैं। खेलों से भविष्य का निर्माण होता है और उसे वह जीविकोपार्जन का साधन भी बना सकता है। खेल केवल मनोरंजन का साधन नहीं वरन अनेक गुणों की खान होता है। खेल विद्या अर्जन की दृष्टि से व स्वविकास की दृष्टि से दोहरा लाभ का उपागम है।

टी पीनन व मेक्डुगल का मत है कि खेल बाल जीवन में संरक्षा, अभिवृद्धि और विकास, आनंद, स्फूर्ति, रचनात्मकता एवं जीवन मूल्यों के स्वाभाविक विकास के आधार है।

खेल में व्यक्ति हार व जीत को खुशी-खुशी स्वीकार करने जैसी बातें जीवन में समाहित करना सीखता है। राष्ट्र के विकास के लिए भी खेल अत्यंत लाभदायक है इससे राष्ट्रीय एकता की भावना प्रबल एवं सुदृढ़ होती है।

आवश्यकता- शिक्षा को रोचक सरल सरस, तीव्रगामी, बेहतरीन बनाने के लिए खेलों की अत्यधिक आवश्यकता है। बच्चा दिन भर पढ़ाई करता है तो वह तनावग्रस्त हो जाता है लेकिन खेल तनावमुक्त वातावरण प्रदान करता है। व्यक्ति अपनी कमियाँ व अच्छाई को पहचानने लग जाता है और कमी को दूर करने का प्रयास करता है। खेलकूद से व्यक्ति का मस्तिष्क अच्छा कार्य करने लगता है पढ़ने में भी रुचि जाग्रत होती है इससे वह स्वस्थ एवं तनावमुक्त वातावरण में पढ़ाई करने लगता है इससे बच्चों के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भी इसी बात पर जोर दिया गया है कि बच्चों को पुस्तकों की अपेक्षा खेलों के माध्यम से शिक्षा दी जाए ताकि बच्चे खेल-खेल में जीवन के सभी मूल्यों को सीख कर अपने जीवन में अपना सकें। तभी तो शिक्षण विधियों में खेल आधारित विधियों का बाहुल्य है। जिसे हम शिक्षा में खेल पद्धति भी कहते हैं।

अच्छे स्वास्थ्य व शारीरिक विकास के लिए दौड़ना, कबड्डी, टेनिस, हॉकी, फुटबॉल, क्रिकेट, जिम्नास्टिक, योगाभ्यास आदि से बहुत अच्छा व्यायाम होता है। इनमें कुछ खेल आउटडोर और कुछ गेम इंडोर होते हैं। कैरम, शतरंज, टेबल टेनिस आदि। खेलों में अच्छे स्थान प्राप्त करने पर खिलाड़ी की संभ्रांत व संपन्न व्यक्तियों की श्रेणी में गिनती होती है। इससे वह अपने गाँव, शहर और देश का नाम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रोशन करता है साथ ही इन खिलाड़ियों को सरकारी सुविधाएँ एवं प्रोत्साहन दिया जाता है। सरकारी नौकरियों में स्थान दिया जाता है जैसे विजेंद्र सिंह मुक्केबाज कांस्य पदक विजेता है जो वर्तमान में हरियाणा पुलिस में डीजीपी के पद पर है। ऐसे उदाहरण बच्चों को देने चाहिए।

अतः हम कह सकते हैं कि खेल व्यक्ति के जीवन में उतना ही जरूरी है जितना शरीर के लिए भोजन, शरीर को नई ऊर्जा देने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार शरीर को ऊर्जा देने के लिए खेल की आवश्यकता होती है बच्चों को खेल के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खिलाड़ियों से परिचय भी करवाना चाहिए ताकि वह उनसे प्रेरणा ले और खेल के क्षेत्र में अपना नाम रोशन कर सकें जैसे कुश्ती में सुशील कुमार क्रिकेट में सचिन तेंदुलकर, सौरव गांगुली, लॉन टेनिस में सानिया मिर्जा, निशानेबाजी में राज्यवर्धन सिंह राठौड़ अभिनव बिंद्रा, जसपाल राणा, भार तोलन में कर्णम मल्लेश्वरी, हॉकी में मेजर ध्यानचंद और धनराज पिल्ले आदि।

वैदिक काल में भी हमारे पूर्वजों ने 'पहला सुख निरोगी काया' माना है अतः स्वस्थ शरीर के लिए खेलों का होना अत्यंत आवश्यक है ।

शिक्षक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय
जूना, गुलाबपुरा **मो: 9251775153**

स्वास्थ्य विशेष

निरोगी काया

❒ शकुन्तला वैष्णव

कभी-कभी बड़े बुजुर्गों द्वारा कथित कहावतें एवं लोक प्रचलित लोकोक्तियाँ सुनने में तो अटपटी सी लगती है। लेकिन उन पर गहराई से चिन्तन किया जाए तो ये सब जीवन की सत्यता को प्रकट करती ही हैं, व्यक्ति को जीवन में प्रेरणा प्रदान करती हैं, साथ ही जीवन की सार्थकता को भी सिद्ध करती हैं।

मुझे भी ठीक से तो याद नहीं कि ये कहावत मैंने पहली बार कब सुनी या कहाँ पढ़ी थी, लेकिन आमतौर पर हम सभी सुनते आ रहे हैं 'पहला सुख निरोगी काया' अब प्रश्न ये है कि निरोग कौन? जो पूर्ण रूप से स्वस्थ है, किसी भी मौसम में उसके स्वास्थ्य पर कुप्रभाव नहीं पड़ता। शायद ही कोई भाग्यवान। कोई आधी से तो कोई व्याधि से ग्रसित है अर्थात किसी को मानसिक बीमारी (डिप्रेशन, टेन्शन) ने पकड़ा है तो कोई शारीरिक रोगों शुगर, बी.पी., अस्थमा से जकड़ा है। यत्र-तत्र सर्वत्र चिकित्सालयों में मरीजों की लम्बी कतार। महंगा और लम्बा इलाज।

क्या कभी हमने इसकी गहराई या तह तक जाने का प्रयास किया है? सोचते तो सभी हैं। जानते भी हैं और कुछ जानकर भी अन्जान हैं। किसी के मत से खान-पान बदल गया, किसी के मत से दिनचर्या बदल गई, किसी के मत से समय बदल गया, किसी के मत से भौतिक आवश्यकताएँ बढ़ गई तो किसी के लिए अर्थ (धन संचय) की होड़ मच गई। संयम-नियम और आहार-विहार जैसे शब्दों का स्थान मन-मस्तिष्क से रिक्त सा हो गया। नतीजा, हम आधी-व्याधि से ग्रसित हो गए और अनेक बीमारियों के शिकार हो गए। कारण, कुछ भी नहीं बदला हम ही बदल गए।

स्वास्थ्य के नियम जो भूल गए, आयुर्वेद पद्धति के अनुरूप वेदों में रचित लाभदायक एवं स्वास्थ्यवर्द्धक संदेश, सुने-अनसुने कर लिए गए।

अब विषय-वस्तु की तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूँगी- मुझे सुनकर हैरत होती है कि बच्चा सब्जी तो खाता ही नहीं, दाल तो छूता ही नहीं गुड की तरफ तो देखता ही नहीं दूध भी पीता ही नहीं। ये स्टेटमेंट है घरेलू महिलाओं के और कामकाजी (सर्विस क्लास) महिलाओं के भी जो माँ के रूप में अपनी पहचान कायम किए हुए हैं। सभी के लिए तो नहीं, लेकिन अधिकांश महिलाओं को माँओं के लिए ये परेशानी है हो सकता है स्वयं भी इनसे वंचित हो जरा सोचिए इसका जिम्मेदार कौन? क्या हमारे अलावा दूसरा कोई हो सकता है? कामकाजी महिलाओं के पास समय का अभाव है, घरेलू महिलाओं के पास घर का सारा काम थोड़ा आराम और फिर सभी के लिए मोबाइल का साथ और वाट्सऐप चैटिंग तो पहली प्राथमिकता बन गया। हमने समय निकालना होगा बच्चे को दाल पालक खिलाने के लिए, गुड़ का हल्वा बनाकर खिलाने हेतु, दूध जलेबी खिलाने की आदत डालनी होगी। फुर्सत निकालनी होगी, दूध में बादाम घिसकर केसर घोटकर पिलाने की, क्योंकि अब इनका स्थान तो मेघी, नूडल्स, पीजा, बर्गर, चाऊमीन ने जो ले लिया।

एक तरफ 80 वर्ष के दादाजी, नानाजी तो बिना चश्मे घर में अखबार पढ़ रहे हैं और दूसरी तरफ प्राथमिक स्तर का बच्चा पीठ पर बस्ता लादे आँखों पर झूलता चश्मा पहने हम सभी को दृष्टिगत हो रहा है। कोरोना जैसी भयानक महामारी ने सम्पूर्ण विश्व को एक झटके में स्तब्ध कर दिया। हर कोई काढ़ा पीने और पिलाने की कतार में खड़ा है। हल्दी के दूध का मंत्र सुबह शाम कानों में गुंजायमान है। चारों तरफ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के हर प्रयास जारी है, वही पुराने नुस्खे अपनाए जा रहे हैं, जो हमारे अग्रज 'निरोग धाम', 'चरक संहिता' पढ़कर बरसों पूर्व से अपनाया करते हैं।

शिक्षा से सुन्दर कोई शब्द नहीं, शिक्षा विभाग से बड़ा कोई विभाग नहीं और जहाँ असंख्य महिला शिक्षिकाएँ अपने-अपने स्तर पर कार्यरत हैं, उनमें बहुत सी स्काउट गाइड ऑर्गेनाइजेशन से जुड़ी फ्लॉक लीडर, गाइड कैप्टन, रेंजर लीडर एवं कमिश्नर्स के रूप में भी हैं। कईयों से सीधा सम्पर्क भी है। सभी माँ, बहन और पत्नी का रोल अदा कर रही हैं आने वाली पीढ़ी भी करेंगी।

आपके पास माँ सरस्वती और लक्ष्मी की भरपूर कृपा है, बल, बुद्धि और सम्पन्नता की आप धनी हैं। बालक की प्रारंभिक अवस्था से ही आपको उसके संतुलित आहार की तरफ ध्यान देना होगा। स्वास्थ्य और स्वाद के अन्तर को समझना और समझाना होगा। उसके साथ भरपूर मेहनत करनी होगी, उसे पौष्टिक भोजन कराना होगा क्योंकि आपके पास ज्ञान का भण्डार और विज्ञान के फार्मले सब कुछ हैं। बच्चा जिद करेगा, रोएगा, पसंद की चीज जैसे नूडल्स, कुरकुरे माँगेगा आपको उस समय बाहर से कठोर और भीतर से मोम की तरह बनना होगा, उसे वही चीज खिलानी होगी जो उसके लिए पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्द्धक हो, क्योंकि बचपन का खाया जवानी में और जवानी का खाया बुढ़ापे तक लाभदायक और दीर्घायु प्रदान करता है।

एक बहन का कर्त्तव्य है कि वो अपने भाई की 08.00 बजे सोकर उठने की आदत और खाने के तुरन्त बाद फ्रीज से डायरेक्ट बोतल भर पानी पीने की आदत को छुड़ाने का प्रयास करें। एक महिला शिक्षिका को एक आदर्श पत्नी के नाते अपने पति का गुटका छुड़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होना पड़ेगा। Eat Drink & Be Merry फार्मूले के स्थान पर पहला सुख निरोगी काया के फॉर्मूले का अपनाना होगा। आपके लिए यह सब थोड़ा कठिन तो होगा लेकिन असंभव नहीं, किसी ने कहा है-'कुछ भी नहीं असंभव होता जब संकल्प लिए जाते हैं- इसलिए स्काउटिंग गाइडिंग को शिक्षा विभाग की एक महत्त्वपूर्ण एवं सम्पूर्ण गतिविधि के रूप में स्वीकारा गया है। जहाँ विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से आवासीय शिविरों के दौरान नियमित दिनचर्या आयु वर्ग के आधार पर संतुलित एवं पौष्टिक आहार पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

स्टेट ऑर्गेनाइजर कमिश्नर (गाइड) जयपुर (राज.)
मो: 8003097193

समाज शिक्षा

अशिक्षा उन्मूलन से बनेगा प्रगतिशील समाज

❒ गौरव सिंह घाणेराव

अशिक्षा उन्मूलन का अर्थ शिक्षा प्राप्ति की राह में आने वाले सभी अवरोधों को हटाना और शिक्षा प्राप्ति की राह प्रशस्त करना। शिक्षा शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के शिक्ष् धातु से होती है जिसका अर्थ होता है सीखना। मनुष्य जीवनपर्यन्त कुछ न कुछ सीखता रहता है। यदि इसके अंग्रेजी शब्द एजुकेशन को देखते हैं तो यह लैटिन भाषा के एडुसीयर शब्द से बना है जिसका अर्थ है-अंदर से बाहर निकालना। मतलब शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति के अंदर के ज्ञान को बाहर निकालने का कार्य करती है।

अशिक्षा उन्मूलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि– शिक्षा का प्रभाव मानव जीवन में प्रारम्भ से रहा है। वैदिक काल में शिक्षा पर गुरुकुल पद्धति का प्रभाव देखने को मिलता था। भारद्वाज, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र, घोषा, लोपामुद्रा, सिकता, कक्षावरि आदि कई विद्वान व विदुषी हुए जिनका प्रभाव शिक्षा पर देखने को मिलता है। हालांकि असमानाएँ भी काफी देखने को मिलती थी और शिक्षा की पहुँच जनसाधारण तक नहीं थी। आधुनिक भारत के इतिहास में अंग्रेजों के आगमन से शिक्षा के क्षेत्र में अप्रत्याशित रूप से प्रगति देखने को मिली। 1781 में वॉरेन हेस्टिंग्स द्वारा कलकत्ता मदरसा की स्थापना करना, 1791 में संस्कृत कॉलेज की स्थापना, सन 1800 में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना, 1813 के चार्टर एक्ट में एक लाख रुपये की स्वीकृति से शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति के मार्ग को प्रशस्त कर दिया।

अशिक्षा उन्मूलन की आवश्यकता– मानव एक सभ्य प्राणी है जिसे अपने जीवन को सही तरीके से जीने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने अधिकारों को जानने की आवश्यकता है जो शिक्षा के बिना संभव नहीं है।

1. लैंगिक संवेदनशीलता– आमतौर पर देखा जाता है कि भारत जैसे देश में लिंग भेद बहुत अधिक देखा गया है। लड़कों को उच्च शिक्षा देना और लड़कियों को इससे वंचित रखने की प्रवृत्ति को बदलने की आवश्यकता है।

2. असमानता की खाई को पाटना– शिक्षा की समानता के लिए कोई भी अमीर-गरीबी का कारण नहीं होना चाहिए।

3. अपराधों की रोकथाम के लिए आवश्यक– चोरी, डकैती, लूट-खसोट, जालसाजी, हत्या जैसी घटनाएँ अशिक्षा की ही देन है क्योंकि शिक्षित और सभ्य व्यक्ति इन सब से कोसों दूर रहता है यह बात प्रमाणित भी हो चुकी है।

4. वैश्विक स्तर पर भारत के विकास के लिए– आज का युग वैश्वीकरण का युग है। इस समय हमें ग्लोबल समस्या के लिए विश्व स्तर पर अपनी माँगों व सुझाव को प्रबल रूप से रखने वाले प्रतिनिधि की आवश्यकता रहती है। तभी हम विश्व पटल पर अपनी महत्ती भूमिका निभा सकेंगे।

5. जातिगत भेदभाव हटाने में जरूरी– जातिगत भेदभाव को समूल नष्ट करने के लिए शिक्षा की व्यापकता को और बढ़ाने की आवश्यकता है।

अशिक्षा उन्मूलन के प्रयास– अशिक्षा उन्मूलन के लिए केन्द्र व राज्य दोनों सरकारों द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। अधिक अंक प्राप्त करने वाले बच्चों को प्रोत्साहन देना भी इसका एक हिस्सा है। इसके साथ सरकार को ऐसी योजनाएँ निकालनी चाहिए जिससे जो व्यक्ति औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने में किसी कारणवश असमर्थ हो तो अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा सुलभ तरीके से प्राप्त कर सके।

1. व्यापक साक्षरता अभियान– शिक्षा की पहुँच को बढ़ाने के लिए व्यापक साक्षरता अभियान के द्वारा अधिक से अधिक व्यक्तियों को साक्षर करना।

2. प्रौढ़ शिक्षा को बढ़ावा देना– प्रौढ़ शिक्षा अभियान के द्वारा उन अधिक उम्र वाले व्यक्तियों को शिक्षा देना जिन्होंने किसी कारणवश या जिम्मेदारियों के कारण बचपन में पढ़ाई का बलिदान दे दिया था।

3. शिक्षा को माध्यमिक स्तर तक निःशुल्क करना– शिक्षा ऐसा हथियार है जो हमारे समाज और देश की प्रगति को सुरक्षित करता है यदि कोई व्यक्ति निर्धनता की वजह से इससे वंचित रह जाता है तो यह देश के लिए दुर्भाग्य की बात होगी। इसलिए इसे माध्यमिक स्तर तक निःशुल्क कर देना चाहिए।

4.गैर शैक्षणिक कार्यों के लिए अलग से भर्ती– शिक्षा के कार्यों में गैर शैक्षणिक कार्य बाधा बनते हैं ऐसे में शिक्षक पूरी शिद्दत से बच्चों को नहीं पढ़ा पाते हैं। ऐसे में गैर शैक्षणिक कार्यों के लिए अलग से भर्ती की जानी चाहिए जिससे बेरोजगारों को रोजगार भी मिले और शैक्षिक कार्य में बाधा न आए।

5. दुर्गम स्थलों तक शिक्षा पहुँचाने के प्रबंधन करना– भारत भौगोलिक विविधताओं का देश है जिसमें मरुस्थल से लेकर पहाड़ी क्षेत्रों में लोग बसे हुए हैं। ऐसे दुर्गम क्षेत्रों में शिक्षा के प्रबंध करना चाहिए जिससे सभी को समान शिक्षा के उचित अवसर मिल सकें।

6. शिक्षा में नवाचारों का प्रयोग– शिक्षा को रोचक बनाने के लिए नवाचारों का प्रयोग करना चाहिए। इससे शिक्षा रोचक भी बनेगी और छात्रों का रुझान शिक्षा की ओर बढ़ेगा।

अशिक्षा उन्मूलन का प्रभाव– इन सभी प्रयासों से अशिक्षा का उन्मूलन किया जा सकता है। जिससे निश्चित तौर पर देश और समाज की प्रगति के रास्ते दुरुस्त होंगे और देश की नवपीढ़ियों को आगे बढ़ने के अवसर मिलेंगे वे अपने अधिकारों से परिचित होंगे साथ ही सर्वांगीण विकास के अवसर मिलेंगे।

अध्यापक
S/o महावीर सिंह, महावीर सिनेमा के पीछे,
महावीर कॉलोनी, सुमेरपुर,
पाली (राज.)-306902
मो: 9602874886

पुस्तक समीक्षा

थर्ड एसी का सफर

लेखक : **मधु आचार्य;** प्रकाशकः **गायत्री प्रकाशन, बीकानेर;** संस्करण : **2020;** पृष्ठ संख्या : **112;** मूल्य : ₹ **150**

साहित्य की तमाम विधाओं में उपन्यास विधा का अपना अलग ही वजूद है, उपन्यास वो विद्या है जिसे पढ़कर यूँ लगता है कि ये हमारे ही बारे में लिखा गया है या इसके तमाम किरदार हमारे अपने या हमारे आसपास के हैं जिनको हमने बहुत करीब से देखा है और जानते भी हैं। उपन्यास वो आईना है जिसमें हमारे समाज और उसमें रहने वाले वाशिंदों की झलक आसानी से देख सकते है। ये वो तवील कहानी होती है जिसमें कई छोटी-छोटी कहानियाँ मिलकर इसे उपन्यास नाम की मुकम्मल शक्ल देती है।

शब्द से संस्कारित मधु आचार्य आशावादी जी बीकानेर की सम्पन्न विरासत के समृद्ध प्रतिनिधि हैं जिन्होंने बीकानेर की सर जमीन पर कभी रंगकर्मी के तौर पर अपना परचम लहराया तो कभी एक कामयाब पत्रकार के तौर पर पूरे दमखम के साथ छाए रहे और बात करूँ अदबी दुनिया की तो मधु जी किसी तआरुफ़ के मोहताज नहीं है वो बीकानेर में ही नहीं बल्कि अपने रचनाकर्म की वजह से देश भर में मकबूल व चर्चित हैं। हाल ही में उनकी 19 किताबों का एक साथ लोकार्पण होना पूरी अदबी दुनिया के लिए हैरान करने वाला था साथ ही हम सब के लिए बाइस-ए-फख्र भी। बीकानेर की गंगा जमना तहज़ीब के पैरोकार इस शख्स ने अपणायत से भरपूर अपनी रचनात्मकता की सक्रियता से सबको हैरान किया है। अब तक आपी 86 कृतियाँ मन्जरे आम पर आ चुकी हैं उनमें से 10 हिन्दी उपन्यास हैं। 11वाँ उपन्यास 'थर्ड एसी का सफर' है इस उपन्यास पर अपनी बात रखने से पहले मैं यहाँ लेखक की एक दो खासियत का जिक्र करना अपना फर्ज समझती हूँ अव्वल तो ये कि मधुजी अपनी जाति दुनिया और अदबी दुनिया में तकरीबन एक जैसे हैं। बगैर किसी लाग लपेट के साहित्य जगत में हर दिल अजीज और नेकदिल इंसान होने के साथ-साथ अपने सादा, सलीस और अलहदा अंदाज से पहचाने जाते हैं। बीकानेरी बोली के पुट के साथ हिंदी और राजस्थानी पर साहित्य की हर विधा में आपको अबूर हासिल है चाहे वो कहानी विद्या हो या व्यंग्य, डायरी, संस्मरण, कविताएँ, कहने का मआनी है कि मधुजी ने साहित्य की हर विधा में लिखा है और बहुत लिखा है। एक बात और यहाँ वाजेह तौर पर कहना चाहूँगी कि मधुजी की लेखनी जबान, और भाषा के ऐतबार से सादगी और आमफहम लिए होती है जो पाठक के दिलों दिमाग में हमेशा के लिए एक स्थायी जगह बना लेती है। उपन्यास 'थर्ड एसी का सफर' का उनवान ही उपन्यास से जुड़े तमाम किस्से कहानियाँ बयां करता नजर आ रहा है। जिन्दगी खुद एक सफर है। हम सब उस सफर के मुसाफिर हैं; बुजुर्गों ने कहा है कि सफर करने से तजर्बा बढ़ता है। सफर में नए लोग मिलते हैं, नए रिश्ते बनते हैं। उन रिश्तों में सवंदेनाओं के बीज पड़ने की पूरी संभावना रहती है, मगर मधु आचार्य 'आशावादी' जी के इस 'थर्ड एसी का सफर' उपन्यास के केन्द्र में बैठा किरदार अरुण के मुताबिक गाड़ी में सफर करने वाले मुसाफिर होते हैं, रिश्तेदार नहीं और ये गाड़ी रुकने तक ही दोस्त और सहयोगी रहते हैं। सफर खत्म पहचान खत्म उसके प्रति बनी संवेदना खत्म और जब संवेदना खत्म हो जाती है तो वो रिश्ता भी खत्म हो जाता है ये हर सफर का कड़वा सच होता है। मगर सफर भी कई तरह के होते हैं, ऐसा लगता है कई लोग खुशनुमा जिन्दगी का लुत्फ उठाने के लिए सफर करते हैं और किसी को अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी से जुड़े कई पहलुओं के हवाले से सफर करना पड़ता है मगर इस उपन्यास का सफर सबको चौकाने करने वाला सफर है जिसमें रिश्तों की तलाश करता एक शख्स समाज और व्यक्ति का करीब से अध्ययन करने की आड़ में नए रिश्ते बनाने के लिए सफर करता है, वो इसलिए सफर करता है कि इस मौजूदा समाज और उसमें रहने वाला व्यक्ति किस दिशा में जा रहा है उसकी दिशा और दशा को जानकर वो शख्स उससे होने वाले अच्छे-बुरे परिणाम से रूबरू करवाना चाहता है जी हाँ ये उपन्यास मौज़ूदा वक्त में रिश्तों की तल्ख हकीकतों से रूबरू करवाता है जो संवेदनाओं की परत-दर-परत उधेड़ता अपना सफर जारी रखता है। आशावादी ने अपनी बात को बेहद सहजता से कहा ही नहीं है बल्कि सोचने के लिए कई सवाल भी दिए हैं। ऐसा लगता है इस उपन्यास में होने वाली घटनाएँ, किरदार हमारे आस-पास के ही हैं, उनसे जुड़े हर मसले से रोजाना किसी ना किसी रूप में हम दो चार होते हैं। इन तमाम किरदारों को हम जानते हैं और ये हमें जानते हैं। इस उपन्यास की जड़ में विभिन्न वाकियों को समेटा गया है जिसमें चाहे मुकेश की माँ की कहानी हो जो अपने वचन के पूरा होते ही अपने बच्चों की जिंदगी और भविष्य की बगैर परवाह किए अपने तरीके से जीने को तरजीह देती है। बहन ने भी अपनी आजादी का फैसला खुद करना चाहा और भाई को अकेला छोड़ चली गई। ऐसे हालात में संवेदनाओं का गला घोंटता व रिश्तों की बेफ़िक्री महसूस करवाता ये उपन्यास 'अब धरती मेरी माँ और आकाश मेरा पिता' जैसे छोटे-छोटे संवाद से एक नए किरदार की तलाश में आगे बढ़ता है। मधुजी एक ऐसे रचनाकार हैं जो प्रगतिशील लेखक होने के साथ-साथ अपने आस-पास के सामाजिक परिवेश और माहौल का ख्याल करते हुए किशोर अवस्था पार करती लड़कियों का आधुनिकता के जरिए सोशल मीडिया से जुड़ना कितना सार्थक और परेशानी का सबब बन सकता है वो किरदार आराधना के जरिए बताने की बख़ूबी कोशिश है। सोशल मीडिया पर बने फेक रिश्ते किस तरह खुद को अपनी और अपने माँ-बाप की नजरों में गिरा देते हैं। ये वो रिश्तें होते हैं जिनमें झूठ धोखे के सिवा कुछ नहीं होते ऐसे रिश्तों से हमारी सामाजिकता में निरंतर कमी आई है और साथ ही आपको अपनी जिन्दगी के लिए देखे गए लक्ष्य से भटका देते हैं। हालांकि हर पहलू के दो रूप होते हैं सोशल मीडिया का प्रभाव हमारी जिन्दगी को गति देने और स्फूर्ति के देने वाला साबित हुआ है। ये उपन्यास हमें दोबारा जीने की सीख देता है और अपनी गलतियों का सुधार की राह देता नजर आता है।

उपन्यास 'थर्ड एसी का सफर' के मुख्य किरदार अरुण का मुसाफिरों से गुफ्तगु करने के अंदाज ने जहाँ एक तरफ आदमी और समाज की

पड़ताल का मौका दिया है वहीं कुछ नए रिश्ते भी बनाकर दिए हैं जो मन में संवेदनात्मक स्पंदन पैदा करते हैं। क्योंकि जीवन में समाज और परिवार से जितने रिश्ते मिलते हैं उसमें कर्त्तव्य और सिर्फ निभाना होता है; ये रिश्ते ताजगी बहुत कम देते नजर आते है।

एक अच्छे रचनाकार की सबसे बड़ी खूबी होती है कि वो अपने लेखन में अध्ययन के साथ-साथ अपने अनुभव और अहसास नाम की दोनों शर्तों को लागू करके किसी रचना का रचाव करता है और जिस तरह से इस उपन्यास में एक साहित्य कार की असल सोच, जोड़-तोड़ और उसके अंदर चल रही कैफियत को मधुजी ने बाहर उजागर किया है। मैं दावे के साथ कह सकती हूँ कि उन्होंने इन तीनों शर्तों को फन्नी शऊर के साथ निभाया है। क्योंकि ऐसा वही लिख सकता है जिसने ऐसे मंजर बेहद करीब से देखे और महसूस किए हों।

जहाँ तक मैंने इस उपन्यास को पढ़ते हुए महसूस किया है कि इस उपन्यास की छोटी-छोटी कहानियों में माहौल व पसमंजर के हवाले से लम्बे और उबाऊ संवाद नहीं मिलेंगे। जो बात कहनी है वो इतने पते से कही गई कि बात मुख्तसर होने के बावजूद उसकी अभिव्यक्ति को गहराई के साथ पेश किया गया है, कैसे कोई बेटा अपनी माँ को उसके बनाए आशियाने से निकलने को मजबूर कर देता है। 'माँ' महज शब्द नहीं है माँ वो है जो अपने बच्चों को वजूद देती है। इस दुनिया से रूबरू करवाती है अच्छे बुरे में फर्क करने का इल्म देती है। हालांकि इस वजूद का कोई लाल, पीला रंग नहीं होता मगर संवेदना से सींचा हुआ वो पौधा है जो बिना ममता की छाँव से मुरझा कर कभी भी खत्म हो सकता है लेकिन मौजूदा वक्त की इस भागमभाग की दौड़ में माँ-बाप को एक बोझ से ज्यादा कुछ नहीं माना जा रहा मगर मधुजी ने इसके दूसरे पहलू पर रोशनी डालते हुए जिस बेटी की पैदाइश पर घर में मायूसी छा जाती है उसी बेटी के अस्तित्व को समाज के सामने लाकर खड़ा किया है ताकि अब भी ये समाज अपनी इस दकियानूसी सोच से बाहर आ जाए तो ऐसे नालायक बेटों की जगह बेटी की पैदाइश पर खुशियाँ मनाई और थाली बजाई जा सके। लेकिन साथ ही ये उपन्यास आलोक जैसे बच्चे की मासूम फिक्र को भी सराहता है जो अपने परिवार की जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए अपना बचपन, पढ़ाई को दाँव पर लगा कर हर जगह अपनी परिपक्वता का परिचय देता है। अपनों का ख्याल रखने के लिए जिन्दगी से मुस्कुराहट और सारे ख्वाब छिन जाते हैं। लेकिन ऐसे लोग अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाते हैं।

इस उपन्यास की खास बात है कि लेखक अपने किरदारों के जरिए ये कहना चाहता है कि जाने-अनजाने हमारी जिन्दगी से कुछ ऐसे रिश्ते जुड़ जाते हैं जो बिना किसी जरूरत और स्वार्थ के होते हैं जो खुद को समर्पित कर देते हैं अरुण भी उनमें से एक था जो सबके अंतर मन में क्या चल रहा है? उसके लिए वो उसकी मदद कैसे कर सकता है वगैरह वगैरह।

इस उपन्यास में ये ही बताने की बेहतरीन कोशिश की गई है कि हर इंसान को अपनी जिन्दगी में बहुत से सफर करने पड़ते हैं। सफर में कई तरह के मुसाफिर मिलते हैं, उनकी जिन्दगी से घटनाओं से रूबरू होने का मौका मिलता है वैसे ही जैसे इस उपन्यास की आराधना, बुजुर्ग महिला, बुजुर्ग पत्रकार, आलोक वगैरह थे। ये ऐसे किरदार थे जिन्होंने जीवन में मानवीय संवेदना की सारी परतें उधेड़ कर रख दी।

यह उपन्यास पाठक के सामने एक सवाल रखता है कि आज के मौजूदा वक्त में आदमी कितना सिमट गया है जिसके रिश्ते, घर, परिवार को असंवेदनशीलता ने लील लिया है। जिसने अपनी माँ को भी बेघर कर दिया जो समाज के गिरते मूल्यों का प्रतीक है। एक बात यहाँ वाजेह करना चाहती हूँ कि लेखक आधुनिकता का विरोधी नहीं है, वो कहते हैं वक्त के साथ चलने वाला ही सफल होता है लेकिन लेखक संकेत करना चाहता है कि जिस तरह से युवा वर्ग पाश्चात्य सभ्यता को अपना कर अपनी तहजीब भूल रहा है वो फिक्र करने को मजबूर कर रहा है। मधुजी का इस बात को रेखांकित करना कि परिवार संतानों की सेवा से सम्पन्न नहीं होते संस्कारों से सम्पन्न होते हैं।

मधुजी का ये 'थर्ड एसी का सफर' उपन्यास में एक ऐसा सफरनामा है जो समाज और व्यक्ति की खाली हुई जिन्दगी में सफर के जरिए रिश्ते तलाश कर अपने खालीपन को दूर करता है उनके दुख को अपनी संवेदना का मरहम लगाकर उन्हें खुशी देना चाहता है, खुद खुश होना चाहता है, गलत राह को सही राह देता है किसी माँ का बेटा बनकर तो कभी किसी बहन का भाई बनकर मगर सफर के आखिरी में वही रहता है अकेला, लावारिश जिसके साथ किसी की संवेदना भी नहीं रहती। इस उपन्यास में बीकानेरी शैली की रंगत के साथ हिन्दी और उर्दू शब्दों का ऐसा रचाव है जिसमें सीख के साथ गहरे उतरने का मन करता है। मधुजी का ये उपन्यास अपने तजुर्बे, अहसासात की जमीन पर आगे बढ़ता है जिसके किरदार घड़े हुए नहीं उनके अपने से लगते हैं शायद इसी को कहा जाता है भोगा हुआ यथार्थ। मगर ये उपन्यास कहीं से भी घोषणा करता हुआ जाहिर नहीं होता और ना ही इसमें कोई क्रान्ति या बगावत जैसी कोई बात नजर आती है।

आखिर में एक ही बात कहना चाहूँगी इस उपन्यास के सफर में कितनी जगह के किरदार शामिल हो मगर मधुजी की कलम ने बीकानेर की सर जमीन को एक भी सफे से जुदा नहीं होने दिया। मधु आचार्य 'आशावादी' ऐसे ही रचनाकार हैं जो अपनी लेखनी के साथ नदी की कलकल जैसे हैं। ये ऐसा उपन्यास है जिसे कोई भी एक ही सिटिंग में पढ़ सकता है। यह जैसे-जैसे आगे बढ़ता है ये सोचने पर मजबूर कर देता है कि आगे के सफर में क्या होगा। मैंने अपनी समझ के अनुसार इस उपन्यास पर अपनी बात रखने की कोशिश की है कि किस तरह मुख्य पात्र के तौर पर अरुण पाठक के सामने इन किरदारों के जरिए समाज और व्यक्ति के मुख्तलिफ चेहरे पेश करता है जो कुछ स्वार्थ से भरे हुए नजर आए कुछ निहायत शरीफ होने के बावजूद सोशल मीडिया की चकाचौंध से बने फेक रिश्तों से परेशान हुए तो कुछ नियति की भेंट चढ़े जिनको सुनकर आँखे नम हुए बिना नहीं रह सकती। आशावादी जी ने इस उपन्यास के तकरीबन पाँच हिस्से कर जैसे हावड़ा ब्रिज, अपनों से पलायान, आलोक की मजबूरी, पराया माल अपना के जरिए समाज में व्याप्त विसंगतियों और व्यक्ति की प्रवृत्तियों को जिस बेबाकी से हम सबके सामने उजागर किया है तारीफे काबिल है। उसमें चाहे सात औलाद वाले पत्रकार महोदय को बंटवारे का दंश झेलकर अकेला रहना पड़ा हो या फिर जिसे समाज का दर्पण कहा जाता 'साहित्य' में चलती उठा पटक का मामला हो, जैसे मुद्दों को भी हौंसले और निडरता से कह डाला है। इस उपन्यास का ये

सफर ऐसे ही हमारे समाज और अपनों की घटनाओं से आगे बढ़ता है। संवेदना, सन्देश, सीख, शब्दों का संयोजन, संवाद की खूबसूरती, सफर की मंजरकशी और फन के ऐतबार से यह उपन्यास साहित्य जगत के लिए नजीर साबित होगा।

समीक्षकः **सीमा भाटी**
W/o श्री चन्द्रेश गहलोत
'माँ कृपालय' चाँदनी होटल वाली गली, रानीसर बास, बीकानेर
मो: 9414020707

चालूं अे बाई, छियां ढळगी

कवि: **विनोद स्वामी;** प्रकाशक: **बोधि प्रकाशन, सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन, नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006;** संस्करण: **2020;** पृष्ठ संख्या : **112;** मूल्य : ₹ **250**

'चालूं अे बाई, छियां ढळगी' विनोद स्वामी रौ नूंवौ अर दूजौ कविता-संग्रै है। इणसूं पैली वांरौ 'प्रीत कमेरी' नांव रौ संग्रै खासौ चरचा में रैयौ। इणरौ मोटौ कारण है। राजस्थानी कविता रै कणूकैदार कवि रै रूप मांय विनोद स्वामी साहित्य जगत में बाजींदौ नांव है। गांवठी जनजीवण सूं जुड़्योड़ी वांरी कवितावां मांय राजस्थानी-अेक रा कवि तेजसिंह जोधा सरीखौ सिल्प अर संवेदना देखण नै मिलै। विनोद री कविता में ना तो कठैई समस्या उठावण री खेचळ है अर ना ई वै आपरा विचार ई कविता मांय प्रगट करै। वांरी कविता तो माटी री महक लियोड़ी है जकी पाठक रै मन मांय मत्तै ई विचार, भाव महकावै अर संवेदनावां जगावै। कवि विनोद स्वामी प्रकृति रौ मानवीकरण करण मांय माहिर है। वै भी राजस्थानी रा बाजींदा कथाकार विजयदान देथा दांई आपरी रचना मांय आपरै गांव री माटी, खेत-खळा, कूवा-जोहड़, रूंख-बांठका, पसु-पंखेरू, गाँव, गळी, गवाड़, घर अर अठै तांई कै घर री भींतां, छातां अर न्हावणघर तक नै बोलावै अर वांसूं बंतळ करै। विनोद री आ बंतळ ईज अेक मुकम्मल कविता रौ बांनौ धार लेवै।

इण नूंवै कविता संग्रै मांय विनोद री 64 नैड़ी कवितावां है, जिण मांय सूं सिरैनांव कविता 'चालूं अे बाई, छियां ढळगी', 'जंजाळ', 'थर-थर कांप्यौ खेत' अर 'न्हावणघर' औसार में कीं बडी कवितावां है, पण आंनै बांचती बगत पाठक रौ कविता सूं अैड़ौ सगपण जुड़ जावै कै बौ छेकड़ तांई उणरै सागै बगतौ जावै। राजस्थानी रा ख्यातनांव कहाणीकार अर कवि रामस्वरूप किसान तो विनोद री आं कवितावां नैं जीवण बचावण री जंग बताई है अर 'म्हारौ न्हावणघर' नैं इण संग्रै री ई नीं राजस्थानी री सिरै कविता ठैरायी है। वै लिखै, ''विनोद स्वामी कविता रौ अैड़ौ जादूगर है जकै आपरै घर री हर चीज नै कविता में कनवर्ट करदी; चीजां रै मानवीकरण रौ हुनर विनोद सूं बेसी स्यात ई कोई जाणै। आ कारीगरी इण संग्रै री 'बाबै री कबजी' सिरैनांव वाळी कविता में देखी जा सकै। 'म्हारौ न्हावणघर' इण संग्रै री ई नीं बल्कि राजस्थानी री बडी कविता है। इण कविता में कवि ग्रामीण जीवण री अेक अैड़ी दुनिया खड़ी कर नाखी जकी री सैर करतै थकां पाठक रै अेडी सूं लेयनै चोटी तांई रोमांच रौ करंट-सो लागबौ करै। विनोद आपरी विलक्षण काव्य प्रतिभा रै पाण निर्जीव चीजां मांय प्राण फूंक'र बांनै जबान बगसी है। कवि री हर कविता में चीज बोलै है, चालै है। आपरी कविता रै जरियै निर्जीव नै सजीव बणावणौ भोत बडी बात है।''

कवि मरुथळ री रूखी-सूखी धोरा धरती अर प्रकृति रौ सिणगार करण सूं ई नीं चूकै। वौ खेत-खळां रै ओळावै गांव री कांकड़ अर रोही नैं नीं फगत सिणगारै बल्कै उणनैं सुहागण-भागण ई बणावै:

सिंगर्योड़ी रोही / थुथकारै जावौ / हरियल तीवळ / अर सरसूं रौ पीळौ पोमचौ / म्हारै खेत रौ कच्चौ बुरज/
सुहागण रोही रौ / सुरंगौ बोरलौ।

संग्रै री सिरैनांव कविता 'चालूं अे बाई, छियां ढळगी' रै अेन बिचाळै री अै ओळ्यां इण कविता रौ काळजौ ई मानौ। पुरुस प्रधान समाज मांय आज भलांई कित्तौ ई बडौ बदळाव आयग्यौ हुवै पण गांवां मांय हाल ई औ ईज ढारौ है। आखौ दिन घर रौ खोरसौ करण आळी लुगायां आपरै आदम्यां रै आळसीपणै सूं नाक-नाक आयोड़ी है:

''ना अे बाई, आदमी तौ क्यांरा है/ लारलै भो रा कोई बदळा चुकावां / घरां बड़्यां पछै माचली कोनी छोडै / नहीं तौ लोगां रै कामां सूं ई फुरसत कोनी।''

इण कविता मांय गांवठी जनजीवण री मोकळी अबखायां रा चित्राम दो लुगायां री आपसरी री बंतळ रै ओळावै चरूड़ हुवै। गांव मांय पाणी रौ तोड़ौ पैलां जित्तौ तौ नीं रैयौ, पण फेरूं ई जोहड़ां, तळाबां अर आदू जळस्रोतां री अणदेखी सूं अजै ई औ संकट मिट्यौ कोनी। माटी रै अेक खाली घड़ै नैं लेय'र 'माटी रौ संगीत' कविता विनोद स्वामी ई लिख सकै:

गांव रै जोहड़ै री पुराणती पाळ माथै / माटी रा भांडा लेय'र आयौ है कुम्हार / पुराणौ पीपळ / कुअै रै खाली कोठै कानी देख'र मुळक्यौ है / जोहड़ री आंख्यां री बेरौ कोनी क्यूं / अचाणचक भीजी है कोर/गाडै में गदगदी करती माटली/मंगलियै रै कान में कीं कैयौ है / पण समझ कोनी पड़ी।

विनोद री कवितावां मांय खेत सूं कातीसरै रै रूप मांय लोया अर टींडसी आयां पूरौ घर मुळकै, तो गांव में नूंवौ घर बणतौ देख'र ग्याभण चिड़कल्यां ई मोदीजै, क्यूंकै उण मांय वै ई आपरौ आळणौ घाल सकैला।

कवि री निजर मांय काम कोई ओछौ कै माड़ौ नीं हुवै। पछै माटी खोदौ अर भलांई कूई (कच्चौ शौचालय), बल्कै कूई खोदण नै तौ कवि भोत बडौ काम मानै, जिणमें 'मैणत री सौरम' आवै अर सूगलवाड़ौ जमींदोज हुवै:

लोगां री निजरां में/कोई चोखो काम कोनी/कूई खोदणौ/पण म्हैं जाणूं कै/गंदी चीज नैं बूरण सारू/दरड़ौ खोदणौ कित्तौ मोटौ काम होवै।

आपरी छोटी-छोटी कवितावां मांय विनोद केई ठौड़ गांवठी मिनखां री मनगत माथै करारौ व्यंग्य ई करियौ है, तो देवी-देवतावां नैं ई इण लपेटै मांय लिया है। 'गाय नैं लखदाद' कविता में वै कैवै:

गाय में तैंतीस करोड़ देई-देवता / पण गाय फेर ई भूखी / कमाल है थारा देवता / अर लखदाद है गाय नै / जिकी आंनै घींस्यां फिरै।

बुढापै मांय मायतां री सेवा नीं करणिया मोट्यारां नैं ई विनोद 'संस्कार' कविता रै सीगै व्यंग्य री मीठी फटकार लगावण सूं नीं चूकै:

मा नै / जींवती नै / झलायौ कोनी कदी / पाणी रौ लोटौ / अर मरियां पछै / कैंवता फिरै-/ छतरी चिणास्यां।

म्हारी मंगळ कामना कै विनोद स्वामी सरीखै भरोसैमंद कवि रै नूंवै कविता-संग्रै 'चालूं अे बाई, छियां ढळगी' नैं राजस्थानी साहित्य जगत मांय ओपतौ आवकारौ मिलै अर कवि राजस्थानी पाठकां रै भरोसै माथै इणी भांत भविस में ई खरौ उतरै। लखदाद।

समीक्षकः **शंकरसिंह राजपुरोहित**
'राजपुरोहित रैवास',
कृपाळ भैरूं मिंदर रै लारै, सर्वोदय बस्ती, बीकानेर (राज.)-334004
मोः 7610825386

जब भी देह होती हूँ

कवि : **नवनीत पाण्डे; प्रकाशक : सर्जना शिवबाड़ी रोड, बीकानेर;** संस्करण : **2020 ;** पृष्ठ संख्या : **80 ;** मुल्य : ₹**100**

'स्त्री की हँसी हवा की मानिंद/ हर बंद तोड़ डालती है/ एक स्त्री का सुख/ दुनिया की आँखों की किरकिरी बन जाता है'। 'जब भी देह होती हूँ' एक स्त्री को देह के ढाँचे से आज़ाद कर एक मानुषी के रूप में दर्ज करने की कोशिश है। स्त्री की पीड़ा, उसकी हँसी, उसके संघर्ष और उसके स्वप्न को बुनते हुए कवि ने स्त्री जीवन की समस्त विडंबनाओं, चुनौतियों को अपनी कविताओं में व्यक्त किया है। कवि का यह परकाया प्रवेश एक स्त्री के दुनिया की नज़रों में किरकिरी बन जाने के बाद भी अपनी हँसी को बचाए रखने के संघर्ष का संवेदनशील चित्रण है। यहाँ एक स्त्री का मिथक, उसका इतिहास और उसके आधुनिक रूप की विविध छवियाँ हैं। इन छवियों की ख़ासियत है कि तमाम विपरीत परिस्थितियों के बाद भी यहाँ कोई टूटी या हारी हुई स्त्री नहीं मिलती बल्कि अपने अधिकारों और आत्मसम्मान के लिए मुखर, सजग तेजस्वी स्त्रियों के अक्स नज़र आते हैं। वे पितृ सत्ता के थोपे हुए मन लुभावन तमगों से मुक्ति चाहती हैं और एक सहज मनुष्य होकर जीना चाहती हैं, तभी तो कहतीं हैं -

'तुम समझते हो
तुम्हारा मुझे अपनी छांह कहने से मैं फूल कर कुप्पा हो जाऊँगी/ भ्रम है तुम्हारा -
मैं अच्छी तरह पहचान चुकी हूँ छांह होने के मायने क्या हैं स्त्री के इर्दगिर्द जाने कितने ही महान विशेषण और प्रकृति की उदार छवियाँ रच दी गईं हैं लेकिन यह अदृश्य शृंखलाएँ हैं जिसकी क़ैद में उसका अपना अस्तित्व हमेशा के लिए मिट जाता है। स्त्री को माँ, देवी, नदी आदि संज्ञाओं से विभूषित करना दरअसल समाज का एक सुनियोजित षड़यंत्र है। जब एक पुरुष की कलम इस प्रवृत्ति पर आघात करती है तो इसका साक्षी रहना सुखद भी रहता है और बदलाव की उम्मीद भी देता है। नदी सीरीज़ की कविताएँ आह्वान है इस समाज को कि वह अपनी पुरानी, दक़ियानूसी सोच से उबरे और नयी दृष्टि से इन संज्ञाओं की व्याख्या करे। नदी और स्त्री को जोड़ते हुए कई कविताएँ हिन्दी साहित्य में लिखी जा चुकी हैं लेकिन इन कविताओं का अलहदा स्वर और ताज़ा बिम्ब इन्हें उनके बीच एक अलग ही स्थान देते हैं। बानगी देखें-नदी के भीतर उतरो, नदी को समझो ...../ अगर अनसुनी करोगे/ रोकते रहोगे राह/ कर डालेगी तबाह।

'नदी के भीतर नदी क्या है/ कोई नहीं जानता। नदी जब दुर्गम पहाड़ों को भेद/ बीहड़ मैदान पार कर/ समंदर में मिल गर्व से हँसती है/ पहाड़ों ही नहीं समंदर की भी भृकुटि तनती है महाकाव्यों से लेकर आधुनिक समय तक स्त्री के इर्दगिर्द इतने मिथक बुन दिए गए हैं कि उसका अपना इतिहास ही गुम हो गया। वह या तो देवी बची या दानवी। 'यशोधराओं' और 'गाँधारी' जैसी कविता मिथकों के सदियों से चले आ रहे उसी ढाँचे पर आघात है जिसके भीतर कहीं एक वास्तविक स्त्री को क़ैद रखा जाता रहा है। यह नयी गांधारी अपनी आँख पर पट्टी बाँधने से इंकार करती है और धृतराष्ट्र के अस्तित्व पर प्रश्न उठाती है। नयी यशोधराएं आपने अधिकार के लिए संघर्ष करने को तत्पर हैं। मूलतः राजस्थान के निवासी कवि नवनीत पाण्डेय का यह नया संग्रह दरअसल स्त्री जीवन का एक दस्तावेज है जहाँ समाज द्वारा एक स्त्री के निर्माण के सभी चरण एवं प्रक्रियाओं को प्रश्नांकित किया गया है। सीमोन के शब्द कि एक स्त्री जन्म नहीं लेती, निर्मित की जाती है, यहाँ कविताओं में साकार दिखते हैं। 'भले घर की लड़कियाँ' सीरीज़ की कविताएँ समाज द्वारा अच्छी लड़की निर्मित करने की घोषित नियमावली पर कड़ा प्रहार है। पंक्तियों में कभी तीखे व्यंग्य, कभी सपाटबयानी का प्रयोग है लेकिन उनकी संवेदना सीधे पाठकों तक पहुँचती है और अपनी कहानी से जोड़ लेती है। कवि का यह कहना, 'भले घर की लड़कियाँ भली होती हैं पर उनके साथ कुछ भला नहीं होता है, अभिजात्य संस्कृति और परंपरा के नाम पर स्त्री शोषण की लंबी दास्तान सुना देता है। भली घर की लड़कियों का 'हँसना-रोना दोनों ही बेआवाज़ चुपचाप होता है', यह पढ़ते हुए अनगिनत स्त्रियों की अनकही पीड़ा और सदियों के शोषण की तस्वीर साकार हो जाती है। यह नयी स्त्री प्रश्न करती है, जड़ हो चुकी परम्पराओं पर निर्मम प्रहार करती है और कड़े शब्दों में चेतावनी देने से भी नहीं चूकती। वह जानती है कि इस समाज ने हमेशा उसे एक शरीर माना है। धर्म, संस्कृति, सत्ता ने हमेशा उसे उपभोग की वस्तु से अधिक नहीं माना। यही वजह रही कि एक ओर स्त्री जागरूक और सबल होती गईं, वहीं दूसरी ओर समाज उसके दैहिक मानसिक शोषण के नए और बीभत्स तरीके ईजाद करता गया। 'बदायूं से बोल रहा हूँ', 'नन्हीं चिड़िया की लाश' स्त्री देह पर हो रही उन्हीं क्रूरताओं के सजीव चित्र दर्शाती है। यह कविताएँ उस नए पुरुष की आवाज़ है जो न सिर्फ़ स्त्री को प्रेम करता है, संवेदना के धरातल पर भी उससे एकात्म स्थापित कर पाने में सक्षम बन रहा है। वह जानता है कि स्त्री को सिर्फ़ देह में रिड्यूस कर उसकी प्रज्ञा और चेतना को नकारना सदियों से समाज की साजिश रही है। वह स्त्रियों को महिमामंडित करने की प्रवृत्ति से आज़ाद होना चाहता है। यह नवीन पुरुष सिर्फ़ देह के ही स्तर पर ही नहीं, आत्मा के स्तर पर भी स्त्री का सहचर होना चाहता है, उसके साथ चलना चाहता है। प्राचीन काल से ही कई स्त्री कवियों ने अपनी पीड़ा, अपने स्वप्न, अपने संघर्ष को कविताओं में बुना है और उन्हें सीमित अनुभव की कविता कहकर दरकिनार करने की कोशिशें भी चलती रहीं हैं। अब पुरुष कवि द्वारा लगभग परकाया प्रवेश के साथ स्त्री जीवन को रचने -बुनने की यह ईमानदार कोशिश शुष्क मरुभूमि में नख़लिस्तान की सी उपस्थिति का एहसास कराने में सफ़ल रही है। यह बदलते हुए पुरुष की आवाज़ में नयी स्त्री की कविताएँ हैं। इसके 'स्थायी के साथ अंतरा भी सुनो, पूरा गीत सुनो'। यह पितृ सत्ता का एजेंट शोषक पुरुष की नहीं, हमदर्द, हमराही पुरुष की आवाज़ है।

समीक्षक : **रश्मि भारद्वाज**
129, 2nd फ्लोर, ज्ञान खण्ड-3, इन्द्रपुरम
गाजियाबाद-201014
मो. 9654830926

बालशिविरा

अपनी राजकीय शालाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा सृजित एवं स्वरचित कविता, गीत, कहानी, बोधकथा एवं चित्रों को इस स्तम्भ में प्रकाशन हेतु नियमित रूप से संस्थाप्रधान/बालसभा प्रभारी भिजवाएं। श्रेष्ठ का चयन करते हुए इस स्तम्भ में प्रकाशन किया जाता है।

-व. संपादक

राह में मुश्किल होगी

राह में मुश्किल होगी हजार,
तुम दो कदम बढ़ाओ तो सही।
हो जाएगा हर सपना साकार,
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।।
मुश्किल है पर इतना भी नहीं,
कि तू कर ना सके।
दूर है मंजिल लेकिन इतनी भी नहीं,
कि तु पा ना सके
तुम चलो तो सही,
तुम चलो तो सही।।
एक दिन तुम्हारा भी नाम होगा,
तुम्हारा भी सत्कार होगा।
तुम कुछ लिखो तो सही,
तुम कुछ आगे पढ़ो तो सही
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।।
सपनों के सागर में कब तक गोते लगाते रहोगे,
तुम एक राह है चुनो तो सही।
तुम उठो तो सही, तुम कुछ करो तो सही
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।।
कुछ ना मिला तो कुछ सीख जाओगे, जिंदगी का
अनुभव साथ ले जाओगे।
गिरते पड़ते संभल जाओगे,
फिर एक बार तुम जीत जाओगे
तुम चलो तो सही, तुम चलो तो सही।।

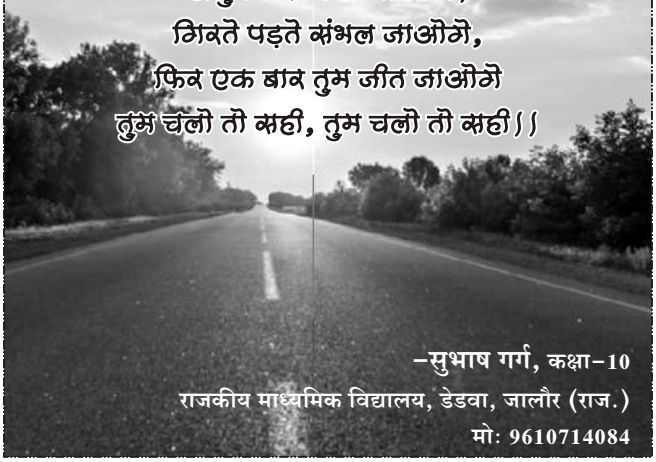

–सुभाष गर्ग, कक्षा–10
राजकीय माध्यमिक विद्यालय, डेडवा, जालौर (राज.)
मो: 9610714084

सम्मान है शिक्षक

गुजरे हुए पलों की
याद है शिक्षक
आने वाले पलों का
ख्वाब है शिक्षक
पहली कक्षा के बच्चे के
क, ख, ग, घ से लेकर
साक्षात सरस्वती पुत्र और
साहित्य का
सम्मान है शिक्षक।
कभी धूप है शिक्षक
तो कभी छाँव है शिक्षक
कभी उजली सहर तो
कभी सुहानी शाम है शिक्षक
तो कभी हारे हुए बच्चे की हिम्मत
तो कभी बच्चे की जीत पर
हर माथे का सलाम है शिक्षक
कभी किसी के लिए
कुछ भी नहीं
तो कभी सभी की
आन-बान-शान है शिक्षक
अगर यूं ही मानो
तो बहुत सादा
व्यक्तित्व होता है ये
वरना हकीकत में तो
गुरु शिष्य परंपरा की जान
और सही मायनों में
हिन्दुस्तान का
स्वाभिमान है शिक्षक।

–सुभाष गर्ग, कक्षा–10
राजकीय माध्यमिक विद्यालय, डेडवा, जालौर (राज.)
मो: 9610714084

कोरोना

जैसे हर चमकती चीज का मतलब सोना नहीं होता
वैसे हर एक छींक का मतलब कोरोना नहीं होता।।

केवल पानी से हाथ धोना, धोना नहीं होता।
बीस सेकंड साबुन से हाथ धोने पर कोरोना नहीं होता।।

ऐसे खतरनाक वायरस का इलाज, जादू टोना नहीं होता।
सावधानी, साफ-सफाई रखने से कोरोना नहीं होता।।

जागरूकता, जानकारी रखने वालो को बाद में रोना नहीं होता।
भीड़-भाड़ से दूर रहने पर कोरोना नहीं होता।।

घर से बाहर जाना और लोगों से हाथ मिलाना नहीं होता
क्योंकि नमस्कार करने वालों को कोरोना नहीं होता।।

महामारी के दौरान बस हमें धैर्य खोना नहीं होता।
सेनेटाइजर, मास्क के प्रयोग से कोरोना नहीं होता।।

समय रहते सचेत होंगे तो अपनों को खोना नहीं होता।
रोगी स्वयं आइसोलेट हो जाये तो औरों को कोरोना नहीं होता।

कंचन कुमावत, कक्षा–10
रा.उ.मा.वि. आभावास, सीकर (राज.)

बाल मन को रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करने, उनमें सृजन के संस्कार देने हेतु विद्यालय स्तर से ही कविता, कहानी लिखने हेतु उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। प्रत्येक विद्यालय अपने विद्यार्थियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को 'बाल शिविरा' में प्रकट करने का अवसर दे सकते हैं। हमें विद्यालयों के छोटे–छोटे बाल रचनाकारों की रचनाओं का बेसब्री से इंतजार रहता है। –वरिष्ठ संपादक

शाला प्रांगण से

अपने शाला परिसर में आयोजित समस्त प्रकार की बालोपयोगी एवं शैक्षिक गतिविधियों को पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है अतः आयोजित कार्यक्रमों का प्रतिवेदन बनाकर **shivira.dse@rajasthan.gov.in** पर भिजवाकर सहयोग करें।

-व. संपादक

9 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए विद्यालय पुनः प्रारम्भ

श्रीगंगानगर। रा.बा.उ.मा.वि. गजसिंहपुर ब्लॉक पदमपुर जिला श्रीगंगानगर मे 18 जनवरी, 2021 को पुनः विद्यालय खुलने पर 9 से 12 तक के विद्यार्थियों के हाथ सैनिटाइज़ करवाए गए व थर्मल स्क्रीनिंग भी की गयी। प्रधानाचार्या श्रीमती प्रभजोत कौर के निर्देशन में सभी व्यवस्थाएं की गयी व सी.बी.ई.ओ. श्री दिनेश रस्सेवट जी द्वारा विद्यालय की व्यवस्थाओं का निरिक्षण भी किया गया।

राष्ट्रीय युवा सप्ताह कार्यक्रम की निबन्ध प्रतियोगिता में पूजा कुमारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया

मोकलसर। श्री मेराम चंद हूंडिया रा.बा.उ.मा.वि. मोकलसर में COVID-19 की पालना करते हुए युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित नेहरु युवा केन्द्र, बाड़मेर, ब्लॉक सिवाना द्वारा स्वामी विवेकानंद जी की जयंती पर राष्ट्रीय युवा सप्ताह के अन्तर्गत निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में 20 बालिकाओं ने भाग लिया। बालिकाओं द्वारा स्वतंत्रता संग्राम में युवाओं की भूमिका, राष्ट्रीय निर्माण में युवाओं का योगदान, सामाजिक तनावों को दूर करने में युवाओं की भूमिका, सामाजिक बुराई को हटाने में युवाओं की भूमिका विषय पर उत्कृष्ट निबंध लिखकर महत्तवपूर्ण संदेश दिया। प्रथम स्थान पूजा कुमारी, द्वितीय स्थान उर्मिला कंवर, तृतीय स्थान खुशबू कुमारी, राज कंवर ने प्राप्त किया। कार्यक्रम में प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाली बालिकाओं को नेहरु युवा केन्द्र बाड़मेर, ब्लॉक सिवाना द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री सुरेश कुमार सोलंकी ने सभी बालिकाओं को बधाई दी तथा ब्लॉक कॉर्डिनेटर रमेश लखारा ने नेहरु युवा सप्ताह कार्यक्रम की जानकारी दी। इस अवसर व्याख्याता श्री भरत कुमार सोनी, श्री ओम प्रकाश पटेल, श्री जगदीश विश्नोई, वरिष्ठ अध्यापक कुमार जितेन्द्र, मांग सिंह भायल, हीरा राम गर्ग अध्यापिकाएँ श्रीमती सुधा रैया, श्रीमती सजना कुमारी, श्रीमती रेखा जाट, श्रीमती मोहनी गोदारा, श्रीमती सुमिता बाई मीणा, लिपिक श्री मुकेश कुमार, श्री जेठु सिंह, सहित विद्यालय की च. श्रेणी. कर्मचारी सागर बाई, तुलसी बाई एवं समाज सेवी हुकमाराम सिवाना, अशोक कुमार राव, दशरथ सिंह उपस्थित रहे तथा कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ अध्यापक कुमार जितेन्द्र ने किया।

शिक्षक कर रहे विद्यालय का सौन्दर्यकरण

तिंवरी। महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) तिंवरी में शिक्षक कमलेश कटारिया, पुष्पेन्द्र सिंह व अन्य शिक्षक साथियों व छात्राओं के द्वारा विद्यालय का सौन्दर्यकरण किया जा रहा है। सम्पूर्ण विद्यालय के बरामदे व मुख्य दीवारों पर सीखने योग्य बातें, चित्र व अन्य सुंदर चित्रों के माध्यम से सजाया गया है। इस पहल से विद्यालय की प्रिंसिपल महोदया श्रीमती जया राजपुरोहित व तिंवरी के सरपंच श्री अचलसिंह गहलोत ने शिक्षकों व छात्राओं की इस पहल को बेहतरीन पहल बताया।

युवा दिवस पर कुंचोली के स्काउट्स ने साइकिल रैली से दिया फिट इंडिया हिट इंडिया का संदेश

राजसमंद। कुंभलगढ़ जिला परिक्षेत्र के राजकीय उच्च माध्यमिक

विद्यालय कुंचोली के स्काउट्स ने राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के तहत सहायक लीडर ट्रेनर व शारीरिक शिक्षक राकेश टॉक के नेतृत्व में फिट इंडिया हिट इंडिया और कोरोना जनजागरूकता साइकिल रैली निकाली। कार्यवाहक प्रधानाचार्य गणेश लाल मेघवाल ने बताया कि युवा दिवस 12 जनवरी 2021 को स्वामी विवेकानंद जी की 158 वीं जयंती के उपलक्ष में ग्राम पंचायत कुंचोली से ग्राम पंचायत बनोकड़ा तक साइकिल रैली का आयोजन स्थानीय विद्यालय के शारीरिक शिक्षक व स्काउटर राकेश टॉक के नेतृत्व में किया गया। रैली को सरपंच निर्मला देवी भील ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर ग्राम विकास अधिकारी हरीश चंद्र मीणा, सहायक स्काउटर दल्लाराम भील, गिरजा शंकर भील, गोपाल लाल भील, भगवतीलाल आमेटा, पुष्पा शर्मा, शंकर लाल जैन, खेम राज भील, माना राम भील उपस्थित थे। साइकिल रैली का वाव दा ग्राम में उपसरपंच किरण सिंह राठौड़ व ग्राम वासियों ने, लखमावतो का गुड़ा में भावेश सोनी मातेश्वरी हीरो शोरूम की तरफ से, नर्बदा देवी जोशी, उच्च प्राथमिक विद्यालय के संस्थाप्रधान व राजस्थान शिक्षक संघ राष्ट्रीय के सभाध्यक्ष श्री रोशन लाल टॉक व स्टाफ की तरफ से रैली का स्वागत व अभिनन्दन किया गया। ग्राम पंचायत बनोकड़ा में स्वामी विवेकानंद के जीवन दर्शन पर व्याख्यान सरपंच गेहरी लाल भील ने दिया। पंचायत समिति सदस्य लाल सिंह झाला पंचायत सहायक रूप सिंह खरवड़, मोहनलाल बब्बर लाल पंचायत सुरक्षाकर्मी किशन लाल ग्रामवासी ओंकार लाल कीकाराम, भेरा लाल उपस्थित थे। ग्राम पंचायत की तरफ से रैली में सहभागिता करने वाले सभी संभागीयो को उपरना व पारितोषिक देकर स्वागत सम्मान किया गया। इस साइकिल रैली में स्काउट्स ने फिट इंडिया हिट इंडिया, नशा मुक्ति और कोरोना जागरूकता के प्रति जन सामान्य को जागरूक करने का कार्य तख्तियों, नारों व माइक के उद्बोधन से दिया। साइकिल रैली का समापन कुंचोली में आकर हुआ।

जरूरतमंद बालक-बालिकाओं को गर्म स्वेटर एवं मास्क वितरित किया गया।

बाड़मेर। पुरस्कृत शिक्षक फोरम बाड़मेर द्वारा राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय चारलाई खुर्द के परिसर में आंगनवाड़ी केंद्र पर सर्दी से बचने के लिए जरूरतमंद बालक बालिकाओं को गर्म स्वेटर एवं मास्क वितरित किए गए। फोरम के जिलाध्यक्ष सालगराम परिहार ने बताया कि स्टेट अवॉर्डी शिक्षक जीताराम मकवाना एवं टीकमाराम मकवाना अध्यापक द्वारा जरूरतमंद आंगनवाड़ी के बालकों को गर्म स्वेटर एवं मास्क वितरित किए गए। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष परिहार ने कहा कि भामाशाह द्वारा समय-समय पर विद्यार्थियों के लिए पाठ्य सामग्री एवं कोविड-19 से बचाव के लिए जागरूकता का अभियान चलाकर सराहनीय कार्य किया है। कार्यक्रम में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता गुलाब, आशा सहयोगिनी भुवनेश्वरी मकवाना, सहायिका बेबी कवर, चम्पा मकवाना, चौथी देवी सहित गणमान्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम में अध्यापक टीकमाराम मकवाना ने जिलाध्यक्ष का धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्वामी विवेकानन्द मॉडल स्कूल सूरतगढ़ के छात्र ने जीता राष्ट्रीय पुरस्कार

सूरतगढ़। देश की सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर कम्पनी टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज तथा साइंस और तकनीकी विभाग बेंगलुरु सरकार द्वारा टीसीएस रूरल आईटी क्विज का आयोजन हर साल किया जाता है। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य आईसीटी के क्षेत्र में विद्यार्थियों को शिक्षित करना है। रूरल इंडिया के विद्यार्थियों के लिए आईटी. क्विज प्रोग्राम केलिए इस प्रतियोगिता का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में भी लिखा जा चुका है। राष्ट्रीय विजेता को टीसीएस कंपनी द्वारा 1,00,000 रु. (एक लाख) की एजुकेशन स्कॉलरशिप दी जाती है। हर साल राजस्थान महाराष्ट्र मध्यप्रदेश गुजरात और छत्तीसगढ़ के अलावा कर्नाटक राज्य के विद्यार्थी इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को आईटी के क्षेत्र में शिक्षित करना है। राजस्थान में यह प्रतियोगिता राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद के तत्वाधान में आयोजित की जाती है। जिसमें स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल के विद्यार्थी हर साल भाग लेते है। इस वर्ष भी टीसीएस रूरल आईटी QNIZ का आयोजन किया गया। Covid-19 के कारण यह प्रतियोगिता इस वर्ष ऑनलाइन आयोजित की गई। जिसमें 134 स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल के विद्यार्थियों ने भाग लिया। राज्य चरण का आयोजन दिनांक 9 अक्टूबर को ON LINE QUIZ के रूप में किया गया जिसमें स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल सूरतगढ़ के विद्यार्थी हिमांशु माकड़ ने सर्वोच्च स्थान हासिल कर राज्य विजेता का खिताब जीता। बैंगलुरू टेक सम्मिट जो कि कर्नाटक सरकार का आईटी के सेक्टर में एक फलैगशिप आयोजन है के अंतर्गत टीसीएस रूरल आईटी क्वीज 2020 के नेशनल फाइनल का आयोजन दिनांक 20 नवम्बर, 2020 को किया गया। इस प्रतियोगिता में राजस्थान का प्रतिनिधित्व स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल सूरतगढ़ के विद्यार्थी हिमांशु

माकड़ ने किया। नेशनल फाइनल में राजस्थान, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, छत्तीसगढ़ एवं गुजरात सहित छह राज्यों की टीमों ने भाग लिया। फाइनल में स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल सूरतगढ़ के विद्यार्थी हिमांशु मक्कड़ ने सर्वोच्च अंक हासिल कर एक बार फिर इस विद्यालय को राष्ट्रीय विजेता बनाकर अपने शहर एवं राज्य का नाम रोशन किया।

प्रधानाचार्य ने दिये एक लाख रुपये

टोंक। स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल स्कूल के प्रधानाचार्य कुम्भाराम चौधरी ने विद्यालय में पार्किंग शेड लगाने के लिए एक लाख रुपये दिए इसके लिये प्रधानाचार्य ने 16 दिसम्बर, 2020 का ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में एक लाख रुपये की राशि दान की जो 21 दिसम्बर को विद्यालय के खाते में जमा हो गई। वर्तमान में विद्यालय में पार्किंग हेतु टीन शेड का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। इस अवसर पर समस्त स्टाफ द्वारा प्रधानाचार्य महोदय का अभिनन्दन किया गया एवं प्रधानाचार्य ने सभी स्टाफ सदस्यों को सम्बोधित करते हुए विद्यालय हित में निरन्तर प्रयासरत रहने का आह्वान किया। इस अवसर पर व्याख्याता विनोद शर्मा, ललित बेनिवाल, डॉ. विकास प्रजापत, योगेश शर्मा, विकास गुर्जर, डॉ. कमल सिंह, राजवीर चौधरी, रमेश चन्द मीणा, जीशान अहमद, विनीत कुमार, अनिता कुमारी, आरती तिवारी, सुदेश बाई, कुन्ती शर्मा, सीमा शर्मा, पूजा चन्देला, सोनू सोनी, संजय भारती, शंकर गुर्जर, कालूराम मीणा, सहित समस्त स्टाफ उपस्थित था।

गणतंत्र दिवस 2021 पर ध्वजारोहण कार्यक्रम

जालौर। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय लालपोल में गणतंत्र दिवस 2021 के अवसर पर प्रधानाध्यापक सुरेंद्र सिंह परमार ने ध्वजारोहण किया। कार्यक्रम के अतिथि मुकेश कुमार जीनगर व विद्यालय स्टाफ की ओर से छात्र छात्राओं को मिष्ठान वितरण किया गया। कार्यक्रम का संचालन शारीरिक शिक्षक दलपत सिंह आर्य ने किया। इस मौके पर सर्व श्री राजेश बालोत, पवनी देवी व पंकु देवी उपस्थित थी।

युवा दिवस साइकिल हाइक का आयोजन

जयपुर– राजस्थान राज्य भारत स्काउट एवं गाइड स्थानीय संघ बस्सी के दिनांक 12.01.2021 को स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती पर कोविड–19 जागरूकता एवं फिट इंडिया हिट इंडिया थीम पर युवा दिवस साइकिल का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ रा.उ.मा.वि. सांभरिया

(बस्सी) से हुआ जहाँ से कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री हरिओम मीणा प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि. सांभरिया (बस्सी), मुख्य अतिथि श्री फूलचन्द दुलारिया, चैयरमेन स्थानीय संघ, विशिष्ट अतिथि श्री शिवदयाल शर्मा, चिकित्सा अधिकारी प्रा. स्वा. केन्द्र सांभरिया एवं श्री पवन शर्मा, सचिव स्थानीय संघ बस्सी ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। हाइक में रा.उ.मा.वि. सांभरिया, रा.उ.मा.वि. मूण्डली, देवगांव, रा.उ.प्रा.वि. झींझा, गुरुकुल एकेडमी देवगांव के 69 स्काउट गाइड ने कोविड–19 गाइड लाइन की पालना करते हुए भाग लिया। स्थानीय संघ बस्सी के सचिव श्री पवन शर्मा ने वैश्विक महामारी से बचाव तथा फिट इंडिया हिट इंडिया की जानकारी प्रदान करते हुए स्काउट गाइड की दोहरी भूमिका के विषय में जानकारी दी। हाइक का झींझा एवं देवगांव ग्राम में पुष्प वर्षा के साथ स्वागत किया गया।

संविधान दिवस के अवसर पर संविधान के प्रति जागरूकता अभियान ई–प्रतियोगिता

जयपुर– स्थानीय विद्यालय महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय (अंग्रेजी माध्यम) जमवारामगढ़ (जयपुर) में संविधान दिवस के अवसर पर विद्यार्थियों को संविधान के प्रति जागरूक करने के लिए संविधान के प्रति जागरूकता अभियान ई–प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में संविधान की उद्देशिका का परिचय देते हुए संविधान से सम्बन्धित 15 प्रश्न पूछे गए, जिनका विद्यार्थियों ने ऑनलाइन माध्यम से उत्तर दिया। इस प्रतियोगिता में विद्यालय के विद्यार्थियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। जिसमें प्रथम स्थान पर विद्यार्थी वंशिका गुर्जर कक्षा–8A, रोशन गुर्जर कक्षा–12B, कोमल वर्मा कक्षा–9A, मेघा मीणा कक्षा–12A व शुभम शर्मा कक्षा–8B रहे। सभी सफल प्रतिभागियों को ई प्रमाण पत्र दिया गया। इस ई–प्रतियोगिता का आयोजन प्रधानाचार्या महोदया श्रीमती सरोज कंवर इंदा के निर्देशन पर विद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक श्री जी.आर. गुर्जर के नेतृत्व में किया गया, जिसको सफल बनाने में विद्यालय परिवार के सदस्यों श्रीमती ज्योति शर्मा, सुनीता सोनी, संजीव कुमार मीणा, सुमन देवी गुर्जर, सविता यादव, बसन्त कंवर यादव, श्रवण लाल मीणा, गिर्राज जागरवाल, सत्यनारायण मीणा, जीवराज सिंह, उमा गुर्जर, धर्म सिंह, संगीता मीणा, सुनील सैन, ओमप्रकाश माली, पूजा रानी पांचाल, सुमन बिवाल, वीरेन्द्र कुमार बुनकर, मोहनप्रकाश मौर्य, विजयलक्ष्मी लोहिया आदि ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

72वें गणतंत्र दिवस के मौके पर भामाशाहों द्वारा विद्यालय के लिए दस कुर्सियाँ भेंट

जोधपुर– 72वें गणतंत्र दिवस के मौके पर मामाजी का थान स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक शौकत अली लोहिया व गोपाल सिंह राजपुरोहित की मौजूदगी में पूर्व सरपंच चौथाराम पटेल, उस्ताद हाजी हमीम बक्ष, भीमाराम पटेल, गोपाराम एसएमसी अध्यक्ष जेताराम, भगाराम, अचलाराम, जयरूपराम, शिवाराम, धनाराम, पुसाराम, रमेश पटेल, जुगताराम, तुलसाराम, पोलाराम, तेजाराम, अर्जुनराम, गीतादेवी, इन्द्रादेवी, शांतिदेवी, विमला सहित ग्रामवासियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया गया। प्रधानाध्यापक शौकत अली लोहिया ने बताया कि ध्वजारोहण समारोह में राष्ट्रगान 'जन–गण–मन अधिनायक जय है' के साथ अतिथियों ने अपने–अपने विचार रखें। 72वें गणतंत्र दिवस के मौके पर भामाशाहों द्वारा विद्यालय के लिए दस कुर्सियाँ भेंट की गई। ग्रामवासियों को भामाशाहों व विद्यालय परिवार की ओर से फ्रूट, मिष्ठान लड्डू व विभिन्न प्रकार की टॉफियाँ वितरित की गई।

स्काउट गाइड ने विश्व हिन्दी दिवस मनाया

डूँगरपुर– राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड जिला मुख्यालय डूँगरपुर के तत्वावधान में विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया। सी.ओ. स्काउट सवाईसिंह ने बताया कि विश्व हिन्दी दिवस पर हिन्दी को जन–जन तक पहुँचाने एवं प्रचार–प्रसार के लिए हिन्दी विषय पर निबंध, भाषण, कविता, नारा लेखन, सुविचार प्रतियोगिताएँ स्काउट गाइड के लिए आयोजित की गई। निबंध में हीना गोस्वामी व अविनाश, भाषण में ममता कटारा, कविता में निकिता कटारा, नारा लेखन में दीपक रोत व विर्मश सोमपुरा, सुविचार में रितिक पंचाल ने उच्च स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर स्काउट पदाधिकारी भूपेन्द्र जैन, ललित कुमार बरण्डा, लीलाराम गामोठ, नानालाल अहारी, भैरूलाल कटारा श्रीमती सुशीला डामोर ने हिन्दी भाषा पर विस्तृत प्रकाश डाला।

स्वामी विवेकानन्द की जयंती पर उनके बताए रास्ते पर चलने का लिया संकल्प

बीकानेर– राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय शिवनगर में स्वामी विवेकानंद की 158वीं जयंती बड़ी धूमधाम से मनाई गई। सर्वप्रथम स्वामीजी की फोटो पर दीप प्रज्वलित एवं माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरूआत की गई। कार्यक्रम अधिकारी मोहरसिंह सलावद ने स्वामी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी सन 1863 को हुआ, उनका घर का नाम नरेन्द्र दत्त था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त पाश्चात्य सभ्यता में विश्वास रखते थे। वे अपने पुत्र नरेन्द्र को भी अंग्रेजी पढ़ाकर पाश्चात्य सभ्यता के ढंग पर ही चलाना चाहते थे। नरेन्द्र की बुद्धि बचपन से बड़ी तीव्र थी और परमात्मा को पाने की लालसा भी प्रबल थी। इस हेतु वे पहले ब्रह्म समाज में गए किन्तु वहाँ उनके चित्त को संतोष नहीं हुआ। सन् 1884 में विश्वनाथ दत्त की मृत्यु हो गई। परमहंस जी की कृपा से इनको आत्म साक्षात्कार हुआ फलस्वरूप नरेन्द्र परमहंसजी के शिष्यों में प्रमुख हो गए। संन्यास लेने के बाद इनका नाम विवेकानंद हुआ। कार्यवाहक प्रधानाचार्य अनुज अनेजा ने कहा कि 1893 में शिकागो (अमेरिका) में विश्व धर्म परिषद् हो रही थी। स्वामी विवेकानंदजी उसमें भारत के प्रतिनिधि के रूप से पहुँचे। योरोप–अमेरिका के लोग उस समय पराधीन भारतवासियों को बहुत हीन दृष्टि से देखते थे। वहाँ लोगों ने बहुत प्रयत्न किया कि स्वामी विवेकानंद को सर्वधर्म परिषद में बोलने का समय ही न मिले। एक अमेरिकन प्रोफेसर के प्रयास से उन्हें थोड़ा समय मिला किन्तु उनके विचार सुनकर सभी विद्वान चकित हो गए। 4 जुलाई सन् 1902 को उन्होंने देह त्याग दी। इस अवसर पर कार्यवाहक प्रधानाचार्य अनुज अनेजा, कार्यक्रम अधिकारी मोहरसिंह सलावद, दयाराम, सुजानसिंह राठौड़, पशुधन सहायक सुमित गौरा, बहादुरसिंह राठौड़, प्रभूराम, प्रेमसिंह, गणेशाराम आदि मौजूद रहे।

विद्यालय में छात्रों का स्वागत

अजमेर : दिनांक 18 जनवरी 2021 को विद्यालय खुलने के उपलक्ष्य में राजकीय पटेल उच्च माध्यमिक विद्यालय ब्यावर में छात्रों का स्वागत व अभिनंदन नायाब तरीके से किया गया। सभी छात्रों को पुष्पों की चादर बिछाए उन पुष्पों पर चलकर विद्यालय में प्रवेश लिया और सभी छात्रों को स्टाफ साथियों द्वारा पुष्प देकर उनका स्वागत किया गया। जिन्होंने लगभग 10 महीने के अंतराल के बाद विद्यालय में प्रवेश किया।

विश्व हिन्दी दिवस पर भंवरसिंह को सम्मानित किया

सीकर– विश्व हिन्दी दिवस के उपलक्ष में बुड़ानिया आइएएस संस्था के सामाजिक संगठन एबी प्लस टीवी फाउंडेशन और शिखर युवा साहित्य मंच की ओर से वे कवि सम्मेलन और सम्मान समारोह आयोजित किया। जिसमें 30 वर्षों से शिक्षा विभाग माध्यमिक शिक्षा राजस्थान की शिविरा पत्रिका, विभिन्न समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में लेखन कार्य करने पर राजकीय माध्यमिक विद्यालय सांवलोदा लाड़खानी के शारीरिक शिक्षक भंवरसिंह को प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न एवं पुस्तक भेंट कर सम्मानित किया। इसके अलावा पिछले पाँच वर्षों से भामाशाहों से विद्यार्थियों को स्वेटर वितरण करवाई और प्रतिवर्ष विद्यालय से क्रीड़ा प्रतियोगिता में जाने वाले दो टीमों के 32 खिलाड़ियों को भामाशाहों से पाँच वर्ष से खेल पौशाक दिलवायी जा रही है। विद्यालय में भामाशाहों को प्रेरित करके भौतिक संसाधन उपलब्ध करवाए। नामांकन वृद्धि और प्रतिवर्ष विभिन्न विद्यालयों में सघन वृक्षारोपण करवाना। कोविड–19 की जागरूकता की सम्पूर्ण जानकारी ग्रामवासियों को समय–समय पर ही जिससे गाँव कोरोना मुक्त रहा। जिसमें घर से आवश्यक होने पर पर ही बाहर निकलना, मॉस्क लगाकर निकलना, भीड़ से दूर रहना, सामाजिक दूरी का पालन करना आदि के बारे में अनेक बार जानकारी प्रदान की।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाते हैं। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

गाँव से निकल आइटी के क्षेत्र में हासिल किए नए मुकाम

बीकानेर। खाजूवाला तहसील के छोटे से गाँव में पढ़ाई करने वाले युवा राजूसिंह राजपूत ने दृढ़ इच्छाशक्ति से आइटी क्षेत्र में नए मुकाम हासिल किए हैं। अब उनकी आइटी कंपनी में सैकड़ों युवा रोजगार प्राप्त कर अपने सपने साकार कर रहे हैं। राजूसिंह ने अपनी माटी से प्रेम के कारण विदेशों में आइटी क्षेत्र में विशेष कार्य कर विशेष पहचान बनाने के बावजूद अपनी कर्मस्थली बीकानेर को ही बनाया। उन्होंने कम्पनी साराटेक का मुख्यालय बीकानेर में बनाया। साराटेक के कनाड़ा ओर अमरीका में ऑफिस हैं। राजूसिंह ने सीनियर हायर सैकेण्डरी की पढ़ाई खाजूवाला से की और बीकानेर के रामपुरिया कॉलेज से बैचलर ऑफ आर्ट्स की डिग्री ली। उन्होंने उसी समय कम्प्यूटर को अपना प्रोफेशन बना लिया। पहले एक साल तो कम्प्यूटर पढ़ाने का कार्य किया, वहीं मैथमेटिक्स में विशेष रूचि होने से सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में कार्य करने के लिए पारख कम्प्यूटर में कार्य किया। इसी दौरान कई बार आइटी कार्य के लिए विदेशों में गए। राजू सिंह ने 7 साल विदेशों में कार्य करते हुए 2007 में खुद की आइटी कम्पनी साराटेक की शुरूआत की और फिर पीछे मुड़कर नहीं दिखा। आइटी क्षेत्र में लगातार सफलता मिलने पर कनाड़ा और यूएसए में कम्पनी का ऑफिस खोला, लेकिन बीकानेर से लगाव के कारण मुख्यालय बीकानेर में रखा। वर्तमान में उनकी कम्पनी में सैकड़ो युवा कार्य कर रहे हैं। राजूसिंह का मानना है कि बीकानेर के युवाओं में काफी टैलेंट है, बस उसका प्रोफेशनलिज्म और एकाग्रचितता का समावेश कर उपयोग करने की जरूरत है। राजूसिंह अपनी कम्पनी में बीकानेर के युवाओं को रोजगार देने के लिए तत्पर है, इसलिए उन्हें अभी 20 से ज्यादा युवाओं का डिजिटल मार्केटिंग के लिए चयन किया है। राजूसिंह के पिता पेशे से किसान है तथा माता गृहिणी है। अपने पिता को प्रेरणा स्रोत मानने वाले राजूसिंह ने कहा कि पिताजी ने खुद का व्यवसाय करने के लिए प्रेरित किया और उनकी इसी इच्छाशक्ति ने यह मुकाम दिलाया है। राजूसिंह का युवाओं को संदेश है कि रोजगार की अपार संभावनाएं हैं, बस उन्हें अपने अंदर के हुनर को पहचान कर दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि 1000 लोगों को रोजगार देना उनका लक्ष्य है और इसके लिए प्रयास कर रहे हैं। युवा वर्ग में क्षमताएँ खूब होती हैं, उन्हें आवश्यकता शिक्षा के बाद सही ढंग से रोजगार देने की होती है। गाँव में भी प्रतिभाओं की कमी नहीं है और उनकी तलाश के लिए तत्पर रहते हैं। उन्होने कहा कि कंपनी के माध्यम से युवाओं को जोड़ना जीवन का लक्ष्य है, जिसमें अभी सफलता की आहट सुनाई दे रही है। आने वाले समय में अन्य जगहों पर भी ऑफिस खोलकर रोजगार के अवसर मुहैया कराने के लिए कार्य किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जीवन में कोई भी लक्ष्य प्राप्त करना असंभव नहीं है, बशर्ते दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ उसे किया जाए। अब तक की सफलता के पीछे सफल लोगों की ही प्रेरणा कार्य कर रही है।

साभार : राजस्थान पत्रिका-19.1.21 पेज नम्बर 9 से

बस्तर में काला गेहूँ उगा रहे किसान, होगा दोहरा फायदा

बस्तर। छत्तीसगढ़ के बस्तर में पहली बार 11 किसानों ने 14 एकड़ भूमि में काले गेहूँ की खेती की है। बकावण्ड के 9 व जगदलपुर के 2 किसान शामिल हैं। बाजार में सामान्य गेहूँ के दाम 1800 से 1900 रु. प्रति क्विंटल हैं। काले गेहूँ के दाम 3500 से 4000 रु. प्रति क्विंटल मिल सकते हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक काले गेहूँ का आटा काले-सफेद रंग का होता है जबकि रोटी गुलाबी बनती है। काला गेहूँ साधारण गेहूँ से ज्यादा पौष्टिक है। यह गेहूँ कैंसर, मधुमेह, मोटापा, कोलेस्ट्रोल, हृदय रोग, तनाव समेत 12 बीमारियों में लाभकारी साबित होगा।

साभारः राजस्थान पत्रिका-17.1.20, पेज नम्बर 3 से

दुनिया में गुजरात की सफेद मूसली की मांग

गाँधीनगर। दुनियाभर में हर्बल (औषधीय) उत्पादों की मांग बढ़ी है। इनमें गुजरात की सफेद मूसली की भी मांग है। गुजरात औषधीय वनस्पति बोर्ड ने 16 नई औषध वनस्पति उगाने की कवायद शुरू की है। इनमें तुलसी, शतावरी, गिलोय, सफेद मूसली, कालमेघ (करीयातु), अश्वगंधा, आंवला, ग्वारपाठा, अरडुसी, ब्राह्मी, सोना मुखी, सफेद शंखपष्पी, चंद्रसर, इसबगोल, जीवति और चंदन हैं। सफेद मूसली की सालाना 700 टन की मांग है। बोर्ड सफेद मूसली का संरक्षण करने के लिए आदिवासियों एवं किसानों को आंवला, ग्वारपाठा, इसबगोल, तुलसी और ब्राह्मी जैसी वनस्पतियों की पैदावार पर 30 फीसदी सब्सिडी देता है। दक्षिण गुजरात के डांग, वलसाड के धरपुर, साकपाताल, परडी, पीपरी, वासदा, वलसाड, देवसर, सांगण जैसे सुदूरवर्ती इलाकों में सफेद मूसली की खेती होती है। 614 किसान सफेद मूसली का उत्पादन कर रहे हैं। इससे किसानों ने एक करोड़ 77 लाख रुपये की आय हासिल की।

कोविड के बाद बढ़ा रुझान : बोर्ड के तकनीकी अधिकारी हेमंत सुथार कहते हैं कि यूं तो औषधीय प्रचलन काफी समय से है, लेकिन कोविड के बाद लोगों में औषधीय वनस्पति के प्रति रुझान बढ़ा है। हरियाणा की तर्ज पर हर्बल पार्क तो नहीं, बल्कि गुजरात के स्कूल-कॉलेजों और अस्पतालों में औषधीय पौधे लगाए जाते हैं। सफेद मूसली के अलावा गिलोय, आंवला, ग्वारपाठा की मांग बढ़ी है।

साभार : राजस्थान पत्रिका-16.1.20

32% भारतीय ही करते हैं डिजिटल पेमेंट का उपयोग

नई दिल्ली। भारतीय घरों में केवल 32% ही डिजिटल पेमेंट का उपयोग किया जाता है, जबकि 68% के पास अपना स्मार्टफोन है। इसमें भी डिजिटल द्वारा पेमेंट के दौरान वे ऑनलाइन बैंकिंग की जगह पेमेंट ऐप का ज्यादा इस्तेमाल करते हैं। यह खुलासा नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया और थिंकटैक पीपल रिसर्च किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक, स्मार्टफोन ओनरशिप और डिजिटल पेमेंट्स यूजर्स के बीच 30% का अंतर है।

साभार : राजस्थान पत्रिका-16.1.20 पेज नं. 15

अंतरिक्ष में जाने के लिए देसी स्टार्ट अप की होड़

बेंगलूरु। 1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण ने भारत को मजबूत वैश्विक आर्थिक शक्ति बनाया तो अब अंतरिक्ष क्षेत्र में उदारीकरण से वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में बड़ी ताकत बनकर उभर सकता है। देश में अंतरिक्ष क्षेत्र अभी तक भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) तक ही सीमित रहा है, लेकिन अब निजी कंपनियां भी इस क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रही हैं। अगले महीने इसरो निजी क्षेत्र के पहले उपग्रह का प्रक्षेपण करेगा तो इस साल के अंत तक निजी क्षेत्र के पहले रॉकेट के परीक्षण की भी संभावना है। इसरो के लिए करीब 300 कंपनियां पहले से ही काम करती रही हैं, लेकिन निजी क्षेत्र के लिए द्वार खोले जाने के बाद कई अंतरिक्ष स्टार्ट अप कंपनियां प्रक्षेपण यान, प्रणोदय प्रणाली से लेकर उपग्रह निर्माण के लिए आगे आई हैं। इन-स्पेस के साथ काम करने के लिए 26 देसी-विदेशी कंपनियों ने इच्छा जताई है।

साभार : राजस्थान पत्रिका-6.1.20, पेज नं. 12 से

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

हमारे भामाशाह

भामाशाहों के अवदान का वर्णन प्रतिमाह इस कॉलम में कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें। **-व. संपादक**

टोंक

स्वामी विवेकानन्द रा. मॉडल स्कूल निवाई को प्रधानाचार्य श्री कुम्भाराम चौधरी द्वारा विद्यालय में पार्किंग शेड लगाने हेतु एक लाख रुपये की राशि ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से मुख्यमंत्री विद्यादान कोष में दान की।

भीलवाड़ा

रा.उ.मा.वि. टहुँका पं. स. (माण्डल) को श्री इन्साफ मोहम्मद द्वारा विद्यालय के भौतिक विकास हेतु अपनी पुत्री के जन्मदिन पर एक माह का वेतन 40,660 रुपये भेंट किया।

भरतपुर

रा.उ.मा.वि. तरोंडर (नगर) में श्री वेदप्रकाश शर्मा एवं श्री सोनपाल शर्मा ने दिनांक 16.7.2020 को 0.182 बीघा भूमि (लगभग तीन एकड़ भूमि) खेलकूद के मैदान हेतु दान दी जिसकी लागत लगभग तीन लाख रुपये है। श्री नवल सिंह (वरिष्ठ अध्यापक) द्वारा अपनी स्व.माताजी श्रीमती रामदुलारी एवं स्व. पिताजी श्री रामजीलाल जाटव की पुण्य स्मृति में 2.50 लाख रुपये की लागत से एक कक्षा-कक्ष का निर्माण शुरू करवाया गया। **रा.उ.मा.वि. बछामदी (नदबई)** में विद्यालय स्टाफ द्वारा 30,000 रुपये की लागत से मोटर स्टैण्ड का निर्माण करवाया गया, प्रो. एम. चिदबंरम (चैन्नई) द्वारा 50 स्टूल मेज एवं प्रधानाचार्य कार्यालय का सौन्दर्यकरण का कार्य करवाया गया जिसकी लागत 75,000 रुपये, कैप्टन श्री महेन्द्र सिंह द्वारा सरस्वती माँ का मंदिर, भारत माता मंदिर एवं एक बरामदा का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 2,75,000 रुपये, कैप्टन श्री हरेन्द्र सिंह, पं. श्री भोलाराम शर्मा, पं. श्री राधेलाल एवं हरीचरन मुद्गल, पं. श्री बृज बिहारी शर्मा, श्री प्रभाव सिंह (पूर्व सरपंच) 09 बरामदों का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 4,85,000 रुपये, डॉ. प्रदीप डागुर द्वारा फलदार एवं फूलदार 55 पौधे लगवाए गए जिसकी लागत 11,000 रुपये।

चूरू

रा.उ.मा.वि. पिचकराई ताल ब्लॉक सरदारशहर में श्री दलीप कुमार सींवर ने अपने पिताजी व दादाजी की स्मृति में मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजना में दो कक्षा-कक्ष निर्माण हेतु प्रधानाचार्य संदीप शर्मा को 8,00,000 रुपये का चेक प्रदान किया।

श्रीगंगानगर

स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल सूरतगढ़ में प्रधानाचार्य बजरंग लाल भादू द्वारा विद्यालय परिसर के समतलीकरण हेतु ज्ञान संकल्प पोर्टल के माध्यम से मुख्यमंत्री विद्यादान कोश में 21,000 रुपये दान किए।

जालोर

रा.उ.प्रा.वि. सराणा को श्री भवजी चौधरी द्वारा स्केनर मय प्रिंटर सप्रेम भेंट।

झालावाड़

रा.उ.मा.वि. झालरापाटन को सर्वश्री कैलाश टेलर, जमील मोहम्मद और श्रीमती पवित्रा शर्मा की ओर से विद्यालय को 16,000 रुपये की लागत का इन्वर्टर भेंट।

उदयपुर

रा.उ.मा.वि. वल्लभ नगर को श्री सम्पत लाल लोहार द्वारा 11,000 रुपये का सीसीटीवी. कैमरे भेंट तथा सर्वोत्तम अंक लाने वाले बालकों के लिए 5,000 रुपये का आर्थिक सहयोग दिया। समाजसेवी व पूर्व सरपंच श्री कालू लाल गुर्जर ने सीसीटीवी. हेतु 11,000 रुपये दिए, डॉ. कैलाश वाजपेयी ने तीनों संकाय के टॉपर बालकों को 2,500-2,500 रुपये तथा दसवीं कक्षा में संस्कृत के सर्वोच्च अंक लाने वाले विद्यार्थी को 1,000 रुपये का पुरस्कार दिया।

संकलन : **प्रकाशन सहायक**

शिविरा - एक परिचय

राजस्थान सरकार के माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर से प्रकाशित मासिक शिविरा पत्रिका (Shivira Patrika) जूलाई, 1966 से लगातार प्रकाशित की जा रही है। इस पत्रिका में शिक्षा विभागीय मासिक आदेश-परिपत्र एवं दिशा-निर्देश, साहित्यकारों व शिक्षकों तथा शिक्षा अधिकारियों के आलेख, नवाचार एवं शैक्षिक चिन्तन संबंधी रचनाएँ नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं। स्थाई स्तम्भों में नवप्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा, शाला प्रांगण के माध्यम से विद्यालयों में आयोजित सह शैक्षणिक गतिविधियों का प्रकाशन, हमारे भामाशाह के अन्तर्गत विद्यालयों में भामाशाहों के दिए गए सहयोग का जिलेवार प्रकाशन। बाल शिविरा के माध्यम से विद्यार्थियों की रचनाएँ भी हाल ही में प्रारम्भ की गई हैं। विशेषांक में शैक्षिक चिन्तन, हिन्दी विविधा, हिन्दी कविता, बाल साहित्य एवं राजस्थानी साहित्य की श्रेष्ठत्तम रचनाओं का प्रकाशन कर, संग्रहणीय अंक प्रतिवर्ष जयपुर में राज्य सरकार द्वारा शिक्षक दिवस समारोह में विमोचन किया जाता रहा है । प्रत्येक माह प्रकाशित शिविरा का मई-जून अंक संयुक्तांक के रूप में प्रकाशित किया जाता है। इस प्रकार कुल 11 अंकों का नियमित प्रकाशन किया जाता है। पत्रिका का प्रत्येक अंक शिक्षा जगत से जुड़े प्रत्येक पाठक के लिए संग्रहणीय अंक के रूप में प्रकाशित करने का सम्पादक मण्डल सार्थक व सकारात्मक प्रयास नियमित रूप से करता है। शिविरा पत्रिका को क्रय करने की तीन केटेगरी निर्धारित की गयी हैं, प्रत्येक की दर अलग है।

व्यक्तिगत - Rs. 100/- वार्षिक, राजकीय संस्थान - Rs. 200/- वार्षिक, गैर-राजकीय संस्थान - Rs. 300/- वार्षिक

निर्धारित भुगतान प्राप्ति के पश्चात, अगले माह से शिविरा पत्रिका दिए गए पते पर पोस्ट कर दी जाती है। यह प्रत्येक माह की 5 अथवा 6 तारीख को साधारण डाक से सदस्यों को भेजी जाती है। इस बाबत किसी भी नुकसान की जिमेदारी प्रकाशक की नहीं होगी।

आवेदन प्रक्रिया : ● शिक्षा विभाग के किसी भी पोर्टल यथा शालादार्पण पर दिए गए लिंक शिविरा पत्रिका हेतु ऑनलाइन आवेदन पर क्लिक कर सर्विस-प्लस पोर्टल को एक्सेस कीजिए। ● लेफ्ट साइड में दिए गए मेनू से पूर्व में पंजीयन नहीं किया हुआ है तो 'Register Yourself' मेनू आइटम के द्वारा पंजीयन करवाएँ। ● एक बार पंजियान होने के पश्चात दाईं और दिए गए लिंक 'Login' के माध्यम से पंजीकरण के समय दिए गए लोगिन/पासवर्ड द्वारा लॉग इन कीजिए। ● लोगिन के पश्चात बाएं और दिए गए मेनू आइटम के 'Apply Service' लिंक द्वारा आवेदन करें एवं चाही गयी सभी जानकारी ध्यान से भरें। ●पासवर्ड आदि भूलने की स्थिति में होम पेज के दायीं और दिए गए लिंक 'Forgot Password' बटन का इस्तेमाल करें । ●ग्राहक के प्रकार एवं मासिक चाही गयी प्रतियों की संख्या का सही से चयन करें। ● आवेदन समाप्ति/ आवेदन पत्र प्रिंट पश्चात दिए गए लिंक द्वारा राज्य सरकार के पेमेन्ट पोर्टल 'eGRass' के माध्यम से ऑनलाइन भुगतान करें। दिए गए लिंक पर क्लिक के पश्चात प्रोग्राम स्वयं ही इग्रास लिंक पर ले जाएगा। भुगतान के समय दिए गए निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।

-शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर **फोन: 0151-2528875, मो: सम्पादक : 9460618809, वरिष्ठ सम्पादक: 9461074850**

शिविरा पत्रिका (मासिक) : फरवरी, 2021 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। वरिष्ठ सम्पादक: अनिल कुमार अग्रवाल, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

चित्र वीथिका : माह फरवरी, 2021

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बछामदी,नदबई, भरतपुर की डेढ़ साल में शैक्षणिक उपलब्धियों में कक्षा 10वीं में सत्र 2019-20 सरकारी स्कूलों में नदबई तहसील में पहला स्थान और जिले में दूसरा स्थान प्राप्त किया तथा भामाशाहों द्वारा सरस्वती मंदिर व भारतमाता मंदिर का निर्माण करवाया गया।

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर में दिनांक 06.01.21 को निदेशालय के सभागार में श्री पितराम सिंह काला उपनिदेशक (खेलकूद) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर की अध्यक्षता में खेलकूद की 2005 की नियमावली में संशोधन हेतु प्रस्तावों पर चर्चा करते हुए शिक्षा एवं खेलकूद के अधिकारीगण।

बाल शिविरा

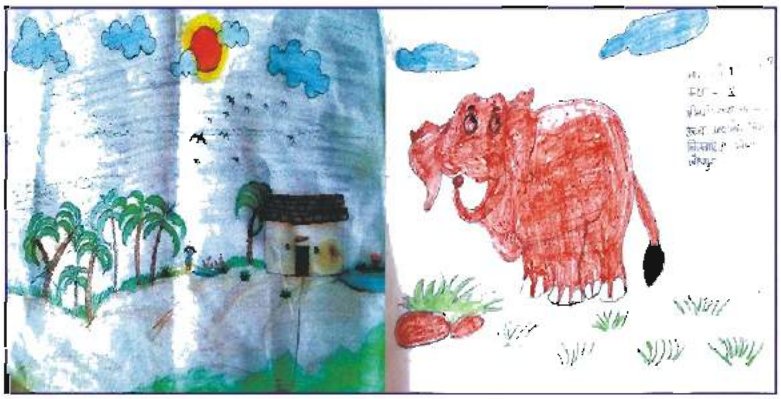

पूजा, कक्षा-6 एवं रेखा लखाणी-5
श्रीमती राधा रा.उ. प्रा.वि. बिंजवाड़िया, तिंवरी, जोधपुर

सपना, कक्षा-11 एवं खुशबू सेन, कक्षा-6
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कालाडेरा,जयपुर-II

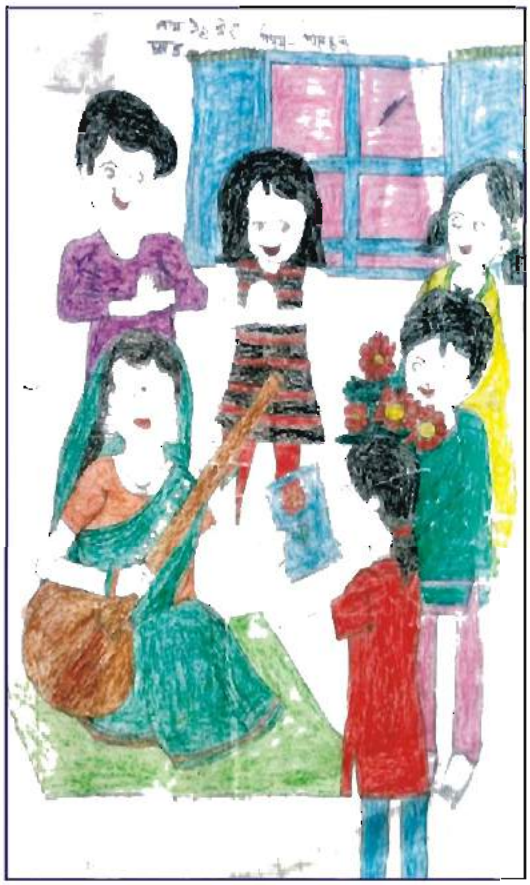

नेहा थोरी, कक्षा-5
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय अभावास, सीकर (राज.)

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/430/2020-22 शिविरा पत्रिका (मासिक) • फरवरी, 2021 समाचार पत्र पंजीयन संख्या 10350/66
प्रकाशन तिथि : 2 फरवरी, 2021 पृष्ठ 52 • प्रेषण : माह की 5–6 तारीख

चित्र वीथिका : फरवरी 2021

गणतंत्र दिवस समारोह : निदेशालय परिसर

पत्रिका अवितरित होने की स्थिति में इस पते पर भेजें : वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा प्रकाशन, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर–334011